मुहावरे और लोकोक्तियां

(छात्रोपयोगी)

जोशी

मुहावरे और लोकोक्तियां

Muhavare & Lokokhtiyan

(छात्रोपयोगी)

संग्रहकर्त्ता :—

गिरीशचन्द्र जोशी

Girish Chandra

प्रकाशक : —

हिन्दी पुस्तक एजेंसी

२०३ हरिसन रोड, कलकत्ता ।

प्रथम बार] जुलाई १९३९ [मूल्य ॥)

हिन्दी
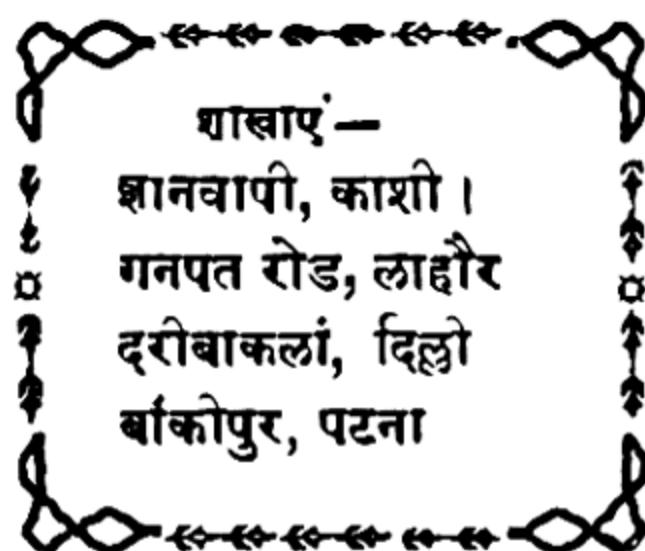
मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(मुहावरे)

अंक देना—गलेसे लगाना। समधियोंके अंक देनेकी रीति अभी पूरी की जायगी।

अकड़ दिखाना—घमण्ड करना। इस नीचताका कहीं ठिकाना है कि तुम जिसका खाते हो उसको ही अकड़ दिखाते हो।

अक्लका पुतला—बड़ा बुद्धिमान। अक्लका पुतला बुद्धिसागर भी सो आजकल उन्हीं लोगोंके हाथोंकी कठ-पुतली बना हुआ है।

अक्लपर परदा पड़ना—बुद्धि-भ्रष्ट होना। जगदीशको अपने-भले-बुरेका ज्ञान नहीं रहा, क्योंकि उसकी अक्लपर परदा पड़ा हुआ है।

अक्लके पीछे लाठी लिये फिरना—बुद्धिसे काम न लेना। जो व्यक्ति हिताहितका विचार नहीं करता, वह अक्लके पीछे लाठी लिये फिरता है।

अक्लके घोड़े दौड़ाना—अनेक प्रकारसे विचार करना। ईश्वरकी लीलाका भेद न पा सका, यद्यपि मनुष्यने बहुत कुछ अक्लके घोड़े दौड़ाये।

अक्ल चकराना—कुछ समझमें न आना। जब साधारण-सी बातमें तुम्हारी अक्ल चकरा जाती है, तब तुम विज्ञानका अध्ययन कैसे करोगे ?

अक्ल मारी जाना—बुद्धि नष्ट होना। दिन-रात चाण्डाल-चौकड़ीमें डटे रहते हो, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गयी है ?

अक्लका दुश्मन—मूर्ख। इसे समझानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, जानते नहीं, यह तो बिलकुल अक्लका दुश्मन है।

अक्ल चरने जाना—समझका जाते रहना। क्या तुम्हारी अक्ल चरने गई थी कि उसके सामने गुप्त भेद खोल दिया।

अक्लपर पत्थर पड़ना—विवेक भ्रष्ट होना। जगदीश! माता-पिताको गालियां देते हो, क्या तुम्हारी अक्लपर पत्थर पड़ गये हैं?

अखाड़ेमें उतरना—मुकाबिला करना। व्यर्थ प्रलाप करनेसे क्या लाभ है? यदि कुछ दम रखते हो तो अखाड़ेमें उतरो।

अगर मगर करना—बहाना करना। यदि तुमको काम करना स्वीकार न हो तो साफ कहो। अगर मगर करनेसे कुछ लाभ नहीं।

अंग अंग ढीला होना—अत्यन्त थक जाना। आज सवेरेसे शाम तक इतना परिश्रम करना पड़ा कि मोहनका अंग अंग ढीला हो गया।

अंग अंग ढीला कर देना—शरीरकी बुरी अवस्था कर देना। रामदेवने अपने पुत्रको ऐसा मारा कि उसका अंग अंग ढीला कर दिया।

अंग अंग मुस्कराना—बहुत प्रसन्न होना। एम० ए० की परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका समाचार सुनकर बिमल बाबूका अंग अंग मुस्कराने लगा।

अंगार उगलना—क्रोधके आवेशमें कठोर वचन बोलना। इस समय उसके पास न जाओ क्योंकि वह अंगार उगल रहा है।

अंगार बरसना—कड़ी धूप पड़ना। इस समय घरमें ही बैठे रहो, दोपहरका समय है; बाहर देखते नहीं हो अंगार बरस रहे हैं।

अंगार सिरपर धरना—भारी विपत सहना। आजकल वे अंगार सिरपर धरकर काम करते हैं।

अंगुली उठाना—हानि पहुंचानेकी चेष्टा करना। तुम निर्भय होकर काय करो, किसीकी मजाल नहीं कि तुम्हारी ओर अंगुली उठाए।

अंगुलियोंपर गिना जा सकना—अल्प संख्यामें होना। भारतमें विदेशी अंगुलियोंपर गिने जा सकते हैं।

अंगूठा दिखाना—साफ इनकार करना। जबतक उमरावका स्वार्थ रहा वह जगदीशका परम मित्र बना रहा। अब जगदीशका काम पड़ा तो उसको उसने अंगूठा दिखा दिया।

अंगूठा चूमना—चिरौरी करना। तुमको लज्जा नहीं आती? कल जिसको अंगूठा दिखाते थे आज उसीका अंगूठा चूमते हो।

अच्छे दिन देखना—आनन्दमय जीवन बिताना। गोपाल! संसारमें सदा बुरे दिन किसीके नहीं रहते। तुम भी अच्छे दिन देखोगे।

अंचरा पसारना—मांगना। सबके सामने अंचरा पसारना बहुत बुरा है।

अण्टीपर चढ़ना—काबूमें आना। जी खोलकर उछल-कूद दिखाओ। जहां किसी दिन अण्टीपर चढ़े कि मैंने तुम्हें ठीक बनाया।

अटकल पच्चू—बिना सोचे-समझे। बार-बार समझानेपर भी तुम सब जगह अटकल पच्चू बोल उठते हो।

अठखेलियां सूझना—दिल्लगी करना। बिमलने कहा—"तुम लोगोंको किसीके दुःख सुखका कुछ भी ध्यान नहीं है। मेरे पेटमें जोरका दर्द हो रहा है और तुमको अठखेलियां सूझ रही हैं।"

अड़ंगा देना—पेंच चलना। आज लखनऊके पहलवानने पंजाबी पहलवानको ऐसा अड़ंगा दिया कि वह क्षणभरमें चित आया।

अड़ जाना—मुकाबिला कर बैठना। जब श्यामने सोहनको ललकारा, तो वह भी निर्भय होकर अड़ गया।

अड्डा जमाना—अधिकार करना। गोपीके घर आजकल चण्डाल-चौकड़ीने अड्डा जमा रखा है; वहां तुम्हारी दाल नहीं गल सकती, शिवराम!

अण्डे सेना—निकम्मा बैठना। यादव! तुम तो अपने काममें लगे हुए हो; हमलोग क्या यहां अंडे सेवेंगे?

अन्तकरना—जान से मारना। मैं उसका अंत किये देता हूं सब झंझट त हो जायंगे।

अन्त पाना—रहस्य जानना। तुम घबराओ नहीं, मैंने इस गोलमालका अन्त पा लिया है।

अंतड़ियोंमें बल पड़ना—जोरसे हंसनेके कारण पेट दुखने लगना। रामनाथ ऐसी बातें सुनाता है कि हंसते हंसते अंतड़ियोंमें बल पड़ जाते हैं।

अन्त समय—मरणकाल। तुम्हारे जैसे दुष्टोंकी अन्त समय बड़ी दुर्गति होती है।

अंतड़ियां टटोलना—भीतरी भेद जानना। घरमें घुसकर क्या तुम मेरी अंतड़ियां टटोलना चाहते हो।

अता-पता लगाना—कुछ खोज निकालना। अध्यापकने कहा—"लड़को! बड़े खेदकी बात है कि तुमने नारायणकी पुस्तकका अभीतक अता-पता लगानेका विचारतक नहीं किया।"

अन्धा बनाना—धोखा देना। जगदीशने यह खोटी अठन्नी चला दी है; न जाने किसको अन्धा बनाया है?

अन्धाधुन्ध उड़ाना—बिना सोचे-विचारे व्यय करना। मोहनका पिता कुछ पूंजी छोड़ मरा था; उसने थोड़े दिनोंमें ही सबकी सब अन्धाधुन्ध उड़ा दी।

अन्धेर खाता करना—नियमानुकूल कार्य न करना। तुम्हारे कागजोंसे न आयका पता चलता है न व्ययका, तुमने तो अन्धेर खाता कर रखा है।

अन्धेके हाथ बटेर लगना—किसी अयोग्य व्यक्तिको अनायास लाभ होना। नानकके विवाहका रहस्य यह है कि अन्धेके हाथ बटेर लग गयी है।

अन्धेकी लकड़ी—एक मात्र सहारा। मोहन—यह किसका बालक है? विद्या—यह मेरी अन्धेकी लकड़ी।

अन्न-जल पूरा हो जाना—मर जाना। मनुष्यके जीवनका विश्वास नहीं, न जाने कब अन्न-जल पूरा हो जाय।

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित होना; निरुत्तर होना। नारायणको सबने रोका था कि तुम रामके साथ शास्त्रार्थ मत करो। उसने नहीं माना; शास्त्रार्थ किया और अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

अपना उल्लू सीधा करना—स्वार्थ-सिद्ध करना। तुम अपना उल्लू सीधा करो, तुम्हें किसीके हानि-लाभसे क्या प्रयोजन?

अपना घर समझना—स[illegible] प्र[illegible]ना। पण्डित-जी, आरामसे बैठिये, इसको भी अपना घर समझिए।

अपना रास्ता लेना—चला जाना। तुम यहां व्यर्थ क्यों झगड़ा कर रहे हो? अपना रास्ता लो।

अपना ही राग अलापना—अपने ही मतलबकी बात कहना। तुम दूसरों[illegible] बात सुनना ही नहीं जानते; सदा अपना ही राग अलापते रहते हो।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—सबसे भिन्न रहना। वह किसी कार्यमें भी सबके साथ नहीं रहता, सदा अपनी खिचड़ी अलग पकाता है।

अपनी निबेड़ना—अपना कार्य सम्भालना। तुमको औरोंकी बुराई-भलाईसे क्या प्रयोजन है? तुम अपनी निबेड़ो।

अपने पैरोंपर खड़ा होना—स्वावलम्बी होना। दूसरोंका आश्रित बनकर जीवन अतिवाहित करना बुरा है। मनुष्यको अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहिये।

अपने मुंह मियांमिट्ठू बनना—आत्मश्लाघा करना; अपनी प्रशंसा करना। जो सत्य बात है कहनी ही पड़ जाती है, इससे मेरा यह अभिप्राय कदापि नहीं कि मैं अपने मुँह मियांमिट्ठू बनूं।

अपने पांवोंपर आप कुल्हाड़ी मारना—स्वयं अपनी हानि करना। यदि रामको मैं अपना भेद न बतलाता, तो वह दुष्ट दांव पेंच चलानेका साहस न करता बात तो यह है कि मैंने अपने पावोंपर आप कुल्हाड़ी मारी है।

अपने मार्गमें कांटे बोना—अपने लिये हानिप्रद कार्य करना। गुरु-द्रोही बनकर तुम अपने मार्गमें कांटे बो रहे हो।

अस्सी हजार फिरना—अनेक तुच्छ व्यक्ति होना; महत्व हीन होना। "मैं तुम्हें क्या समझता? तुम्हारे समान अस्सी हजार फिरते हैं।'

अवसर चूकना—मौका खो देना। अवसर चूक जानेपर सिवाय पछतानेके और क्या हो सकता है?

अरण्य-रोदन—निष्फल कार्य अथवा भाषण—मुझे तो तुम्हारे अरण्य-रोदनपर हंसी आती है।

अरमान निकालना—मनकी इच्छा पूरी करना। अपने अरमान पूरे करनेके लिये ही मुझे बुलाया था क्या?

आकाशसे बातें करना—बहुत ऊंचा होना। यदि सेठजीका भवन आकाशसे बातें करता है, तो चौधरी साहबकी अट्टालिका भी आकाशको स्पर्श करती है।

आकाशके तारे तोड़ना—कठिन-से-कठिन काय करना। बाबू ललितमोहनजीको आप साधारण व्यक्ति न समझिये, वे आकाशके तारे हैं।

आकाश-पाताल एक कर देना—बहुत खोज करना। प्रातःकालसे आकाश-पाताल एक कर दिया; पर कहीं उसका पता न मिला।

आकाश-पातालका अन्तर—बहुत बड़ा अन्तर। तुम अभी नौ-सिखिये हो, तुम्हारी और उसकी कवितामें आकाश-पातालका अन्तर है।

आकाश-गङ्गामें नहाना—असम्भव बातको सम्भव करनेकी चेष्टा करना। रामनाथकी कुछ न पूछो। वह तो आकाश-गङ्गामें नहाना चाहता है। सातवीं परीक्षामें उत्तीर्ण नहीं हो सका, मैट्रिककी तैयारी कर रहा है।

आँख उठाना—बुरी दृष्टिसे देखना; हानि पहुंचानेकी चेष्टा करना। मेरे होते किसीकी शक्ति नहीं कि तुम्हारी ओर आंख उठा सके।

आँख उठाकर भी न देखना—ध्यान तक न देना। तुम उनसे इतना प्रेम करते हो और वे तुम्हारी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते।

आँख आना—नेत्र दुखना। रामदीन स्कूल नहीं गया, क्योंकि तीन दिनसे उसकी आंख आयी हुई है।

आँख ठहरना—पसन्द आना। अनेक अच्छी-से-अच्छी धोतियां रखी हैं; किसीपर तुम्हारी आंख ठहरती भी है?

आँख तरसना—देखनेको उत्सुक होना। तुम छुट्टियोंमें भी घर नहीं आते; तुम्हारी माताकी आंख तरसती रहती है।

आँख भर लाना—नेत्रोंमें आंसू निकल आना। रामलाल आज तीन सालके बाद घर लौटा है; उसे देखते ही उसकी माता आंख भर लाई।

आँख फाड़कर देखना—उत्सुकतासे देखना; घूरना। मोहनने कहा—"तुम कहांके सभ्य हो; पहले तो तुम ही उसको आंख फाड़कर देखते थे।"

आँख रखना—प्रेम करना। तुम अपने मित्रको बहुत सीधा समझते हो; वह छिपा रुस्तम है, न जाने कहां कहां आंख रखता है।

आँख न ठहरना—चका-चौंध लगना। द्वारिकापुरीमें कृष्ण-भगवानको देखकर सुदामाकी आंख न ठहर सकी।

आंख मारना—संकेत करना। मोहनका आंख मारना था कि वह रुपये देते-देते रुक गया।

आँख मटकाना—सैन चलाना। चार सभ्य पुरुषोंमें बैठकर आंख मटकाना सभ्यताके विरुद्ध है।

आँख न लगना—नींद न आना। पड़ोसमें रातभर ऐसा कोलाहल होता रहा कि मेरी घण्टे भर भी आँख नहीं लगी।

आँख मिलाना—सामने आना। जब किसीसे दिल ही नहीं मिलता तो आंख मिलानेसे क्या लाभ ?

आँख कान खोलकर चलना—सावधान होकर चलना। जो लेखक सदा आंख-कान खोलकर चलता है, उसको लिखनेके लिये बहुत कुछ सामग्री अनायास ही मिल जाती है।

आँखसे ओझल न करना—सदा सामने रखना; पास रखना। श्यामाका पुत्र कैसे पढ़-लिख सकता है ? उसकी माता उसे कभी आंखसे ओझल करना नहीं चाहती।

आँख भर आना—आंसू आ जाना। हस्तिनापुरके पुराने खण्डह-रोंको देखकर प्राचीन भारतकी याद आ जाती है और आंख भर आती है।

आँख फोड़ना—धोखा देना। श्यामने उस खोटे रुपयेको चला दिया है; न जाने बाजारमें आज किसकी आंख फोड़ी है।

आँख ठण्डी होना—शान्ति मिलना। रामनाथ मित्र वियोगसे बहुत सन्तप्त हो रहा था; आज उसके मिलनेसे आँख ठण्डी हो गयी।

आँख बन्द करना—असावधान होना। अन्तमें पछतानेसे क्या लाभ है ? आरम्भमें काय करते समय आंख बन्द क्यों कर लेते हो ?

आँखें निकालना—बिगड़ना, डांटना। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझपर आंखें निकालते हो ?

आँख चढ़ना—नशा होना। जगदीशको जीनेसे सँभालकर उतारना, क्योंकि आज उसकी आंखें चढ़ी हैं।

आँखें खुलना—सावधान होना। वह दुष्ट थोड़ा-थोड़ा करके तुम्हारा सब माल लिये जाता है, परन्तु न जाने, कब तुम्हारी आखें खुलेंगी ?

आँखें खुल जाना—आश्चर्य होना। बम्बईमें जाकर ताज होटलको देखो तो तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी।

आँखें पथरा जाना—निर्निमेष होना। तुम्हारी बाट जोहते-जोहते उसकी आंखें पथरा गयीं।

आँखें उठ जाना—देखना। स्वामी रामतीर्थ ऐसे प्रभावशाली साधु थे कि जिस ओर उनकी आंखें उठ जाती थीं, लोग उनके भक्त बन जाते थे।

आँखें फिरना—प्रतिकूल होना। हमसे हमारा भाग्य ही फिरा हुआ है; तुम्हारी आंखें फिर गयीं, तो आश्चर्य क्या है?

आँखें फेरना—बे-मुरौवत होना। जब तुम्हारा मतलब होता है, तब मित्र बन जाते हो; जब तुम्हारा उल्लू सीधा हो जाता है, आंखें फेर लेते हो।

आँखें तन जाना—क्रोधित होना। तुम भी विचित्र जीव हो, दूसरोंको मनमानी सुनाते रहते हो; परन्तु जब तुम्हें कोई चुभती हुई बात कह देता है, तो तुम्हारी आंखें तन जाती हैं।

आँखें चार होना—नजर मिलाना। पहले उसका अपमान किया, अब उससे आंखें चार करते हो।

आँखें चढ़ाना—क्रोध करना। ज़रा अखाड़ेमें उतरो तो जानूं; दूर बैठे क्या आंखें चढ़ाते हो?

आँखें दिखाना—धमकाना। किसी दिन शिवदासको देख लिया तो आंखें खुल जायंगी। जाओ अधिक आंखें न दिखाओ।

आँखें लाल-पीली करना—क्रोधित होना। उसने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा; आंखें लाल-पीली क्यों करते हो?

आँखोंमें हलका होना—सम्मान घट जाना। अपने आप भारी बननेसे क्या हो सकता है जब कि तुम सबकी आंखोंमें हलके हो गये।

आँखोंमें खटकना—बुरा लगना। माधव बड़ा नीच व्यक्ति है, क्योंकि दूसरोंकी वृद्धि उसकी आंखोंमें खटकती है।

आँखोंमें न ठहरना—पसन्द न आना। तुम कहांके सर्वगुण सम्पन्न हो जो कोई व्यक्ति तुम्हारी आंखोंमें ही नहीं ठहरता।

आँखों-आँखोंमें उड़ा देना—देखते-देखते चुरा लेना। जगदीश चोरोंका भी गुरुघण्टाल है ; आंखों-आंखमें चीज उड़ा देता है।

आँखोंमें रात कटना—नींद न आना। विमलाका पति किसी कारणसे कल घर न लौट सका; बेचारीकी आंखोंमें रात कटी।

आँखोंका बीमार होना—प्रेम-रोगसे पीड़ित होना। दमयन्तीके रूप और लावण्यको देखकर नल आंखोंका बीमार हो गया था।

आँखोंमें समा जाना—अधिक प्रिय होना। जबसे दुष्यन्तकी आंखों में शकुन्तलाका सौन्दर्य समाया है, वह सब राग-रंग भूल गये हैं।

आँखोंपर परदा पड़ना—असावधान होना। सब की-सब चीजें रद्दी उठा लाये, क्या खरीदते समय तुम्हारी आंखोंपर परदा पड़ा हुआ था?

आँखोंमें पालना—अत्यन्त प्रिय रखना। माता माता ही होती है; डायन भी अपने पुत्रोंको आंखोंमें पालती है।

आँखोंमें फिरना या आँखोंसे घूमना—बराबर स्मरण रहना। लैलाकी आकृति सदा मजनूँकी आंखोंमें फिरती रहती थी।

आँखोंके सामनेनाचना—स्मरण आना। तुम्हारा पत्र पढ़ते ही काशीके छात्रालयका दृश्य मेरी आंखोंके सामने नाचने लगा।

आँखोंके सामने अँधेरा छा जाना—शून्य दिखाई देना। जब कमलाको उसके पतिकी मृत्युका समाचार मिला, उसकी आंखोंके सामने अंधेरा छा गया।

आँखोंमें खून उतर आना—क्रोधित होना। उस दुष्टको देखते ही मेरी आंखोंमें खून उतर आता है।

आँखोंमें धूल झोंकना—धोखा देना। जगदीश! तुम दूसरोंकी आंखोंमें क्या धूल झोंकते हो, किसी दिन तुमको कोई ऐसा अन्धा बनायगा कि सब चौकड़ी भूल जाओगे।

आँखोंपर ठीकरी धरना—निलज्ज हो जाना। उसपर किसीके कहने सुननेका कुछ प्रभाव नहीं पड़ता; उसने तो आंखोंपर ठीकरी धर ली है।

आखिर करना—समाप्त करना। चलो मेरा ही दोष सही; इस झगड़ेको किसी प्रकार आखिर करो।

आग लगाकर पानीको दौड़ना—झगड़ा कराकर शान्त करनेका प्रयत्न करना। संसारमें ऐसे भी कितने मनुष्य हैं जो आग लगाकर पानीको दौड़ते हैं।

आगमें पानी डालना—क्रोध शान्त करना। यदि मैं आगमें पानी न डालता, तो वह इतना उत्तेजित हो गया था कि तुमको भस्म ही कर देता।

आग लगाकर तमाशा देखना—झगड़ा कराकर प्रसन्न होना। कृष्णाकुमार! क्या यह नीचता नहीं है कि तुम आग लगाकर तमाशा देखना चाहते हो?

आग-बबूला हो जाना—अत्यन्त उत्तेजित हो उठना। वह तुमसे बहुत असन्तुष्ट है तुम उसके पास न जाओ; तुमको देखते ही वह आग-बबूला हो जायगा।

आगमें कूदना—आपत्तिमें पड़ना। मुझे क्या बावले कुत्ते ने काटा है कि आरामसे बैठे-बिठाये आगमें कूदूँ?

आग-पानीमेंसे गुजरना—सब प्रकारके कष्ट सहना। वह तुम्हारे लिये आग-पानीमेंसे गुजरनेको प्रस्तुत है और तुम उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते।

आगा-पीछा करना—हिचर-मिचर करना। जो पहुंचनेवाले थे, वे गङ्गाके पार जा पहुंचे; तुम आगा-पीछा ही करते रह गये।

आगा-पीछा न सोचना—हानि लाभका विचार न करना। तुमने कार्यारम्भके समय ही आगा-पीछा न सोचा; अब पछतानेसे कुछ लाभ नहीं।

आगे-आगे हो लेना—सुगम बन जाना। कितना ही कठिन कार्य क्यों न हो, अभ्यासके आगे-आगे हो लेता है।

आँच न आने देना—कष्ट न पहुंचने देना। मुझपर चाहे जो कुछ बीते परन्तु निश्चय रखो, तुमको आंच न आने दूंगा।

आज-कलके फेरमें पड़ना—समयको टालना। जिनको कुछ करना होता है, वे सोच-समझ कर अपना कार्य आरम्भ कर देते हैं; तुम आजकलके फेरमें पड़े हो; तुमसे कुछ न होगा।

आज-कल करना—देनेमें बहाना करना। देना हो, दे दो; न देना हो वैसी कहो, आज-कल-करते-करते तुमने तीन महीने बिता दिये।

आटे-दालका भाव मालूम होना—कष्टका अनुभव होना। जब भोजनाच्छादनकी चिन्तामें पड़ोगे, तब आटे-दालका भाव मालूम हो जायगा।

आटेके साथ घुन पिसना—दोषी व्यक्तिके साथ निर्दोष व्यक्तिको दण्ड मिलना। उस चौकड़ीमें उठना-बैठना छोड़ दो नहीं तो किसी दिन आटे-के साथ घुन पिस जायगा।

आठ-आठ आँसू रोना—अत्यधिक रोना। यह कथा इतनी करुणा-जनक है कि पढ़ने-सुननेवाले आठ-आठ आंसू रोने लगते हैं।

आड़े हाथों लेना—बहुत बुरा-भला कहना। मैंने भी आज उसको ऐसा आड़े हाथों लिया है कि अगर वह आदमी होगा, तो इधर आनेका नाम फिर न लेगा।

आड़े समय काम आना—दुःखके समय सहायता करना। मित्र वही है जो आड़े समय काम आता है।

आत्मा ठण्ढी होना—शान्ति मिलना। मुखसे परदा उठाकर उस सुन्दरीने सन्तप्त-हृदय आजादसे कहा—"लो, अब तो तुम्हारी आत्मा ठण्ढी हुई!"

आदमी बनना—शिष्टाचार जानना। हमारे साथ शास्त्रार्थ पीछे करना, पहले आदमी बनो।

आधा-तीतर, आधी बटेर—गड़बड़ झाला। तुम्हारा मामिला सुलझना कठिन है; वह तो आधा तीतर आधी बटेर है।

आनकी आनमें—अति शीघ्र। जब परमात्माकी कृपा होती है, आनकी आनमें पापीसे सन्त हो जाता है।

आना-कानी करना—बहाना करना। यदि हमारे साथ चलना है तो चलो, आना-कानी करनेसे क्या लाभ है?

आप-बीती कहना—अपना अनुभूत कष्ट बतलाना। मैंने अबतक जो कुछ कही है, सब आप-बीती ही कही है।

आप-आप करना—चिरौरी करना। तुम न्याय-संगत बात नहीं कह सकते; तुमको तो आप-आप करनेकी बान पड़ गई है।

आपा-धापी पड़ना—अपनी-अपनी चिन्तामें लगना। जब हमारी नौका गङ्गामें डगमगाने लगी, तो लोगोंमें आपा-धापी पड़ गयी।

आपा खोना—अभिमान-त्याग करना। जो व्यक्ति आपा खोता है, वही आनन्द पाता है।

आपेमें न रहना—बेहोश हो जाना। धनके मदके कारण भी बहुतसे लोग आपेमें नहीं रहते हैं।

आपेसे बाहर होना—क्रोधके आवेशमें अभिमानसहित बोलना। मुझको कमरेके अन्दर देखते ही वह आपेसे बाहर हो गया।

आबरू खाकमें मिलना—अप्रतिष्ठित होना। संसारमें जिसकी आबरू खाकमें मिल गयी, उसका जीवन निःसार समझना चाहिये।

आयी गयी करना—क्षमा करना ; समाप्त करना। उसको ही बड़ा बन लेने दो ; मोहन तुम ही आयी-गयी करो।

आरती उतारना—प्रतिष्ठा करना। स्वामी रामतीथ जहां कहीं भी जाते थे, लोग उनकी आरती उतारते थे।

आरे चलना—बहुत दुःख होना। किसीको आपत्तिमें देखकर हमारे दिलपर आरे चलने लगते हैं।

आव देखना न ताव देखना—कुछ भी न सोचना। जब उसने मुझे गालियां दीं, मैंने आव देखा न ताव, एक लट्ठ ऐसा जमाया कि आंखें मांगने लगा।

आवाजें कसना—चुभती हुई बातें कहना। जब कभी मैं उस मार्गसे निकलता हूं, वह दुष्ट मुझपर आवाज़ें कसे विना नहीं रहता।

आशाओंपर पानी फिरना—बिल्कुल हताश होना। उसको अपना जीवन निस्सार प्रतीत होता है, क्योंकि पुत्रकी असामयिक मृत्युसे उसकी आशाओंपर पानी फिर गया।

आसमानपर होना—उच्च पदपर होना। तुम्हारा और मेरा मेल नहीं हो सकता ; तुम आसमानपर हो और मैं जमीनपर।

आसमान सिरपर उठाना—बहुत कोलाहल करना, उपद्रव करना। आज-कल उस चाण्डाल चौकड़ीने आसमान सिरपर उठा रखा है।

आसमान टूटना—आपत्ति आना। पहले विमलाका पति मर चुका था, अब उसपर और आसमान टूटा कि उसका एक पुत्र भी मर गया।

आसमानपर चढ़ाना—अधिक प्रशंसा करना। तुमने उसको ऐसा आसमानपर चढ़ाया है कि वह सीधे-मुंह बात नहीं करता।

आंसुओंकी झड़ी लगाना—अत्यधिक रोना। अपने मित्रकी मृत्युका समाचार पाते ही उसने आंसुओंकी झड़ी लगा दी।

आसमानसे गिरना—अनायास मिलना । कुछ हाथ-पांव हिलाओ; धन आसमानसे नहीं गिरता ।

आसन हिलना—चलायमान होना ; प्रभावित होना । धनको देखकर अच्छे-अच्छोंका आसन हिल जाता है, तुम्हारी तो बात ही क्या है ?

आंसू पीकर रह जाना—शोकातुर होकर निःशब्द होना । राधाचरण आज आंसू पीकर रह गया ।

— **आंसू पीना**—दुःखको दबाना । तुम गुलछर्रे उड़ाओ ; तुमको क्या पता है कि आंसू पीते-पीते हमारा क्या हाल हो गया है ?

—**आँसू बहाना**—रोना । जब किसीको दुःखमें देखता हूं, तब मैं आंसू बहाए बिना नहीं रहता ।

आँसू पोंछना—केवल सान्त्वना देना । इस बार तो कुछ देना ही पड़ेगा ; केवल आंसू पोंछनेसे काम न चलेगा ।

आस्तीनमें साँप पालना—गुप्त शत्रुको आश्रय देना । मैंने आपसे पहले ही कहा था कि इस दुष्टको अपने पास न रखिये, परन्तु आप न माने और आस्तीनमें सांप पालते रहे ।

— **आह भरना**—दुःखमें लम्बी सांस लेना । चोरोंने इस विधवाका घर खाली कर दिया, आज प्रातःकालसे बेचारी आह भर रही है ।

— **आह करके रह जाना**—चुप-चाप चोट सह लेना । उस दुष्टने इस साधुको मारा, यह कुछ न कर सका, केवल आह करके रह गया ।

— **आस्तीनका सांप**—कपटी मित्र । मैंने तुमसे पहिलेही कह दिया था कि जगदीश आस्तीनका सांप है, अवसर पाकर अवश्य डंक मारेगा।

— **इति श्री करना**—समाप्त करना । इस मासके अन्ततक इस पुस्तक-की इतिश्री कर दूंगा ।

इधर की दुनिया उधर होना—बड़ा परिवर्त्तन होना। मुझे उसका पूर्ण विश्वास है; चाहे इधरकी दुनिया उधर हो जाय, वह अपने प्रणपर डटा रहेगा।

इधर-उधर करना—बहाना बनाना। मैं अनेक बार आपसे अपनी पुस्तक माँग चुका हूं, बड़े खेदकी बात है कि आप सदा इधर-उधर करते रहते हैं।

इधरका न उधरका—निरर्थक। पढ़ना-लिखना भी छोड़ दिया, खेती बाड़ीको भी तिलांजली दे दी, अब वह न इधरका है न उधर का।

इधर-उधरकी हाँकना—गप्पें लगाना। तुमको और काम ही क्या है? निकम्मे बैठे इधर-उधरकी हांकते रहते हो।

इन्हीं पाँवों जाना—जानेमें बिल्कुल विलम्ब न करना। यादव! इन्हीं पांवों बाजार जाओ और एक रुपयेका घृत लाओ।

इस कानसे सुनना उससे निकाल देना—ध्यान न देना। मैंने तो उसको किसी कामके लिये कहना ही छोड़ दिया। कहके क्या करूं, इस कानसे सुनता है तो उससे निकाल देता है।

इज़्ज़त गँवाना—अप्रतिष्ठित होना। भोलानाथने खेदसे कहा—'यह तुमलोगोंकी संगतिका फल है कि आज मैं अपनी इज्जत गंवा बैठा।'

इज़्ज़त बिगाड़ना—अपमानित करना। भले आदमियोंकी इज्जत बिगाड़ देना तो लफंगोंके लिये एक साधारण बात हैं।

इज़्ज़त दो कौड़ीकी न रहना—प्रतिष्ठा नष्ट होना। मैं तुमसे साफ कहता हूं कि इन गुण्डोंकी कुसंगतिमें तुम्हारी इज्जत दो कौड़ीकी न रहेगी।

इना-गिना—केवल काम चलाऊ। इना-गिना रुपया मिलता है एक कौड़ी पास नहीं रहती।

ईंटसे ईंट बजाना—विध्वंस करना। यह बात मानी हुई है कि तुम जहां कहीं भी जाओगे, ईंटसे ईंट बजाओगे।

ईंटका जवाब पत्थरसे देना—दुष्टके साथ दुष्टता करना। मेरे साथ छेड़-छाड़ न किया करो, जानते नहीं मैं ईंटका जवाब पत्थरसे देता हूं।

ईदका चाँद हो जाना—बहुत दिनोंके पीछे मिलना। मधुसूदन! आजकल क्या करते रहते हो? यार, तुम तो ईदके चांद हो गये हो।

उखड़ी हुई बातें करना—दिलसे न बोलना। तुम्हारे पास बैठकर क्या करें? तुम तो सदा उखड़ी हुई बातें करते हो।

उगल देना—गुप्त भेद प्रकट करना। यह माना कि वह बड़ा चालाक है परन्तु जब पुलिसका डण्डा पड़ेगा तब सब उगल देगा।

उछल पड़ना—बहुत प्रसन्न होना। मोहन बी० ए० परीक्षामें सफल होनेका समाचार सुनते ही उछल पड़ा।

उठ जाना—मर जाना या समाप्त होना। इस वृद्ध महात्माके सामने संसारसे अनेक लोग उठ गये, परन्तु यह अभी तक बैठा हुआ है। इस महीनेकी पहली तारीखको तीन सेर घी आया था; पन्द्रह दिनमें सब उठ गया।

उठा न रखना—कसर न छोड़ना। आप निश्चिन्त रहें; मैं इस मामले में अपनी ओरसे कुछ भी उठा न रखूंगा।

उड़ती खबर पाना—अनिश्चित समाचार मिलना। मैंने भी उड़ती खबर पायी थी कि उसका विचार इस वर्ष परीक्षामें बैठनेका नहीं है।

उड़ती चिड़िया पहचानना—जीकी बात जानना। मुझसे बहुत न उड़ो; तुम नहीं जानते कि मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूं।

उड़ा ले जाना—अपहरण करना। मेरी अनुपस्थितिमें वह दुष्ट मेरी अनेक पुस्तकें उड़ा ले गया।

उतार-चढ़ाव देखना—अनुभव होना। रामलालको साधारण व्यक्ति न समझो; उसने संसारके उतार-चढ़ाव देखे हैं।

उतारू होना—प्रस्तुत होना। रामदयालसे सावधान रहना। वह तुमको हानि पहुंचानेपर उतारू हो रहा है।

उथल-पुथल होना—परिवर्त्तन होना! जहां कभी झाड़-झूंड़ खड़े हुए थे,वहां आज बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं शोभायमान हैं;थोड़े समयमें कितनी उथल-पुथल हो गयी है।

उधार खाए बैठना—ताकमें रहना, प्रतीक्षा रहना। यदि वे हमको तङ्ग करनेकी चेष्टा करते हैं,तो करने दो; हम भी उनपर उधार खाए बैठे हैं।

उधेड़बुनमें लगना—चिन्ता करना। मुझे कहीं आने-जानेका अवसर नहीं मिलता; रात-दिन जीविकाकी उधेड़-बुनमें लगा रहता हूं।

उन्नीस-बीसका अन्तर—बहुत थोड़ा अन्तर। वैद्यजीकी औषधिसे विद्याभूषणके रोगमें उन्नीस-बीसका अन्तर तो अवश्य है।

उभारा देना—भड़काना। मैं उसको शान्त कर चुका था, परन्तु तुमने फिर उभारा दे दिया।

उलट-फेर होना—परिवर्तन होना। जहां किसी समय सिंह और व्याघ्र विहार करते थे, वहां आज मनुष्योंके बच्चे खेलते फिरते हैं; दस वर्षमें कितना उलट-फेर हो गया है।

उलटी गङ्गा बहना—विपरीत कार्य करना। पिताजी, हमें आपकी सेवा करनी चाहिये न कि आपको हमारी; आप तो उलटी गङ्गा बहाते हैं।

उलटी-सीधी सुनाना—बुरा-भला कहना। अब चुप रहो। उसने कुछ कहा, तो क्या हुआ, तुम तो बहुत देरतक उसको उलटी-सीधी सुनाते रहे।

उलटे पांवों जाना—लौटना। कितनी रद्दी चीनी उठा लाये; अभी उलटे पांवों जाओ और इसको वापस करके आओ।

उलझ पड़ना—लड़ बैठना। यह भद्र पुरुषोंका काम नहीं है कि जिसे देखा उससे ही अकारण उलझ पड़े।

उल्लू बनना—मूर्ख बनना। तुमसे पहले ही कहा था कि वहां न जाओ; देख लिया, हानि उठाई और उल्लू बने।

ऊंचा सुनना—कम सुनना। जरा जोरसे बोलिये, लाला साहब ऊंचा सुनते हैं।

ऊँचा बोल बोलना—अभिमान करना। नीच लोग,ही ऊंचा बोल बोलते हैं।

ऊँची जगह पाना—प्रतिष्ठित होना। जा अपने कर्त्तव्यका पालन करते हैं, वे संसारमें ऊंची जगह पाते हैं।

ऊट-पटाँग हाँकना—निरथक बोलना। क्या संसारमें तुम्हारे लिये कोई काम नहीं रहा जो दिनभर ऊट-पटांग हांकते फिरते हो?

ऊँटके मुंहमें जीरा देना—अधिक आवश्यकतावालेको थोड़ा देना। यह आदमी कलसे भूखा है, दो चपातियोंसे काम न चलेगा; तुम तो ऊंटके मुंहमें जीरा देते हो।

एक न एक रोग लगा रहना—शान्ति न रहना। मैंने वह स्थान इसलिये छोड़ दिया कि वहां एक-न-एक रोग लगा ही रहता था।

एक लकड़ीसे सबको हांकना—व्यवहारमें भले-बुरेका विचार न करना। तुम तो सबको एक ही लकड़ीसे हांकते हो।

एक आँखसे देखना—समान व्यवहार करना। महापुरुष संसारमें सबको एक आंखसे देखते हैं।

एक टक लगाना—दृष्टि जमाकर देखना। वह इस समय एक-टक लगा हुआ है।

एककी सौ सुनाना—जरासी बात कहनेपर बहुत बुरा-भला कहना। उसको जरा छोड़कर देखो एककी सौ सुनायेगा।

एक हो जाना—मिल जाना। ये लोग लड़-झगड़कर फिर एक हो जायंगे, और तुम बुरे बनोगे।

एकके तीन बनाना—अनुचित नफा लेना। लाला मुरलीधर! एकके तीन बनाते हो, फिर भी सन्तोष नहीं होता।

एक-तरफा डिगरी देना—अधूरा न्याय करना। यह बुद्धिमत्ताकी बात नहीं है, बाबूजी! आपने उन लोगोंके विचार सुनकर एक-तरफा डिगरी दे दी है।

एक न सुनना—बिलकुल न मानना। माधवने बहुत चिरौरी की, पर तुम्हारे भाईने एक न सुनी।

एक सौ चवालीस लगाना—जबान बन्द करना। पण्डित वृषभ-ध्वज शर्मा दो मासतक राजनीतिक भाषण न कर सकेंगे, क्योंकि उनपर एक सौ चवालीस लगा दी गयी है।

ऐंठ दिखाना—घमण्ड करना मैं तुम्हारी वीरतासे भलीभाँति परिचित हूँ ; मुझे अधिक ऐंठ न दिखाओ।

ऐंठ लेना—ठग लेना। तुम बड़े धूर्त्त हो ; इस गरीब आदमीसे भी कुछ न कुछ ऐंठ ही लिया।

ऐसा-वैसा समझना—साधारण व्यक्ति समझना। उसको ऐसा-वैसा न समझना, वह बड़ा योगी है।

ऐसी-तैसी करना—सब कुछ बुरा-भला उपाय करना। उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ; तुम सब अपनी ऐसी-तैसी करके बैठ रहे।

ओखलीमें सिर देना—जान-बूझकर आपत्तिमें पड़ना। अब रोते क्यों हो? तुमने स्वयं ओखलीमें सिर दिया था।

ओले पड़ना—आपत्ति आना। मातादीनके समान मन्दभाग्य कौन होगा? बेचारा जहाँ गया वहीं ओले पड़े।

औंधीखोपड़ी—निरामूर्ख। उस औंधी खोपड़ीको सीधा करनेकी सामर्थ्य मुझमें नहीं है।

औकातपर आना—असलियत प्रकट होना। वह वहुत डींग मारा करता था; अब अपनी औकातपर आ गया।

औंधे मुँह गिरना—पराजित होना। उसका मुकाबिला करनेको चेष्टा न करो; तुम अवश्य औंधे मुँह गिरोगे।

औरका और हो जाना—बिल्कुल वदल जाना। केवल एक महीने की बीमारीमें तुम ता और-के-और हो गये।

कंघो-चोटीसे अवकाश न मिलना—बनाव-सिंगारमें संलग्न रहना। आजकलके विद्यार्थियोंको कंघी-चोटीसे ही अवकाश नहीं मिलता।

कच्चा चिट्ठा—पोल। कुलवन्त रायका कच्चा चिट्ठा खोलकर तुमने हमारा काम वहुत पक्का कर दिया।

कंजूस मक्खी चूस—बड़ा ही कृपण। कालूराम कंजूस मक्खी-चूस है; उससे कुछ आशा न रखो।

कच्चा दिल करना—उदास होना। जो होना था सो हो गया; अब तुम कच्चा दिल क्यों करते हो?

कञ्चन वरसना—खूब धन मिलना। तुम्हारे घर रात-दिन कञ्चन वरसता है, पर तुमसे इतना भी नहीं होता कि किसोकी सहायता कर दो।

कटेपर नमक छिड़कना—दुःखितका जी दुखाना। क्या भद्रता इसीका नाम है कि सान्त्वना देनेके वदले तुम कटेपर नमक छिड़कते हो?

कठपुतली वनना—दूसरोंके कहने सुननेमें चलना। हम जानते हैं तुम आजकल मोहनके हाथोंकी कठपुतली वने हुए हो।

कड़ककर वोलना—सक्रोध बोलना। यह कहांकी सभ्यता है कि सीधो-सादी वातपर भी इतना कड़ककर बोलते हो?

कण्टक निकलना—दुःख दूर होना। धैर्य्यसे काम लो; किसी न किसी दिन शीघ्र तुम्हारा कण्टक अवश्य निकलेगा।

कतर-ब्योंत करना—काट-छांट करना; कमी करना। तुम बड़े विचित्र जीव हो; भला आवश्यक बातोंमें भी कोई कतर-ब्योंत करता है?

कदम बढ़ाना—चला जाना। कुछ लेना हो ले लीजिये, वरना कदम बढ़ाइये।

कनखियोंसे देखना—तिरछा देखना। वह कभी-कभी तुम्हारी ओर कनखियोंसे देख लेता है।

कन्धा लगाना—सहायता करना। यह धार्मिक कार्य है, तुम भी कन्धा लगाओ।

कपाट खुलना—ज्ञान उत्पन्न होना। सूरदास अन्धे थे, परन्तु भजनके प्रतापसे उनके कपाट खुल गये थे।

कब्रमें पैर लटकाना—मरण-समय समीप होना। उमराव खां! तुम कब्रमें पैर लटकाए हुए हो, फिर भी झूठ बोलना नहीं छोड़ते।

कमर कसना—प्रस्तुत होना, तत्पर होना, कटिबद्ध होना। परीक्षा समीप आ पहुंची, सावधान हो जाओ और परिश्रमपर कमर कसो।

कमर टूटना – निराश होना। पुत्रके मरनेसे उसकी कमर टूट गयी।

कमर सीधी करना—थकावट मिटाना; लेटना। प्रातःकालसे फिरते फिरते दोपहर हो गया है जरा कमर सीधी करने दो।

करते-धरते न बनना—असमर्थ होना। पण्डितजी, जो कुछ करना है आप ही करें, उनके करते-धरते कुछ न बनेगा।

करवटें बदलना—बिस्तरपर बेचैन रहना। तुमको दूसरेका दुःख क्या मालूम? मैं दर्दसे रातभर करवटें बदलता रहा।

करम फूटना—मन्दभागी होना। सरलाने दुःखी होकर कहा—"मेरा करम उसी दिन फूट गया था जब मैं इस घरमें आई थी।"

कल ऐंठना—चित्तकी गति बदल देना। चाचीने आते ही ऐसी कल ऐंठ दी है कि चाचा किसीसे बात तक नहीं करते।

कल पड़ना—चैन मिलना। श्याम और यादव घनिष्ठ मित्र हैं। श्यामको यादवके देखे विना कल नहीं पड़ती है,

कलम तोड़ना—खूब बढ़िया लिखना, अनूठी बातें लिखना। प्रेमचन्दजीने सेवासदन क्या लिखी! कलम तोड़ दी है।

कलई खुलना—भेद प्रगट होना। कहांतक छिप-छिपकर बुराइयाँ करोगे? किसी न किसी दिन तुम्हारी सब कलई खुल जायगी।

कलेजा धक्-धक् होना—घबराहट होना। आज न जाने क्यों मेरा कलेजा धक्-धक् हो रहा है।

कलेजा बढ़ना—प्रोत्साहित होना। मित्र-मण्डलीके पीठपर होनेके उसका कलेजा बढ़ गया है।

कलेजा खाना—बहुत तङ्ग करना। तुम्हारा सब प्रबन्ध अभी हुआ जाता है, क्यों कलेजा खा रहे हो?

कलेजा ठण्डा होना—शान्ति मिलना। जब अपनी आँखोंसे तुम्हारी दुर्दशा देख लूँगा, तब मेरा कलेजा ठण्डा होगा।

कलेजा थामकर रह जाना—जो मसोसकर रह जाना। जगदीशने जब परीक्षामें असफल होनेका समाचार सुना, तब बेचारा कलेजा थामकर रह गया।

कलेजा छलनी होना—चुभनेवाली बातोंसे जी दुखना; चोट पहुंचना। छज्जूराम! तुम छाज-सा मुंह लेकर यहां न फटका करो, तुम्हारी बातोंसे हमारा कलेजा छलनी हो गया है।

कलेजा फटना—बड़ा दुःख होना। तुमको हंसी सूझती है, किसीका कलेजा फटा जाता है।

कलेजा मुँहको आना—जी घबराना। तुम्हारी दुःखभरी कहानी सुनकर कलेजा मुंहको आता है।

कलेजा तर होना—बड़ी प्रसन्नता होना। पांचसौकी थली अनायास ही मिल गई, आज तो तुम्हारा कलेजा तर हो गया।

कलेजा पसीजना—दया आना। इस स्त्रीका रोना सुनकर मेरा कलेजा पसीज गया।

कलेजा बाँसों उछलना—अत्यधिक प्रसन्न होना। अपने विवाह-का समाचार सुनकर मोहनका कलेजा बाँसों उछल रहा है।

कलेजेसे लगाकर रखना—अधिक प्रेम करना। मैं जिसको कलेजे-से लगाकर रखता था, वह अब मेरा कलेजा खाता है।

कलेजेपर हाथ धरना—अपने दिलसे पूछना। मोहन! जरा कलेजेपर हाथ धरके कहो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या कुछ नहीं किया है।

कलेजेको मसलना—दिलको चोट पहुंचाना। यह कहांका न्याय है कि जो तुम्हें दिलसे प्रेम करता है, तुम उसके कलेजेको मसलते हो?

कसर निकालना—दण्ड देना, बदला लेना। मैं काम-धन्धेसे निपटारा पा लूं, तो उसको सब कसर निकालूंगा।

कसौटीपर कसना—जाँच-पड़ताल करना; परखना। मैं उसे अनेक बार कसौटीपर कस चुका हूं, वह विश्वास करने योग्य व्यक्ति है।

कहा-सुनी हो जाना—तकरार होना। मैं माधवके साथ नहीं बोलता; एक दिन उससे मेरी कहा-सुनी हो गयी थी।

कहींका न छोड़ना—नष्ट-भ्रष्ट कर देना। तुम्हारी संगतिने सुख-रामको कहींका न छोड़ा।

कागज काले करना—व्यर्थ लिखना। इस पुस्तकमें मुझे कोई कामकी बात मिली नहीं, केवल कागज काले कर रखे हैं।

कागजी घोड़े दौड़ाना—व्यवहारमें कुछ न लाना, केवल समाचार फैलाना। भारतमें आजकल ढोंगका प्रावल्य है, केवल कागजी घोड़े दौड़ाये जाते हैं।

काँटा-सा खटकना—बहुत अखरना। मैंने वह भोजनालय इसलिये छोड़ दिया कि वहां मेरा भोजन करना भी उन दुष्टोंके दिलमें कांटा-सा खटकता था।

काँटे बोना—हानि पहुंचाना। उसने तुम्हारे लिए जो कुछ किया है सबको विदित है, और तुम उसके लिये सदा कांटे बोते रहते हो।

काँटेसे काँटा निकालना—शत्रु द्वारा शत्रुका नाश करना। तुम देखोगे कि मैं स्वयं अलग रहकर किस प्रकार कांटेसे कांटा निकालता हूं।

काट खानेको दौड़ना—चिड़चिड़ेपनसे बोलना, या अत्यन्त भयानक प्रतीत होना। वह बड़ा विचित्र जन्तु है; यदि उससे बात कीजिये तो काट खानेको दौड़ता है।

काटो तो बदनमें खून न होना—अत्यन्त भयभीत होना। सशस्त्र डाकुओंके दलको देखकर अमरनाथकी वह हालत थी कि काटो तो बदनमें खून नहीं।

कानपर जूँ न चलना—ध्यान न देना। तुमको रात-दिन समझाता हूं, पर तुम्हारे कानपर जूं नहीं चलती।

कान भरना—पिशुनता करना। तुम्हारी वहां कौन सुननेवाला था? तुम्हारे विरुद्ध उस दुष्टने लालाजीके कान भर दिये होंगे।

कान पकड़ना—किसी बुरे कामको फिर न करनेका प्रण करना। वह बोला—"आजसे कान पकड़ता हूं कि अब किसीके झगड़ेमें न पड़ूंगा।"

कान देना—ध्यानपूर्वक सुनना। तुम्हारा लड़का इतना ढीठ हो गया है कि गुरुकी बातोंपर भी कभी कान नहीं देता।

कपोल-कल्पित—निराधार; मन गढ़न्त। विदेशीय इतिहासमें अनेक कपोल-कल्पित बातें लिख मारी हैं।

कान काटना—बड़ी चालाकी करना, धोखा देना। कल्याणको आप निरा बालक न समझिये; वह अच्छे-अच्छे के कान काटता है।

कान खड़े होना—चौंकना; सावधान होना। उसकी गोलमालकी बातें सुनकर मेरे भी कान खड़े हो गये।

कान खुलना—सावधान होना; होश आना। कृष्ण! इतनी हानि उठानेपर भी यदि तुम्हारे कान खुल गये तो गनीमत है।

कान खोलना—सावधान करना। रामगोपाल! मैंने पहलेही तुम्हारे कान खोल दिये थे कि इस मामलेमें बदनामी अवश्य होगी।

कानमें पड़ना—सुननेमें आना। यह बात तो मेरे कानमें भी पड़ी थी, परन्तु मैं इसका अभिप्राय नहीं समझा था।

कान खाना—कोलाहल करना। तुमसे चुप-चाप नहीं बैठा जाता तुम लोग दो घण्टेसे कान खा रहे हो।

काना-फूसी करना—कानमें धीरे-धीरे भेदकी बात कहना। यादव! तुम कुछ पढ़ते-लिखते भी हो या सदा काना-फूसी ही करते रहते हो?

कानी कौड़ी पास न होना—नितान्त निर्धन होना। ये डींग तो मारते हैं दुनिया भरकी, और कानी कौड़ी पास नहीं है।

कानेको काना कहना—अप्रिय सत्य बोलना। बात ठीक है, परन्तु कानेको काना कहना भी तो उचित नहीं।

कानोंमें तेल डालना—सुननेकी इच्छा न करना। तुम उसके पास मुझे राम-कहानी सुनानेको भेजते हो; वह कानोंमें तेल डाले बैठा है।

कानों-कान खबर न होना—बिल्कुल गुप्त रहना। ठाकुर साहब! आप चिन्ता न करें; इस बातकी किसीको कानों-कान खबर न होगी।

काफूर होना—भाग जाना, ग़ायब हो जाना। उसने विदेशमें इतना धन कमाया कि थोड़े दिनोंमें ही घरकी गरीबी काफूर हो गई।

काम कर जाना—प्रभाव डालना। स्वामीजी! आपका उपदेश काम कर गया; उसने फिर कभी अपने पिताका सामना नहीं किया।

काम आना—मारा जाना। यूरोपीय महासमरमें संसारके अनेक वीर काम आये।

काम चलाऊ—कुछ उपयोगी। यह कम्बल बहुत अच्छा तो नहीं है, परन्तु काम चलाऊ है; लेना हो; ले लो।

काम निकालना—अभीष्ट सिद्ध करना। तुमको किसीके बुरे-भलेसे क्या लेना? तुम अपना काम निकाल लो।

काम तमाम करना—मार डालना। उस वीरने तलवारके एक हाथमें ही शत्रुका काम तमाम कर दिया।

काया-पलट होना—बड़ा परिवर्त्तन होना। देखते-देखते देशकी काया पलट होगई।

काला अक्षर भैंस बराबर होना—कोरा मूर्ख होना। यह सब जानते हैं कि तुमको काला अक्षर भैंस बराबर है, तिसपर भी तुम अपनेको पण्डित समझते हो।

कालिख लगना—कलङ्कित होना। यदि उन लोगोंमें बैठना-उठना न छोड़ोगे, तो एक दिन तुमको कालिख अवश्य लगेगी।

किंकर्त्तव्य विमूढ़ होना—कर्त्तव्य न सूझना। पीछे चलनेवालोंका क्या दोष है जब नेता ही किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया है?

किताबका कीड़ा—अधिक पढ़नेवाला व्यक्ति। तुम तो किताबके कीड़े हो; तुम परीक्षामें सफल न होगे, तो और कौन होगा?

किस खेतकी मूली—तुच्छ। वहां अच्छे-अच्छे खेत रह जाते हैं; तुम किस खेतकी मूली हो, मूलचन्द?

किस चिड़ियाका नाम—अपरिचित। रामशरण किस चिड़ियाका नाम है? मैं उसके विषयमें कुछ नहीं बता सकता।

किस मुंहसे—किस बल पर। जब वह तुम्हारा साथ नहीं देता, तो किस मुंहसे कहते हो कि वह मेरा मित्र है?

किनारे लगाना—पार उतारना; कार्य करना। हमारा बेड़ा मझधारमें पड़ा हुआ है, इसे आपही किनारे लगायेंगे।

किया-कराया बराबर करना—सब परिश्रम नष्ट कर देना। मैं तीन दिनसे इस कार्यमें लगा हुआ था; उसने आकर सब किया-कराया बराबर कर दिया।

किरकिरा होना—बिगड़ जाना। रामके न होनेसे आजके प्रीति-भोजका सब आनन्द किरकिरा हो गया।

किरकिरी होना—अप्रतिष्ठित होना। वह बहुत दिनोंसे उछलता-कूदता फिरा करता था, आज उसकी सब किरकिरी हो गई।

किस्मत लड़ना—भाग्य अनुकूल होना। अपना-सा प्रयत्न तो सभी कर रहे हैं, पर देखिये किसकी किस्मत लड़ती है?

किस्मत फूटना—भाग्य मन्द पड़ना। जिसका तुम्हारे साथ सम्बन्ध जुड़ता है, उसकी किस्मत फूट जाती है।

किस खेतकी मूली—किसीका प्रभाव न मानना। उसने बड़ों बड़ोंको बेवकूफ बना दिया। तुम किस खेतकी मूली हो।

किस मर्जकी दवा—किसी काम आना। माता-पिताकी सेवा नहीं कर सकते तो किस मर्जकी दवा हो?

कुआं खोदना—हानि पहुंचानेका प्रयत्न करना। जो दूसरोंके लिये कुआं खोदता है उसके लिये खाई पहलेसे तैयार है।

कुण्ठित छुरीसे गला रेतना—बड़ी हानि पहुंचाना। उसके हृदयमें दया कहां? वह तो रात-दिन गरीबोंका गला कुण्ठित छुरीसे रेतता है।

कुत्ता काटना—पागल होना। मैं किसीके झगड़ेमें क्यों पड़ूं ? क्या मुझे कुत्तेने काटा है ?

कुत्तेकी मौत मरना—बड़ी दुर्दशा होकर देहान्त होना। उसने ऐसे-ऐसे अनर्थ किये कि वह कुत्तेकी मौत मरेगा।

कुप्पा होना—मोटा होना और खाना। दवाने दस दिनमें ऐसा असर दिखाया कि वह फूलकर कुप्पा हो गया। मैंने जरा मजाक किया था वह फूलकर कुप्पा हो गया।

कुहराम मचना—रोना पीटना। गोविन्दके स्वर्गवाससे घर भरमें कुहराम मच गया।

कुएंमें भङ्ग पड़ना—सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना। कार्य विगड़ना आश्चर्यकी बात नहीं है जब कि तुम्हारे यहां कुएंमें भङ्ग पड़ी हुई है।

कूप-मण्डूक बनना—अपने अल्प ज्ञानपर अकड़ना एवं अधिक जाननेकी चेष्टा न करना। घरसे बाहर कभी निकले नहीं; तुम लोग तो कूप-मण्डूक बने हुए हो।

कैंडा बदलना—ढंग परिवर्तित करना। वह बड़ा चालाक आदमी है; उसके साथ तुमको भी कैंडा बदलना पड़ेगा।

कोई दमका मेहमान होना—मरणासन्न होना। अब चिकित्सासे कुछ लाभ नहीं; वह तो कोई दमका मेहमान हो रहा है।

कोख उजड़ना—सन्तान मर जाना। गत वर्ष उस बेचारीका सुहाग लुट गया था; आज उसकी कोख भी उजड़ गई।

कोख को आंच—सन्तानका वियोग या दुख। मां सब यातना सह सकती है किन्तु कोखकी आंच सहना कठिन है।

कोर कसर—ऐब या कमी बेशी। पहनकर देख लो, कोटमें कोई कोर कसर न हो।

कोरा जवाब देना—निराशा-जनक उत्तर देना। मैं पहले ही उससे सवाल करना नहीं चाहता था; देख लिया, उसने कोरा जवाब दे दिया।

कोल्हू का बैल—दिनरात कामकरनेवाला। वहांकी नौकरी बहुत बुरी है। कोल्हूका बैल बनकर दिनरात काम करना पड़ता है।

कोसों दूर रहना—कुछ प्रयोजन न रखना। मैं ऐसे झगड़ोंसे सदा कोसों दूर रहता हूं।

कौड़ीके तीन-तीन होना—दुर्दशा होना; बहुत ही सस्ता होना। आम अभी चले ही हैं, इसलिये महँगे बिकते हैं; दस दिनके बाद कौड़ीके तीन-तीन हो जायँगे।

कौड़ी-कौड़ीको मोहताज होना—रुपये-पैसेसे बहुत तंग होना। जबतक उसके पिता जीवित रहे, उसने खूब मौज उड़ाई; अब वह कौड़ी-कौड़ीको मोहताज हो गया है।

क्या मुंह दिखाना—क्या उत्तर देना। रामने कहा—"लक्ष्मणको खोकर अयोध्याको किस प्रकार लौटूंगा और सुमित्राको क्या मुंह दिखाऊंगा?"

खटका लगा रहना—भय बना रहना। यह स्थान सुरक्षित नहीं है; यहां कुछ न कुछ खटका लगा रहता है।

खटाईमें पड़ना—कुछ निश्चय न होना, झमेलेमें पड़ना। देखिये क्या निर्णय होता है; अभी तो मामिला खटाईमें पड़ा हुआ है।

खम ठोकना—लड़नेको प्रस्तुत होना। खाली खम ही ठोकते हो या कुछ दम भी रखते हो?

खयाली पुलाव पकाना—केवल कल्पना करना। नारायण! कुछ परिश्रम भी करते हो या खाली खयाली पुलाव पकाते रहते हो?

खरी-खरी सुनाना—स्पष्ट बात कहना। मैं किसीसे डरनेवाला नहीं हूं; मैं सदा खरी-खरी सुनाता हूं।

खरी-खोटी सुनाना—बुरा-भला कहना। यदि तुम उससे छेड़-छाड़ करोगे, तो वह भी तुमको खरी-खोटी सुनायेगा।

खाक छानना—भटकना। हीरके प्रेममें रांझा जङ्गलों और पहाड़ोंकी खाक छानता फिरता था।

खाक डालना—दबाना, छिपाना। जो हुआ सो हुआ, अब इस झगड़ेपर खाक डालो।

खाकमें मिलाना—बरबाद करना। उसने अपने कुलकी मर्यादाको खाकमें मिला दिया।

खाल उधेड़ना—शरीरका चमड़ा अलग करना। कठोर दण्ड देना। अगर सब बातें सच न कहेगा तो तेरी खाल उधेड़ डालूंगा।

खालाजीका घर—सहज काम। धन कमाना कोई खालाजीका घर थोड़े ही है जो बिना मेहनत मिल जाय।

खिचड़ी पकाना—गुप्तरूपसे षड्यंत्र रचना। अमरनाथ और जगदीश दो दिनसे कुछ खिचड़ी पका रहे हैं।

खिल उठना—प्रसन्न होना। ईश्वरदत्त गजटमें अपना नाम देखकर खिल उठा।

खुले आम—सबके सामने। वह इतना बेशर्म होगया कि खुलेआम औरतोंके साथ नाचता है।

खुदा खुदा करके—बड़ी मुश्किलसे। रातभर बिना कम्बलके जाड़ेकी रात खुदा खुदा-करके काटी।

खुले दिल—उदार हृदय। वे हर एकसे खुले दिलसे मिलते हैं।

खुलकर खेलना—स्वच्छन्द रहना। उसको हानि-लाभका ध्यान नहीं; वह आज कल खूब खुलकर खेलता है।

खुशामदी टट्टू—हां में हां मिलानेवाला। धनी खुशामदी टट्टुओंसे ही खुश रहते हैं।

खूनके घूँट पीना—कठिन चोट सहना। वह दूसरोंके हाथसे यदि प्यालेपर प्याला लेता है, तो तुम खूनके घूंट क्यों पीते हो ?

खून सूखना—अत्यन्त भयभीत होना। जब चारों ओरसे गोलीकी अवाज सुनाई दी, तो उसका खून खुश्क हो गया। (खून सूख गया)।

खूनका प्यासा बन जाना—बध करनेपर उतारु होना। नारायण जिस जगदीशको प्राणोंसे प्रिय समझता था, वही जगदीश इस समय उसके खूनका प्यासा बन गया है।

खूनकी नदी बहाना—सैकड़ोंको जानसे मार डालना। उसने वीरतापूर्वक संग्राम-भूमिमें शत्रुओंका वधकर खूनकी नदी बहा दी।

खून उबलना या खौलना—क्रोध आना। उस चण्डालको देखकर मेरा खून उबल (खौल जाता है) पड़ता है।

खून लगाकर शहीदोंमें दाखिल होना—बिना कुछ किये प्रसिद्ध होनेकी चेष्टा करना। भारतमें आजकल ऐसे अनेक व्यक्ति मिलेंगे, जो खून लगाकर शहीदोंमें दाखिल होते हैं।

खेत रहना—संग्राममें मारा जाना। यूरोपीय महासमरमें अनेक भारतीय वीर भी खेत रहे।

खेलना खाना—आनन्दसे दिन बिताना। उसे अभी क्या चिन्ता है, उसके तो खेलने खानेके दिन हैं।

खोकर सीखना—हानि उठाकर अनुभव प्राप्त करना। मनुष्य प्रायः कुछ खोकर ही सीखते हैं।

खोपड़ी खाना—बकवाद करके तङ्ग करना। उसे कुछ काम तो है नहीं, दिनभर मेरी खोपड़ीको चाटता रहता है।

खोपड़ी गंजी करना—मारते-मारते सिरके बाल उड़ा देना। नारायणने आज श्यामकी खोपड़ी गंजी कर दी।

गङ्गा नहा लेना—किसी बड़े कार्यसे निवृत्त हो जाना। गङ्गाप्रसाद तो गङ्गा नहा चुके, हमारी एक परीक्षा अभी शेष है।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—मनमुटाव उत्पन्न करनेवाली पुरानी बातें छेड़ना। नारायण! जा हुआ सो हुआ, शान्त हो जाओ; अब गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ते हो।

गजभरकी छाती होना—उत्साह होना। भाईको सहायताके लिये आया देखकर उसकी गजभरकी छाती हो गयी।

गड़ जाना—झेंप जाना। वह बोड़ी पीता जा रहा था, मगर मास्टर साहबको सामने देखकर जमीनमें गड़ गया।

गत बनाना—दुर्दशा करना; पीटना। मैंने उसकी वह गत बनाई कि वह अब इधर आनेका नाम तक नहीं लेता।

गधेको बाप बनाना—मूर्खका आदर करना। लोग स्वार्थवश प्रायः गधेको बाप बनाते हैं।

गप्प मारना—निरर्थक बातें कहना। वासुदेवने पढ़ना-लिखना छप्परपर रख दिया, दिनरात गप्प मारता फिरता है।

गम खाना—शान्ति धारण करना। वह आता-जाता प्रतिदिन मुझसे छेड़-छाड़ करता है, आपही बतलाइये कि मैं कहांतक गम खाऊं?

गरम होना—क्रोध करना। गुरुजी! मैं कहांतक ठण्डा रहूं? वह जरा-जरा सी बातपर गरम हो जाता है।

गरदन नापना—गलेपर आक्रमण करना। उसके साथ अधिक छेड़-छाड़ न किया करो; किसी दिन ऐसी गरदन नापेगा कि सब चौकड़ी भूल जाओगे।

गरदनपर सवार रहना—पीछा न छोड़ना। उसने नाकमें दम कर दिया, दिन-रात मेरी गरदनपर सवार रहता है।

गरदनपर सवार होना—पीछे पड़ना। वह मेरा रुपया कैसे न देगा? मैं अभी उसकी गरदनपर सवार होता हूं।

गरदनपर छुरी फेरना—अत्याचार करना। तुम लोग दिन-रात गरीबोंकी गरदनपर छुरी फेरते हो।

गरदन काटना—हानि पहुंचाना। क्या तुम इसीलिये हमारी गरदन काटते हो कि हम तुम्हारे लिये गरदन कटानेको प्रस्तुत रहते हैं?

गरदन झुकाना—आधीन होना। उस प्रभावशाली संन्यासीके सामने सब गरदन झुकाते हैं।

गरदन झुकना—अधीन होना, नम्र बनना। अमेरिकामें स्वामी रामतीर्थका वह प्रभाव था कि उनके सामने प्रत्येक व्यक्तिकी गरदन झुक जाती थी।

गरदन न उठाना—प्रतिवाद न करना। जब हमने गरदन न उठाई, तब उसका अत्याचार कैसे बन्द होता?

गरेबाँ चाक करना—प्रेमोन्मत्त होना। लैलाको धुनमें मजनूंनें अपना गरेबाँ चाक कर डाला था।

गर्द भी न पाना—तुलनामें न ठहर सकना। रामलाल दर्शन-शास्त्रका सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी है; तुम उसकी गर्द भी नहीं पा सकते।

गला रेतना—अत्याचार करना। क्या हुआ यदि किसीने उसकी गरदन नाप दी? वह रोज गरीबोंका गला रेतता था।

गला छुटाना—जान बचाना; छुटकारा पाना। अब उस दुष्टसे गला छुटाना मुश्किल है, पहले क्यों न सोचा?

गला घोंटना—बरजोरी करना। रामलालकी इच्छा पढ़नेकी नहीं है, उसका मामा उसका गला घोंटता है।

गला काटना—कष्ट पहुंचाना, अत्याचार करना। जिसके लिये तुम गला कटवानेको तैयार रहा करते थे, अब वह स्वयं तुम्हारा गला काटता है।

गला फँसना—विवश होना। मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता; इस समय मेरा गला बुरी तरह फंसा हुआ है।

गला फँसाना—आपत्तिमें डालना।

गला बैठना—साफ आवाज न निकलना। जनाब! मैं रात भर गाती रही, अब गला बैठ गया।

गली-गली मारा फिरना—दुर्दशा होना। घर बेचकर मदिरा-पान करते हो; एक दिन गली-गली मारे फिरोगे।

गले पड़ना—विवश करना। वह पांच रुपयेके लिये गले पड़ा हुआ है।

गलेका हार होना—अति प्रिय बनना। आजकल जगदीश उमरावके गलेका हार हो रहा है।

गले मढ़ना—इच्छाके विरुद्ध सौंपना। मुझे आजकल पढ़ानेका अवकाश नहीं मिलता; आप इस लड़केको मेरे गले क्यों मढ़ते हैं?

गले पड़ना—ऊपर पड़ना। पुरुषार्थ करो और आनन्दसे रहो; तुम क्यों किसीके गले पड़ते हो।

गहरा असामी—अधिक देनेवाला। पुलिसवाले गहरा असामी खोजते हैं।

गहरा हाथ मारना—प्रचुर परिमाणमें इच्छित वस्तु प्राप्त करना। आजकल वह गहरा हाथ मार रहा है।

गहरी छनना—आनन्दमें समय कटना। तुम हमसे क्यों बातें करोगे? आजकल तो गहरी छनती है।

गाजर-मूली समझना—अत्यन्त निर्बल जानना। हम तुम्हारी मरम्मत कर देंगे; क्या तुमने हमको गाजर-मूली समझा है?

गांठ खुलना—उलझन मिटना। अच्छा ही समझो जो इतने दिन बाद आज उसके हृदयकी गांठ खुली।

गाँठ लेना—अपने पत्तमें कर लेना। तुम किस नींद सो रहे हो? तुम्हारे एक साथीको उन धूर्त्तों ने गांठ लिया है।

गाँठ पर गांठ पड़ना—उलझन पड़ना। दोनोंके दिलों पर गांठ पर गांठ पड़ती जाती है।

गांठका पूरा—धनी। कोई गांठका पूरा अक्लका अन्धा मिले तो काम चले।

गागरमें सागर भरना—विस्तृत विषयको संक्षेपमें कह देना। दस पेजका निबन्ध लिखकर गागरमें सागर भर दिया।

गाढ़ी कमाई—परिश्रमसे पैदा किया हुआ धन। यह मेरी गाढ़ी कमाई है तुम्हें कैसे दे दूं।

गाल बजाना—बकवाद करना। तुम्हारी वीरता किसको विदित नहीं है? क्यों गाल बजाते हो?

गिनगिनकर दिन काटना—दुखसे दिन विताना। कैलाशकी मां पुत्रकी प्रतीक्षामें गिन गिनकर दिन काट रही है।

गिन-गिनकर बदले लेना—बहुत तंग करना। हम नहीं जानते थे कि तुम हमसे गिन-गिनकर बदले लोगे।

गिन-गिनकर पैर रखना—बहुत धीरे-धीरे चलना। यहांसे काशी दस मील है; इस प्रकार गिन-गिनकर पैर रखोगे, तो कब पहुंचोगे?

गिरगिटकी तरह रंग बदलना—एक बातपर न रहना। मैं ऐसे व्यक्तिका विश्वास नहीं करता, जो गिरगिटकी तरह रंग बदलता रहता है।

गीतगाना—तारीफ करना। वह हर वक्त तुम्हारे ही गीत गाया करता है।

गोदड़-भबकियाँ दिखाना—झूठ-मूठ डराना। जो व्यक्ति उसकी नस-नस पहिचानता है, उसको वह गोदड़-भबकियां दिखाता है ?

गुथ पड़ना—लड़ बैठना। नारायण ! तुम्हारे मस्तिष्कमें कुछ विकार तो उत्पन्न नहीं हो गया ? तुम जिसे देखते हो, उससे ही गुथ पड़ते हो।

गुदड़ीका लाल—बाहिरी रंगसे जिसके गुणोंका पता न चले। उसे क्या समझते हो वह गुदड़ीका लाल है।

गुल खिलना—विचित्र घटना होना; बखेड़ा खड़ा होना। इस मामलेमें आगे चलकर गुल खिलेंगे।

गुल खिलाना—बखेड़ा खड़ा करना, विचित्र घटना घटित करना। जरा उसको अधिकार मिलने दो; फिर देखना क्या-क्या गुल खिलाता है !

गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द करना। यादवका भाई कोतवाल है, बाप मुनसरिम है, किसी बातकी चिन्ता नहीं; खूब गुलछर्रे उड़ाता है।

गूलरका फूल लेना—अप्राप्य वस्तुकी इच्छा करना। उसको आकाशमें उड़नेवाले घोड़ेकी धुन सवार है; मानो वह गूलरका फूल लेना चाहता है।

गूलरका फूल हो जाना—लापता होना। मुझको देवदत्तका कुछ पता नहीं है; वह तो गूलरका फूल हो गया।

गूलर फाड़कर जीव उड़ाना—भेद प्रकट करना। बस चुप रहो, क्यों गूलर फोड़कर जीव उड़ाते हो ?

गोली मारना—छोड़ देना। नकली बन्दूक लेकर क्या करोगे ? इसको गोली मारो।

घन चक्करमें पड़ना—संकट या फेरमें पड़ना। मैं ऐसे घन चक्करमें पड़ गया हूं कि कुछ करते धरते नहीं बनता।

घड़ों पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना। जब मैंने सबकी उपस्थितिमें उसका कच्चा चिट्ठा खोला, तब उसपर घड़ों पानी पड़ गया।

घर उजाड़ना—कुल-सम्पत्तिका नाश होना। जुवा खेलना बहुत बुरा व्यसन है, इसके कारण अनेक घर उजड़ गये हैं।

घरका बोझ—घरका उत्तर दायित्व। पिताके मरनेसे घरका बोझ कैलाशके सिरपर आ गया।

घर करना—आकृष्ट करना। तुमने उसके दिलमें ऐसा घर किया है कि अब वह तुम्हारा ही कलमा पढ़ता है।

घरको न घाटका—इधरका न उधरका। धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका।

घरका आदमी—इष्ट मित्र। आप तो सब जानते हैं घरके आदमी हैं।

घर बसना—स्त्रीका आना। विवाह होते ही बेचारका घर बस गया।

घर बैठे—बिना बाहर गये। घरमें बैठे रोटी मिले तो बाहर कोई क्यों जाय।

घाट-घाटका पानी पीना—संसारका अनुभव प्राप्त करना।

घावपर नमक छिड़कना—दुःखित व्यक्तिको अधिक दुखित करना। जगदीश इस बार परीक्षामें असफल हो गया है; उसको छेड़कर उसके घावप नमक छिड़कते हो?

घास खोदना, घास काटना—व्यर्थ समय खोना। चार साल काशी-विश्वविद्यालयमें रहकर क्या तुमने घास ही खोदा है?

घिग्घी बँधना—अत्यन्त भयभीत होना। चोरोंका दल देखते ही उस स्त्रीकी घिग्घी बँध गयी।

घीके दीपक जलाना—हर्ष मनाना। महेन्द्र! मित्रों सहित परीक्षामें उत्तीर्ण हो गये हो अब तो घीके दीपक जलाओ।

घुट-घुटकर मरना—बड़े कष्टसे शरीर छोड़ना। जो दूसरोंका गला घोटते हैं, वे घुट-घुटकर मरते हैं।

घुटने टेकना—आत्म-समर्पण करना; अधीन होना। और किसीका क्या दोष? तुम्हारे नेताने ही घुटने टेक दिये।

घुलघुलकर बात करना—घनिष्ठ भावसे बात करना। उनमें बड़ी दोस्ती है, घन्टों घुलघुलकर बातें होती हैं।

घोड़े बेचकर सोना—निश्चिन्त सोना। रामकिशोरकी परीक्षा समाप्त हो गयी, इसीलिये घोड़े बेचकर सो रहा है।

घोलकर पीजाना—पर्वाह न करना। क्या समझते हो, तुम्हें घोल कर पीजाऊंगा।

चण्डूलखानेकी गप्प—झूठी बात। इसकी बातपर कोई कैसे विश्वास कर सकता है यह तो चण्डूलखानेकी गप्प है।

चकमा देना—धोखा देना। वह चकमा देकर चला गया।

चटकर जाना—खा जाना। वह बहुत भूखा था, बीस बाईस पूरियां चट कर गया।

चल बसना—मर जाना। वह गरीब चार दिनकी बीमारी में ही चल बसा।

चांदपर थूकना—किसी को निन्दा कर स्वयं निन्दित होना। मालवीयजी की निन्दा करना चांदपर थूकना है

चांदीका जूता—घूस, रिश्वत। चांदीके जूते बड़े बड़े खालेते हैं।

चादरसे बाहर पैर फैलाना—आमदनीसे अधिक खर्च करना। संभलकर चलो, चादरसे बाहर पैर फैलाना ठीक नहीं।

चादर तानकर सोना—निश्चित हो जाना। आपकी परीक्षा आज समाप्त हो जायगी ; आप तो अब चादर तानकर सोइयेगा।

चादर देखकर पाँव फैलाना—शक्तिके अनुसार कार्य करना। सुखराम सुखपूर्वक रहता है क्योंकि वह चादर देखकर पांव फैलाता है।

चार आँसू गिराना—शोक मनाना। गैर भी ऐसे अवसरपर चार आंसू गिरा देता है, अपने होते हुए तुमसे तो इतना भी न हुआ।

चार चाँद लगाना—सम्मान बढ़ाना। इस पुस्तकके प्रकाशकने प्रोफेसर यदुनाथकी कीर्तिको चार चांद लगा दिये हैं।

चारों खाने चित्त आना—बुरी तरह पराजित होना। मैंने तुमसे कह दिया है कि यदि उसका मुकाबिला करोगे, तो चारों खाने चित्त आओगे।

चाल चलना—आचरण करना। वह ऐसी चाल चलता है कि सब उसकी प्रशंसा करते हैं।

चार दिन—चन्द दिन। चार दिनोंकी चांदनी फेर अंधेरी रात।

चिकना घड़ा—जिसपर किसी बातका असर न हो। उसे क्यों समझाते हो वह तो चिकना घड़ा है।

चिकनी-चुपड़ी बातें—खुशामदी बातें। फुसलाना। धनीराम धनिकोंमें बैठकर चिकनी-चुपड़ी बातें करता है।

चिड़िया फँसाना—किसी मालदार आसामीको धोखेसे वसमें करना। उसने एक ऐसी चिड़िया फंसाई है कि उसकी आजीविकाकी चिन्ता उड़ गई।

चिराग गुल होना—मौत, भारी नुकसान। अपार क्षति। विश्वनाथके मरनेसे उनका घरका चिराग गुल हो जायगा।

चिराग ठण्डा होना—पुरुषार्थ समाप्त होना। वृद्धावस्थाके कारण चौधरी वीरसिंहका चिराग ठण्डा हो गया है।

चुटकियोंमें—चटपट; जल्दी। मैं चुटकियोंमें यह काम पूरा कर डालूंगा।

चुटकी लेना—चुभती हुई बात कहना। पण्डितजी, रामदास बड़ा धूर्त है; कल बातें करते हुए उसने ऐसी चुटकी ली कि मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ।

चुल्लूभर पानीको भी न पूछना—बिल्कुल काम न आना। आजकल सावधान रहना चाहिये; बीमार पड़ जाओगे, तो कोई चुल्लूभर पानीको भी न पूछेगा।

चुल्लूभर पानीमें डूब मरना—लज्जासे मुंह न दिखाना। जगदीश! पुरुष होकर स्त्रियोंकी भांति आचरण करते हो, कहीं चुल्लूभर पानीमें डूब मरो।

चुल्लूमें उल्लू होना—थोड़ी-सी मदिरा पीकर संज्ञाहीन होना। तुम ऐसे चुल्लूमें उल्लू होते हो कि घण्टों बाद सुध आती है।

चूल्हे भाड़में जाना—नष्ट भ्रष्ट हो जाना।

चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना। यह भी कोई जीवन है कि चार-चार दिनतक चूल्हा नहीं जलता।

चेहरा उतरना—उदास होना। मोहन! आज तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है?

चेहरा उतरना—मुंह पिचकाना। तीन दिनसे उसको ऐसा ज्वर चढ़ा कि उसका चेहरा उतर गया।

चेहरेपर हवाइयां उड़ना—भयभीत होना। वनमें सिंहकी गर्जना सुनकर उसके चेहरेपर हवाइयां उड़ने लगीं।

चैनकी वंशी बजाना—सुखपूर्वक जीवन बिताना। आजकल श्याम मथुरामें चैनकी वंशी बजा रहा है; रामको अयोध्यामें चैनकी छन रही है।

चोलीदामनका साथ—घनिष्ठ सम्बन्ध। उन दोनोंका चोली दामन का साथ है।

चौका लगाना—सत्यानाश करना। चार दिन हुए चोरोंने उसके घरमें चौका लगा दिया।

चौथका चांद—भादो सुदी चौथका चांद। जिसे देखनेसे कलंक लगे।

छटा हुआ—धूर्त। उसके चक्करमें मत पड़ना वह छटा हुआ है।

छक्के छूटना—साहस न रहना। छुट्टनलालको देखते ही छज्जूराम-के छक्के छूट गये।

छक्के छुड़ाना—परास्त करना। शिवाजीने अनेक बार मुगलोंके छक्के छुड़ा दिये थे।

छक्के-पञ्जे उड़ाना—आनन्द करना। तुमको किसीके सुख-दुःख-को क्या पड़ी है? तुम तो रात-दिन मित्रोंकी चौकड़ीमें छक्के-पञ्जे ऊड़ाते हो।

छटपटा उठना—व्याकुल होना; घबड़ा जाना। तुम तो साधारण आपत्तिमें ही छटपटा उठते हो।

छठीका दूध याद आना—सब आनन्द भूल जाना; कठिन कष्ट पड़ना। आज बड़ा ही कठिन मुकाबिला था; मैं तो अपनी जानता हूं, मुझे तो छठीका दूध याद आ गया।

छप्परपर रख देना—छोड़ देना। जबसे वह-चाण्डाल-चौकड़ीके पञ्जेमें पड़ा है, उसने पढ़ना-लिखना सब छप्परपर रख दिया है।

छप्पर फाड़ कर देना—बिना परिश्रम किये देना। भगवानकी लीला अद्भुत है, जिसको उसे देना होता है, वह छप्पर फाड़कर देता है।

छातीपर पत्थर रखना—दिलको मजबूत करना। उसने छातीपर पत्थर रखकर, भतीजीका मृत्यु संवाद सुना।

छातीपर सांप लोटना—डाह करना। उसकी उन्नति देखकर तुम्हारी छातीपर सांप लोटने लगता है।

छातीपर मूंग दलना—सामने ही ऐसी बातें कहना या आचरण करना जो बुरा लगे। मेरे सामने ही तुम मेरी छातीपर मूंग दलते हो।

छातीपर मूँग दलना छातीपर कोदों दलना—कष्ट पहुंचाना। जिसको छातीसे लगाकर प्रसन्न होते हो, वही किसी समय तुम्हारी छाती पर मूंग दलेगा।

छातीसे लगाना—प्यार करना। यदि संसारमें उसका कोई होता, तो उसको छातीसे लगाता।

छान डालना, छान मारना—बहुत खोज करना। तमाम बाजार छान डाला, परन्तु इस प्रकारका चाकू नहीं मिलता।

छिपा रुस्तम निकलना—बड़ा दुष्ट सिद्ध होना। तुम तो राघवको बहुत सीधा बतलाते थे; वह तो छिपा रुस्तम निकला।

छुट्टी पाना—मुक्त होना। छुट्टनलालने तो आज परीक्षासे छुट्टी पाई।

छुरीतले दम लेना—दुःखमय जीवन बिताना। हमारे भाग्यमें आनन्द बदा ही नहीं; हम सदा छुरीतले दम लेते हैं।

छुरी तेज करना—सताना, दुःख देना। तुम कहांके भले निकलकर आये; तुम भी गरीबोंकी गरदनपर छुरी तेज करते हो।

छूतक न जाना—लेशमात्र भी न होना। भद्रदत्तको छल छूतक भी नहीं गया है।

छू मन्तर हो जाना—भाग जाना। तुमलोग मुझ अकेलेको बखेड़े-में फंसाकर सब-के-सब छूमन्तर हो गये।

जड़ छोड़ना—जमकर बैठ जाना। तुमसे कहा था कि रामगोपालको साथ लेकर शीघ्र लौटना, पर तुमने वहां जड़ें छोड़ दीं।

जबानपर चढ़ा रहना -खूब याद रहना; कहनेका अभ्यास होना। तुम्हारी जबानपर सदा सबल सिंह ही चढ़ा रहता है।

जबान खींचना—कड़ा दण्ड देना। बकबक करोगे तो जबान खींच लूंगा।

जबानी जमाखर्च करना—बनावटी सहानुभूति दिखाना। यह बात नहीं कि तुम मेरे लिए कुछ करनेको समर्थ नहीं हो, परन्तु तुम तो जबानी जमा-खर्च करते हो।

जबानको लगाम न होना—सभ्यता-पूर्वक न बोलना। जिस आदमीकी जबानको लगाम नहीं है, उसके साथ बातचीत करना मूर्खता है।

जमीनमें गड़ जाना—अत्यन्त लज्जित होना। मैं तो उसकी बातें सुनकर जमीनमें गड़ गया, परन्तु तुम बैठे हंसते रहे।

जमीनपर पाँव न रखना—बहुत अभिमान होना। उसको अच्छी जगह मिल गई है, वह तो जमीनपर पांवही नहीं रखता है।

जमीन-आसमान एक करना—बड़ी खोज करना। तुम्हारे लिये जमीन-आसमान एक कर दिया, पर तुम्हारा कहीं पता न चला।

जल-जलकर भस्म होना—क्रोधावेशमें दुखी होना। शांतिसे बात करो, जल-जलकर भस्म क्यों होते हो ?

जली-भुनी कहना—कठोर शब्द कहना। मै तुमको अच्छी तरह जानता हूं; मेरे विषयमें तुम जब कहोगे जली-भुनी कहोगे।

जलेपर नमक छिड़कना—क्रोधितको उत्तेजित करना। वह शांत भी न होने पाया था कि तुमने जलेपर नमक छिड़क दिया।

जहरका घूंट पीना—क्रोधके आवेगको रोकना। गालियां सुनकर भी जहरका घूंट पीकर रह गया।

जान आना—शक्ति आना। ज्वरने उसका शरीर अत्यन्त दुर्बल कर दिया था; अब कुछ जान आयी है।

जानपर बनना—जान जानेका भय होना। तुमको हंसी सूझ रही है, यहां जानपर बनी हुई है।

जानपर खेलना—जान जोखिममें डालना। तुममें ऐसा एक भी नहीं है, जो उसकी जान बचानेके लिये जानपर खेल जाय।

जान चुराना—बचना। विद्वान् बननेको जी चाहता है और परिश्रमसे जान चुराते हो।

जानसे हाथ धोना—जीवन खोना। जो यमुनापर जान देता है, वह जानसे हाथ-धोता है।

जानके लाले पड़ना—जीवनकी चिन्ता होना। किसका खेल-तमाशा! यहां तो जानके लाले पड़े हुए हैं।

जानमें जान आना—सन्तोष मिलना; धैर्य बंधना। मैं बहुत घबरा रहा था, तुमको देखकर जानमें जान आई है।

जाने दो—माफ करो। जाने भी दो, बेकार झगड़ा बढ़ानेमें क्या रखा है।

जानका गाहक बन जाना—प्राण लेनेपर उतारू हो जाना। जिसको जानसे अधिक जानते थे, वही तुम्हारी जानका गाहक बन गया है।

जामेसे बाहर होना—बहुत अकड़ दिखाना। जानते हैं तुम जान साहबके नौकर हो, इतना जामेसे बाहर क्यों होते हो?

जाल डालना—धोखा देना। हमको मालूम न था कि तुम इस प्रकार जाल डालोगे।

जी अच्छा होना—तबीयत ठीक होना। आज मेरा जी कलसे अच्छा है।

जिसकी छायामें बैठना उसीकी जड़ काटना—हितकारीका अहित करना। तुम जिस वृक्षकी छायामें बैठते हो, उसीकी जड़ काटते हो।

जी खट्टा करना—मन फिरना। उसकी झूठी बातोंसे मेरा मन खट्टा हो गया।

जी उकताना, जी उचट जाना, जी ऊब जाना—मन न लगना। तुम कैसे आदमी हो, तुम्हारा जी ऊबता ही नहीं; सिनेमा देखते-देखते मेरा तो जी उकता गया है।

जी काँपना—डर लगना। तुम्हारे सामने आते हुए उसका जी कांपता है।

जी छोड़ना—हिम्मत हारना। भूतका नाम सुनते ही वह जी छोड़ देता है।

जीका बोझ हलका होना—चिन्तासे छूटना। परीक्षा समाप्त होनेपर मेरे जीका बोझ हलका होगा।

जी पर खेलना—जानको आफतमें डालना। उसने जी पर खेल देश की रक्षा की।

जी टँगा रहना—खटका बना रहना। सरलाका पति परदेशमें है, इसलिये उसका जी टँगा रहता है।

जी खोलकर—बिना हिचके। वह जी खोलकर दान करता है।

जी चुराना—बहाना करना। वह हमेशा जी चुराया करता है।

जूत पड़ना—हानि होना ; घाटा पड़ना। तुम्हारे साथ व्यापार करनेसे उसको यह लाभ हुआ कि सात सौ रुपयेका जूत पड़ा।

जूता चाटना—चापलूसी करना। इसमें क्या कहते हो, साहबके जूते चाटो।

जूतियाँ चटखाते फिरना—निकम्मा फिरना। इस नगरमें अनेक नवयुवक जूतियां चटखाते फिरते हैं।

जैसा देश वैसा वेश बनाना—परिस्थितिके अनुकूल चलना। जो व्यक्ति जैसा देश वैसा वेश बनाता है, वह आज-कल सुखसे रहता है।

जोर डालना—दबाव डालना। साहबपर बहुत जोर डाला तब नौकरी मिली।

झख मारना—व्यर्थ बोलना। यहां बैठे हुए तुम जो एक घण्टेसे झख मार रहे हो, तुम्हें कुछ और काम है या नहीं ?

झड़ी लगा देना—अधिक परिमाण वा संख्यामें उपस्थित करना। आजकी सभामें पण्डित तपोधन शास्त्रीने प्रत्यक्षवादके विरुद्ध युक्तियोंकी झड़ी लगा दी।

झण्डा गाड़ना—अधिकार जमाना। मुगलोंको परास्तकर शिवाजीने सिंह-गढ़पर अपना झण्डा गाड़ दिया।

झाँसा देना—धोखेमें डालना। कल तो अच्छा झांसा दिया; हम दो घण्टेतक तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहे।

झाँसेमें आना—धोखेमें पड़ना। बाबू साहब ! वह बड़ा चालाक है; आप उसके झांसेमें आ गये।

झाड़ पड़ना—डांटा जाना। आज बहुत देर हो गयी है, घर पहुंचनेपर मुझपर अवश्य झाड़ पड़ेगी।

झाड़ू फेरना—नष्ट कर देना। यह तुमने अच्छा नहीं किया जो आशारामकी समस्त आशाओंपर झाड़ू फेर दी।

झूठ-सच कहना—निन्दा करना। तुम मेरे विषयमें सदा झूठ-सच कहते रहते हो।

टकसाल हो जाना—केन्द्र बन जाना। टीकारामका घर तो धूर्तोंकी टकसाल हो गया है।

टकराते फिरना—खोजते फिरना। हम प्रातःकालसे टकराते फिर रहे हैं, कहीं बसका पता नहीं मिला है

टकसाली बोली—सर्वसम्मत भाषा। उमाशङ्करकी भाषा टकसाली होती है।

टकसाली बात कहना—विश्वासनीय बात कहना। रामदेवको लोग इसलिये प्यार करते हैं कि वह टकसाली बात कहता है।

टका पास न होना—पैसा पास न होना। वह माल क्या खरीदेगा, टका पासमें नहीं है।

टकटकी बंधना—निर्निमेष देखना। शकुन्तलाके रूप और लावण्यसे आकृष्ट होकर उसकी ओर दुष्यन्तकी टकटकी बंध गई।

टका-सा जवाब देना—साफ इनकार करना। मैं ऐसे आदमीसे सवाल नहीं करता, जो टका-सा जवाब दे।

टका-सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित रह जाना। बातका जवाब न दे सका टकासा मुंह लेकर रह गया।

टक्कर खाना—हानि उठाना। मनुष्य अनेक बार टक्कर खाता है, तब बुद्धि आती है।

टट्टीकी आड़में शिकार खेलना—छल-कपटसे काम लेना। कौन नहीं जानता कि तुम रात-दिन टट्टीकी आड़में शिकार खेलते हो?

टपक पड़ना—ललचाना। कोई सुन्दर व्यक्ति देखा कि टपक पड़े, फिर भी समझते हो अपनेको ब्रह्मचारी।

टरका देना—खाली टाल देना; कुछ भी न देना। वह तो तुम्हारे पास बड़ी आशासे आया था; तुमने उसे टरका दिया।

टससे मस न होना—बिलकुल प्रभावित न होना; न मानना। आप कितना ही समझायें, वह कदापि टससे मस न होगा।

टरटर करना—व्यर्थ बकवाद करना। क्या हर वक्त टरटर करते रहते हो?

टाँग अड़ाना—बीचमें बोलना; हस्तक्षेप करना। तुम किसीके मामलेमें क्यों टाँग अड़ाते हो?

टाँग पसारकर सोना—सुखसे दिन बिताना। उसे क्या चिन्ता है, वह टाँग पसारकर सोता है।

टाँग तोड़ना—व्यर्थ बोलना। दो घण्टेसे बैठे हुए टाँय-टाँय कर रहे हो, अपना काम क्यों नहीं देखते?

टायँ-टायँ फिस होना—बदनामी होना। मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस मामलेमें तुम्हारी टायँ-टायँ फिस होगी।

टाट उलटना—दिवाला होना। कल उसका टाट उलट गया।

टाल-मटोल करना—बहाना बनाना। तुमको टाल-मटोल करते-करते आज चार मास बीत गये।

टीका-टिप्पणी करना—समालोचना करना। अवकाश मिलनेपर उस वक्तव्यपर टीका-टिप्पणी करूंगा।

टुकड़ा लगाना—आजीविकाका प्रबन्ध हो जाना। परमात्माकी दयासे उसका टुकड़ा लग गया है, इसलिए अब वह निश्चिन्त है।

टुकड़ा तोड़ना—दूसरेके भोजनपर गुजर करना। वह वेनीके यहां टुकड़े तोड़ता है।

टुकड़ा माँगना—भीख मांगना। हट्टे-कट्टे हो टुकड़े मांगते शर्म नहीं आती।

टेढ़ी अँगुलीसे घी निकालना—धूर्त्ततासे काम निकालना। बिना टेढ़ी अंगुलीके उनसे रुपये वसूल न होंगे।

टेढ़ी नजरसे देखना—प्रकुपित दृष्टिसे देखना। असन्तुष्ठ होना। हमसे क्या अपराध हुआ है, जो आप आज टेढ़ी नजरसे देख रहे हैं?

टेढ़ी खीर होना—कठिन काम होना। आपके लड़केका सीधा करना तो टेढ़ी खीर हो गया है।

टोपी उछालना—हर्ष प्रकट करना। यादव! आज क्या मिल गया है जो इस प्रकार टोपी उछाल रहे हो?

ठिकाना करना—आजीविकाका सामान करना। इस प्रकार कबतक बीतेगी? रामनाथ तुम भी अपना ठिकाना करो।

ठिकाना करना—विवाह करना। तुम्हारा कथन सोलह आने ठीक है, परन्तु पैसेके बिना ठिकाना कैसे करूं?

ठिकाने आना—ठीक बात कहना। इतनी देर मत्था-पच्ची करने पर तुम ठिकाने आये।

ठिकाने न रहना—विचलित हो जाना। तुममें सबसे बड़ा दोष यह है कि शास्त्राथ करते समय तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती।

ठोकना बजाना—परखना जांच पड़ताल करना। ठोक बजाकर चीज खरीदना चाहिये।

ठोकरपर ठोकर खाना—दुःखपर दुःख सहना। जब मनुष्यके बुरे दिन होते हैं, वह कठोर ठोकर खाता है।

ठोकर खाते फिरना—मारे-मारे फिरना। कुछ लोग समझते हैं कि पढ़ना-लिखना व्यथ है क्योंकि आज-कल पढ़े-लिखे ठोकर खाते फिरते हैं।

डङ्के की चोट कहना—स्पष्ट कहना; खुल्लम-खुल्ला कहना। मुझे जो कुछ कहना होता है, डङ्के की चोट कहता हूं।

डकार न लेना—हजमकर जाना। सारा माल हजम कर गये और डकार तक न ली।

डट जाना—जम जाना। वीर सिंह शत्रुके सामने वीरतापूर्वक डट जाता है।

डूब मरना—लज्जासे मर जाना। अपमानित जीवनसे डूब मरना अच्छा है।

डींग मारना—मिथ्याभिमान करना। उसका विश्वास कदापि न करना चाहिये वह केवल डींग मारा करता है।

डूबते को तिनकेका सहारा—निराशमें आशा। वह कर्जमें डूबा हुआ था, सौ रुपये मिलनेसे डूबतेको तिनकेका सहारा हो गया।

डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाना—किसीसे मत न मिलना। यहां तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाता है।

डेढ़ ईंटकी मसजिद अलग बनाना—सबसे भिन्न मत रखना। मियां बशीर अहमद सदा अपनी डेढ़ ईंटकी मसजिद अलग ही बनाता है।

डोरी ढीली छोड़ना—देखभाल कम करना। मैंने इधर डोरी ढीली छोड़ दी, उधर वह असावधान हो गया।

ढिढोरा पीटना—जगह-जगह कहते फिरना। इस भेदको और कोई नहीं जानता था, तुमने ही इसका ढिंढोरा पीटा है।

ढाई दिनकी बादशाहत पाना—अल्पकालके लिये अधिकार मिलना। वह बेचारा अभिमान क्या करेगा? उसने कुल ढाई दिनकी तो बादशाहत पाई है।

ढेर कर देना—मार डालना। यदि अधिक तीन-पांच करोगे, तो यहीं ढेर कर दूंगा।

तकदीर लड़ना—भाग्यकी परीक्षा होना अगर तकदीर लड़ गयी तो सौ मिल जायेंगे।

तकदीर फूट जाना—भाग्य प्रबल होना। वह साल भरमें ही लखपती बन गया, तकदीर ऐसे चमकती है।

तकदीर बिगड़ना—भाग्यका प्रतिकूल होना। इतना प्रयत्न करने पर भी यदि सफलता न हुई, तो समझ लेना चाहिये उसकी तकदीर फट गयी है।

तकदीर बनना—भाग्य अनुकूल होना। यदि अहमद हुसेनकी तकदीर न बनती तो उसे भीख मांगनी पढ़ती।

तशरीफ रखना—बैठना। इधर तशरीफ रखिये।

ताकमें रहना—मौका ढूंढ़ते रहना। वह हमेशा धनकी ताकमें रहता है।

ताक लगाना—घातमें रहना। लोमड़ी, जो ताक लगाये बैठी थी, शिकार उठाकर चम्पत हुई।

तानकर सोना—निश्चिन्त रहना। तुमतो तानकर सोते हो, और हमें शोतके कारण रतजगा करना पड़ता है।

तारे गिनना—दुखसे रात काटना। पतिके वियोगमें राधा तारे गिनकर रात काटती है।

तारीख पड़ना—दिन ठहरना। मुकद्दमेकी १५ तारीख पड़ी है।

तिलका ताड़ बनाना—छोटी-सी बातको अधिक बढ़ाना। पलककी झपकमें तिलका ताड़ बना देते हो, क्या यह प्रशंसाकी बात नहीं है?

तिल धरनेको जगह न रहना—बड़ी भीड़ होना। नाट्य-भवनमें कल तिल रखनेकी भी जगह न रही।

तिलाञ्जलि देना—सम्बन्ध-विच्छेद करना; त्यागना। शिवनाथके उपदेशसे जगदीशने अपने पिताको तिलाजंलि दे दी।

तीन-तेरह करना—तितर-बितर करना। घरमें चार व्यक्ति मिल-जुलकर रहते थे, तुम्हारी कर्कशा स्त्रीने तीन-तेरह कर दिये।

तू तू मैं मैं—गाली गलौज। हर घड़ीकी तू तू मैं मैं ठीक नहीं।

तूती बोलना—प्रसिद्ध होना; ख्याति फैलना। हम तो यह देखते हैं कि आजकल हर जगह तुम्हारी ही तूती बोल रही है।

तेलीका बैल—हर वक्त काममें लगा रहनेवाला आदमी। वह तेली-के बैलकी तरह दिन रात काम में लगा रहता है।

तेवर बदल जाना—बेमुरौवत हो जाना। तुम तो उसके प्रेमका बड़ा दम भरते थे; अब तुम्हारे तेवर क्यों बदल गये?

तेवर बिगड़ना—क्रोधित होना। किसीने कुछ कहा, और तुम्हारे तेवर बिगड़े, यह भी कोई अच्छी बात है?

तोता-चश्मी करना—बे-मुरौवत होना। यदि तोतारामने तोता चश्मी की है, तो आश्चर्यकी बात नहीं।

तोतेकी तरह आँखें फेरना—बेवफाई करना। जो व्यक्ति तोतेकी-तरह आंखें फेर लेता है, उसका विश्वास न करना मूर्खता नहीं तो क्या है?

तोतेकी तरह पढ़ना—बिना समझे-बूझे पढ़ना। तुलाराम तोतेकी तरह पढ़ता है, इसीलिए परीक्षामें सफल नहीं होता।

तोर-मोर भूल जाना—उदार बन जाना। प्रेममें पड़कर मनुष्य तोर-मोर भूल ही जाता है।

त्रयताप-पीड़ित होना—सब प्रकारसे दुःखित होना। पण्डित बहु-गुणानन्द आजकल दुर्भाग्यवश त्रय-ताप-पीड़ित हो रहे हैं।

त्राहि त्राहि करना—दयाके लिये पुकारना। जनता त्राहि-त्राहि कर रही है, परन्तु कोई नहीं सुनता।

थालीका बैंगन—किसी भी पक्षमें न रहनेवाला। उसकी बातका विश्वास मत करना वह थालीका बैंगन है।

थाह मिलना—भेद मालूम होना। प्रयत्न करनेपर इस मामलेकी सब थाह मिल जायगी।

थाह लेना—मनका भाव जानना। उससे किसी प्रकारकी आशा न किजिये; मैं उसकी थाह ले चुका हूं।

थूक लगाकर छोड़ना—नीचा दिखाना। थूक लगाकर न छोड़ा तो मेरा नाम नहीं।

थूक कर चाटना—कहकर मुकर जाना; प्रतिज्ञा भंग करना। थूक कर चाटते शर्म नहीं आती?

दंग रह जाना—चकित हो जाना—उसे देखकर मैं दंग रह गया।

दम खाना या लेना—सुस्ताना—जरा दम ले लेने दो अभी चलता हूं।

दम उलटना—मृत्युके समय श्वास उखड़ना। अब बचनेकी आशा नहीं है क्योंकि उसका दम उलट रहा है।

दम फूलना—सांस फूलना—दौड़ते दौड़ते मेरा दम फूल गया।

दम करना—फूंक लगाना। वह साधु पानीपर दम करता और रोगियोंको पिलाता है।

दम खींचना—श्वास रोकना। वह मरा नहीं है; उसने केवल दम खींच रखा है।

दम घोटना—गला दबाकर मारना। उसने दम घोटकर उसका प्राणान्त कर दिया।

दम भरना—दावा करना; अभिमान करना। यदि मेरे सामने उस दुष्टकी मित्रीका दम भरोगे, तो मारते-मारते दम निकाल दूंगा।

दम न मारना—कुछ न कहना ; चुपचाप बैठे रहना। तुम दम तो लो, मैं अभी चलता हूं ; वह मेरी उपस्थितिमें दम न मारेगा।

दम घोट-घोट कर मारना—बहुत दुःख देकर मारना। उसने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम उसको दम घोट-घोटकर मार रहे हो ?

दम तोड़ना—मरना। बीमार दम तोड़ चुका है, और आप डाक्टरको बुलाने जा रहे हैं।

नाकमें दम—परेशान। तुम्हारे मारे मेरी नाकमें दम आगया।

दमपर आ बनना—आपत्तिमें फंसना। किसीके दमपर आ बनी है, और तुमको हंसी सूझ रही है।

दम साधना—श्वास रोकना। वह साधू इस प्रकार दम साधता है कि बिल्कुल मृतक समान बन जाता है।

दममें आना—धोखेमें आना। दोष तुम्हारा ही है जो तुम जान-बूझकर उसके दममें आ गये।

दम देना—चाहना; अत्यन्त प्रिय समझना। और तो और आजकल तो शिवनाथ भी जगदीशपर दम देता है।

दममें दम होना—जीवित रहना। जबतक दममें दम है, उससे बदला लिये बिना न छोड़ूंगा।

दम लेनेकी फुरसत न मिलना—अत्यन्त संलग्न होना। मुझको दम लेनेकी फुरसत नहीं मिलती, वह कहता है कि तुम मेरे विरुद्ध प्रचार करते फिरते हो।

दर दर मारा मारा फिरना—बरी हालतमें घूमना। वह दर दर मारा-मारा फिरता रहा, पर नौकरी न मिली।

दांत किट किटाना—क्रोधित होना। आपका अपराधी हरिमोहन है, आप मुझपर क्यों दांत किटकिटाते हैं।

दाँत खट्टे करना—हराना। मैंने कालीके दांत खट्टे कर दिये।

दाँत तोड़ना—परास्त करना। उसने अच्छे-अच्छोंके दांत तोड़ दिये हैं; तुम्हारे हाथ-पांव तोड़ना क्या कठिन है।

दाँतसे दाँत बजना—कठिन शीत पड़ना। आज तो दांतसे दांत बज रहे हैं; सुरेश! अंगीठीमें कोयला डालो।

दाँत गड़ाना—किसी चीजको लेनेकी प्रबल इच्छा होना। वह मेरे हार पर दांत गड़ाये बैठा है।

दाँव चुकाना—बदला देना। अच्छा, सावधान रहना किसी दिन मैं भी अवश्य दांव चुकाऊंगा।

दाँव चूकना—अवसर खो देना। तुम दांव चूक गये; कल सबके सामने उसकी मरम्मत करनी चाहिए थी।

दाईसे पेट छिपाना—भेदीसे भेद छिपाना। जो बात है साफ कहो, दाईसे पेट क्यों छिपाते हो?

दाना पानी छोड़ना—अन्न जल छोड़ना। उसे दाना पानी छोड़े सात दिन हो गये।

दाल गलना—मतलब निकलना। वहां बड़े मजेमें तुम्हारी दाल गल गयी। मुझे ऐसी उम्मीद न थी।

दाल न गलना—न निभना; वश न चलना। अपनी खिचड़ी अलग पकाओ, यहां तुम्हारी दाल न गलेगी।

दाल रोटीसे खुश—खाने पीनेमें आराम। वह धनी तो नहीं है पर दाल रोटीसे खुश है।

दालमें काला होना—सन्देह होना। मैं पहले ही समझ गया था कि दालमें कुछ काला है।

दाने दानेको तरसना – मोहताज होना। आजकल वह दाने दानेको तरसता है।

दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ना—खूब उन्नति होना। उसकी शठता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।

दिन पूरे करना—किसी तरह गुजर करना। बेचारा किसी तरह दिन पूरे कर रहा है।

दिन दहाड़े—दिनमें— मोटेमलके यहां दिन दहाड़े डाका पड़ा।

दिमाग बिगड़ना—अभिमान होना। वह काले आदमीसे बात नहीं करता, क्योंकि आजकल उसका दिमाग बिगड़ा हुआ है।

दिमाग चाटना-दिमाग खाना—मस्तिष्कको कष्ट देनेवाली व्यर्थ बातें करना। वह जब कभी यहां आता है, मेरा दिमाग चाट जाता है।

दिमाग सतावें आसमान पर होना—अत्यन्त घमण्डी होना। चार पैसे हाथमें हैं, इसलिए उसका दिमाग सतावें आसमानपर है।

दिल मिलना—प्रेम करना। जो तुमसे दिल मिलाता है, तुम उससे आंख भी क्यों नहीं मिलाते?

दिलका गवाही देना—मनका समर्थन प्राप्त होना। इस काममें मेरा दिल गवाही देता है।

दिलमें फफोले पड़ना—दुख होना। उसकी करतूतोंसे मेरे दिलमें फफोले पड़ गये।

दिलकी दिलमें रहना—मनकी मनमें रहना अभीतक उससे मुलाकात न हो सकी और दिलकी दिलमें ही रह गयी।

दिल जमाना—किसी काममें मन लगाना। इसमें मेरा दिल जम गया।

दिल चीरकर देखना—मनका हाल जानना। दिल चीरकर देखलो मैं तुम्हें कितना मानता हूं।

दिल खुलना—संकोच दूर होना, निर्भय होना। पहले तो वह यहां आता हुआ बहुत घबराता था, परन्तु अब उसका दिल खुल गया है।

दिल खिलना—प्रसन्न होना। परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका समाचार सुनते ही उसका दिल खिल गया।

दिवाला निकालना—दिवालिया होना। उसने दिवाला निकाल दिया।

दीपकमें बत्ती पड़ना—सायंकाल होना। कल जिस समय मैं गया दीपकमें बत्ती पड़ चुकी थी।

दिया लेकर ढूंढ़ना—खोजना। गोविन्द जैसा विद्वान् दिया लेकर ढूंढ़नेसे भी नहीं मिलेगा।

दीवारके कान होना—मुहसे निकलते ही प्रकट होने की सम्भावना होना। सुनते हो दीवारके कान होते हैं, इसलिए धीरे-धीरे बातचीत करो।

दूकान लगाना—चीजोंको फैलाकर रखना। तुमने तो आज दूकान लगा रखी है।

दूकान बढ़ाना—दूकान बन्द करना। आपके नौकरके जानेके पूर्व मैं दूकान बढ़ा चुका था।

दुधारू गायकी लात खाना—स्वार्थवश कटु बचन सहना। उसको सहनशील न समझो, वह केवल दुधारू गायकी लात खाता है।

दुखड़ा रोना—दुख सुनाना, दूसरेके आगे अपना दुखड़ा रोनेसे क्या फायदा ?

दुनियासे उठना—मरना। बड़े बड़े लोग दुनियासे उठ गये, परन्तु वह समझता है कि मैं सदा बैठा रहूंगा।

दुनियाकी हवा लगना—प्रपंचोंमें फंसना। जिसको दुनियाकी हवा लग जाती है, उसका ईश्वर-भजनमें मन नहीं लगता।

दुपट्टा तानकर सोना—बेफिक्र सोना। तुम्हें क्या चिन्ता है दुपट्टा तानकर सोते हो।

दुम दबाकर भागना—बहुत तेजीसे भागना। बहुत वीरताकी डींग न मारो, जब जङ्गलमें सिंहको देखोगे, तो दुम दबाकर भागोगे।

दुर-दुर होना—तिरस्कार होना। यदि दुष्कृत्योंसे बाज न आओगे, तो दुनियामें तुम्हारी दुर-दुर होगी।

दुह लेना—धन हर लेना। इन दुष्टोंने दरबारको दुह लिया, फिर भी पेट नहीं भरा।

दूजका चांद होना—कभी-कभी दिखायी देना। सूरज नारायण तो, भाईजी, आजकल दूजका चांद हो गये हैं।

दूधके दांत न टूटना—बाल्यावस्था होना। अभी उसके दूधके दांत भी न टूटे थे कि उसकी माताका देहान्त हो गया।

दूधों नहाना पूतों फलना—सब प्रकारका आनन्द भोगना। ब्राह्मणने प्रसन्न होकर इस प्रकार आशीर्वाद दिया—ईश्वरकी दयासे दूधों नहाओ और पूतों फलो।"

दूनकी लेना या हांकना—डींग मारना। मैं सच कहता हूं वह तुमको एक कौड़ी न देगा; वह केवल दूनकी लेता (हांकता है।)

दूर रहना—अलग रहना। दुष्टोंसे दूर रहना चाहिये।

दूरसे नमस्कार करना—घृणा करना। शास्त्रीजी! मैं ऐसे महात्माओंको दूरसे नमस्कार करता हूं।

देखना सुनना—व्यक्तिगत निरीक्षण करना—तुम्हे उसे खुद देखना सुनना चाहिये।

देखते देखते—फौरन। देखते देखते वह ओझल हो गयी।

देख-भाल कर पाँव उठाना—सावधान होकर कार्यमें पड़ना। जो व्यक्ति देख-भाल कर पांव उठाता है, वह कभी ठोकर नहीं खाता।

दो कौड़ीका हो जाना—अप्रतिष्ठित हो जाना। यदि कोई दो बातें उलटी-सीधी कह बैठा, तो तुम्हारी इज्जत दो कौड़ीकी हो जायगी।

दो दिनका मेहमान—शीघ्र जानेवाला। वह तो दो दिनका मेहमान है।

दो-चार होना—समानता करना। अच्छे-अच्छे विद्वान् उनको सिर झुकाते हैं, तुम उनसे क्या दो-चार होगे?

दो नावोंपर पैर रखना—दो पक्षोंका अवलम्बन करना। दो नावोंपर पैर रखनेवाला अवश्य डूबता है।

दौड़-धूप करना—प्रयत्न करना। बहुत दौड़-धूप कर रहा हूं परन्तु कहींसे भी रुपया नहीं मिल रहा है।

दौरा सुपुर्द होना—सेशन जजके पास भेजना। बमरौली डकैती केस दौरा सुपुर्द कर दिया गया।

द्वितीयाका चाँद होना—कभी-कभी मिलना। चन्दूलाल तो आजकल द्वितीयाका चांद हो गया है।

धक्से होना—अकस्मात् घबरा उठना। तुम बड़े वीर हो, पटाखेकी आवाज़से ही तुम्हारा कलेजा धक्से हो गया।

धक्के चढ़ना—काबूमें आना। किसी दिन मेरे धक्के चढ़ गये, तो तुम्हारी सारी कसर निकालूंगा।

धता बताना—चालाकीसे टाल देना। वह तुम्हारे यहां रोज आकर अड्डा जमाता है, उसको धता क्यों नहीं बताते हो?

धरी जाना न उठाई जाना—कुछ निर्णय न होना। तुम ऐसी बात कहते हो जो धरी जाय न उठाई जाय।

धर्म निभाना—कर्त्तव्य-पालन करना। तुमने तो उसके साथ जैसी की है संसार जानता है, परन्तु वह तुम्हारे साथ अब भी अपना धर्म निभा रहा है।

धाक बांधना, धाक जमाना—प्रभाव जमाना। तुम लोगोंने आजकल धामपुरमें अच्छी धाक बांधी है।

धुन सवार होना—किसी बातके पीछे पड़ना। धीरेन्द्रने पहले हारमोनियम सीखा, अब उसको सितारकी धुन सवार है।

धुनका पक्का—लगनका सच्चा। वह अपनी धुनका पक्का आदमी है, जिस कामको हाथमें लेता है पूरा करता है।

धुर्रें उड़ाना—लज्जित करना। कल सबके सामने तुमने धमन्द्रके ऐसे धुर्रें उड़ाये कि वह वहां खड़ा न रह सका।

धोके की टट्टी—भ्रममें डालनेवाली वस्तु। यह संस्था धोके की टट्टी मालूम पड़ती है।

धोती ढीली होना—डर जाना। तुम ऐसे वीर हो कि जंगलमें गीदड़को देखते ही तुम्हारी धोती ढीली हो गयी।

ध्वजा फहराना—शासन करना। चन्द्रगुप्तने चाणक्यकी सहायता-से कितने ही छोटे-छोटे राज्योंपर विजय प्राप्त कर ध्वजा फहरायी।

न इधरका रहना, न उधरका रहना—किसी तरफ का न होना। वह कुछ निश्चय कर सका, न इधरका रहा न उधरका।

नक्कू बनाना—(बुरे अर्थमें) अग्रसर होना। बुरा हो या भला, तुम हरेक कार्यमें अवश्य नक्कू बनते हो।

नजर लगाना—बुरी नजरका असर पड़ना। हाय मेरे लड़केको नजर लग गयी, वह तीन दिनसे बीमार पड़ा है।

नजरका पाँव फिसलना—दृष्टि न जमना। सुनते हैं उस सुन्दरीके सौन्दर्यपर नजरका पाँव फिसलता है।

नजरमें जँचना—पसन्द आना। यदि यह कम्बल तुम्हारी नजरमें जंच गया हो, तो ले लो; सस्ते-महंगेका विचार न करो।

नजरपर चढ़ना—प्रिय बनना। पहले नन्दराम तुम्हारे दिलसे उतर गया था, अब वह फिर तुम्हारी नजरपर चढ़ गया।

नजर-करना – भेंट करना। यह कीमती अगूंठी आपकी नजर है।

नथने फुलाना—क्रुद्ध होना। यदि कोई कहता है कि जवानीमें तुम्हारा मुह पिचक गया है, तो तुम नथुने क्यों फुलाते हो?

नपी-तुली कहना—बिल्कुल ठीक बात कहना। मानो चाहे न मानो, शंकर कहता है नपी-तुली।

नमक-हलाली करना—स्वामीका हित करमा। तुमको किस बातका अभिमान है? तुमसे अधिक तो कुत्ता नमक-हलाली करता है।

नमक-हरामी करना—स्वामीका अहित करना। वह जहां-कहीं रहता है, नमक-हरामो करता है।

नमक खाना—नौकरी करना। ननकूने तुम्हारा नमक खाया है, इसलिए वह तुम्हारे विरुद्ध कोई काय न करेगा।

नमक-मिरच लगाना—बातको बढ़ाकर कहना। तुम लोग नमक-मिरच क्यों लगाते हो? जो बात है वही कहो।

नमक छिड़कना अधिक कष्ट देना। जब उसका प्रेम-पात्र उसके घावपर नमक छिड़कता है, तो उसको मजा आता है, और तुम्हारे मिरचें लगती हैं।

नमस्कार करना—छोड़ देना। प्यारेलाल आपके उपदेशसे गांजे और मदिराको नमस्कार कर चुका है।

न तीनमें न तेरहमें—जिसकी गिनती न हो। वह क्या चीज है न तीनमें न तेरहमें।

नया गुल खिलना—विचित्र घटना घटित होना। आगे चलकर इस मामलेमें कोई नया गुल खिलेगा।

नस नसमें—सारे बदनमें। उसको बातें सुनकर मेरी नस नसमें आग लग गयी।

नाक काटना—बदनामी करना। भरी सभामें उसकी नाक काटली गयी।

नाकपर मक्खी न बैठने देना—चिड़चिड़ा स्वभाव होना। जो नाकपर मक्खी नहीं बैठने देता है, उसके मुहपर मक्खियां भिनकती हैं।

नाक-भौं चढ़ाना—अप्रसन्न होना। नानकको देखकर तुम सदा नाक-भौं क्यों चढ़ाते हो?

नाक रगड़ना—अधीन होना। जाता है तो जाने दो, वह सौ बार आयगा, और नाक रगड़ेगा।

नाकमें दम करना—तङ्ग करना। उस पाजीने इस गरीब विद्यार्थी-की नाकमें दम कर दिया है।

नाक कटना—अप्रतिष्ठित होना। बड़ी लज्जाको बात है कि तुम्हारे पीठपर होते हुए भी कल चार आदमियोंमें उसकी नाक कट गयी।

नाकों चने चबाना—बहुत तंग करना। क्या मुह बनाते हो, किसी दिन तुम्हें नाकों चने चबाऊंगा।

नाच नचाना—दिक करना। जगदीश! तुमको लज्जा नहीं आती जो साधारण बातोंपर माता-पिताको नाच नचाते हो।

नानी याद आना—घबरा जाना। वह अपने मामासे मिलने जा रहा था; मार्गमें डाकुओंको देखकर नानी याद आ गयी।

नानी मर जाना—लज्जित हो जाना। जब सबके सामने उसके नानाने उसकी पोल खोली, तो उसकी नानी मर गयी।

नाम करना—यश प्राप्त करना। तिलक महाराज नाम कर गये।

नामपर थूकना—बदनाम होना। संसार तुम्हारे नामपर थूकेगा, तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी।

नामका—कहने भरका। वह तो नामका लेखक है।

नाम लेना छोड़ देना—भूल जाना; अरुचि हो जाना। जबसे उसकी आंख फूटी है, उसने हाकीका Hockey नाम लेना छोड़ दिया है।

नाम रखना-नाम धरना—दोष निकालना। दूसरोंका नाम धरते फिरते हो, अपनी त्रुटियों पर कभी ध्यान नहीं देते। धिक्कार है!

नामका भी नहीं—जरा भी नहीं। घरमें नामका भी आटा दाल नहीं है।

नाम चलना—प्रसिद्ध होना। परोपकारके कारण थोड़े ही दिनोंमें उस साधुका नाम चल गया है।

नाम चमकना—यश फैलना—नेहरूजीका नाम चमक रहा है।

नामसे भागना—घृणा करना। जो मेरे नामसे भागता है, वह मेरा काम कैसे करेगा?

नाम कमाना—यश प्राप्त करना। बापने तो कुलको कलंकित ही कर दिया था, परन्तु पुत्रने अच्छा नाम कमाया है।

नाम बदनाम करना—दोष लगाना—व्यर्थमें क्यों किसीका नाम बदनाम करते हो।

नाम होना—प्रसिद्ध होना। उसने वीरताके ऐसे काम किये कि संसारमें उसका नाम हो गया।

नाम लगाना—दोष मढ़ना। झूठमूठ मेरा नाम क्यों लगाते हो?

नाम लेना—स्मरण करना। परमात्माका नाम लो, आड़े समय वही काम आता है।

नाम बिकना—अत्यधिक प्रसिद्ध होना। रामायण हमारे यहांकी अच्छी है, बम्बईका तो सिर्फ नाम बिकता है।

नाम लेवा न रहना—वंश नष्ट होना। उनके मर जानेके उपरान्त, उसका कोई नाम लेवा न रहेगा।

नाम खोना—धब्बा लगाना। तुमने तो बाप-दादाका नाम भी खो दिया है।

नाम जपना—विश्वास करना। छज्जूरामको संसारसे काम ही नहीं, वह तो केवल जगदीशका नाम जपता है।

नाम ही नाम—केवल प्रसिद्ध रह जाना। धन तो चला गया अब नाम ही नाम बाकी है।

निगाहपर चढ़ना—पसन्द आना। कभी कोई तुम्हारी निगाहपर चढ़ता है, तो कभी कोई तुम्हारी नजरसे गिरता है, तुम एक विचित्र जीव हो।

निन्नानवेके फेरमें पड़ना—लालचमें फंसना। लाला लोभीराम निन्नानवेके फेरमें पड़े हैं।

नींद हराम होना—नींद न आना। कर्जके मारे उनकी नींद हराम हो रही है।

नीयत डावांडोल होना या बदलना—नीयत फेल हो जाना। संकल्पमें दृढ़ता न होना। रुपये पैसेके मामलेमें बड़े बड़ेकी नीयत डांवाडोल हो जाती है।

नींव डालना—जड़ जमाना। भारतमें राष्ट्रीय भावोंकी नींव डालनेवाले दादाभाई नौरोजी थे।

नुकताचीनी करना—दोष निकालना। कुछ करके दिखाओ नुक्ता चीनीमें क्या रखा है।

नेपथ्यके नेपथ्यमें ही रहना—प्रकट न होना। तुम तो पढ़-लिख-कर नेपथ्यके नेपथ्यमें ही रह गये।

नोंक-झोंक रहना—छेड़-छाड़ रहना। गालिब और जौकमें सदा नोक-झोंक रहती थी।

नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना। वह आपको देखते ही नौ दो ग्यारह हो गया।

नौबत बजना—खुशीके बाजे बजना। आज उनके यहां नौबत बज रही है।

पंच परमेश्वर—पंच परमेश्वरके समान है। पंच परमेश्वरका किया हुआ फैसला सबको मान्य है

पगड़ी बदलना—मैत्री करना। मैं तुमसे आज पगड़ी तो बदलता हूं, परन्तु यह ध्यान रहे कि कल तुम्हारा मन न बदल जाय।

पगड़ी उछालना—बेइज्जती करना। किसी भले आदमीको पगड़ी उछालना ठीक नहीं।

पगड़ीकी लाज रखना—प्रतिष्ठा बचाना। कल हमारी भद्द होने हीको थी कि आप आ पहुंचे और पगड़ीकी लाज रख ली।

पगड़ीकी लाज गंवाना—बड़प्पन खोना। यदि आप इन धूर्तोंको अपनाएंगे, तो एक दिन अवश्य पगड़ीकी लाज गंवाएंगे।

पट पड़ना—बन्द हो जाना। हड़तालके कारण आज समस्त बाजार पट पड़ा हुआ है।

पट सकना—निभ सकना। वह स्वतन्त्र विचारका व्यक्ति है, मुझे आशा नहीं कि तुम्हारी उससे पट सकेगी।

पटरा कर देना—बड़ी हानि पहुंचाना। इस बार अनावृष्टिने किसानोंका पटरा कर दिया है।

पटरा हो जाना—बहुत नुकसान पहुंचना। गत वर्ष नीलके व्यवसायमें नीलमणि शर्माका पटरा हो गया।

पट्टी पढ़ाना—बहकाना। उमरावने जगदीशको ऐसो पट्टी पढ़ायो है कि वह घरका रहा न घाटका।

पनपने न देना—अच्छा न होने देना। तुमको रोग ही ऐसा लगा है कि जो तुमको कभी पनपने न देगा।

पत्थरकी लकीर बन जाना—अमिट हो जाना। हमारी बातोंको हँसीमें न उड़ाया करो; हम जो कुछ कह देते हैं, पत्थरकी लकीर बन जाती है।

पत्थरका कलेजा (छाती) करना—दृढ़ता धारण करना। अब तुम दिल खोलकर अत्याचार करो, क्योंकि हमने पत्थरका कलेजा कर लिया है।

पर लगना—चालाक होना। रामकिशोर जिस समय यहां आया था, बड़ा भोला-भाला था, परन्तु अब तो उसके पर लग गये हैं।

परछाँईसे भागना—पास न फटकना। कैसे विचित्र व्यक्ति हो! जो तुम्हारी परछांईसे भागता है, तुम उसपर जान देते हो।

परछाँई न पड़ना—कुछ प्रभाव न पड़ना। रामलाल! क्या कारण है कि, तुम्हारे पिताके आचरणकी तुमपर परछांई भी न पड़ी?

परछाँईसे डरना—साथ रहनेमें डरना—मैं बुरे आदमियों की परछाँईसे डरता हूं।

परदा फाश होना—भेद खुलना। वह नहीं जानता था कि, यहां मेरा परदा फाश होगा और लज्जित होना पड़ेगा।

परदा फाश करना—भेद खोलना। यदि तुम चाहो, तो उसका परदा फाश कर सकते हो।

परदा डालना—किसी बातको प्रगट न होने देना। बुराइयों पर परदा पड़ा रहे यही अच्छा है।

पलस्तर ढीले होना—अत्यन्त क्लान्त होना। आज तो ऐसी कठिन यात्रा करनी पड़ी कि पलस्तर ढीले हो गये।

पल्ला पसारना—मांगना। तुम सेठ हो तो अपने घरके हो; जिस दिन तुम्हारे सामने पल्ला पसारूंगा, उस दिन न देना।

पल्ला छुड़ाना—छुटकारा पाना। कल फिर सेवामें उपस्थित होऊंगा, ऐसा कहकर पण्डितजीसे पल्ला छुड़ाया।

पलंग तोड़ना—निठल्ला बैठे रहना। कुछ काम धाम तो है नहीं, बैठा पलंग तोड़ा करता है।

पलक लगना—नींद आना। मेरी पलक लगी ही थी कि इतनेमें किसीने द्वारपर आवाज दी।

पलथन निकालना—बुरी गति करना। पुलिसने उसे मार मारकर बेचारेका पलथन निकाल दिया।

पलकोंपर बैठाना—अधिक सम्मान करना। एक दिन वह भी था कि, तुम उसको पलकोंपर बठाते थे, और अब उसको देखते ही तेवर चढ़ा लेते हो।

पसीना-पसीना होजाना—अधिक घबरा उठना। जंगली हाथीको देखकर यादव पसीना पसीना हो गया।

पहाड़ टूटना—आपत्ति आना। भिखारीने दुखी होकर कहा—परमात्मा करे तुमपर शीघ्र पहाड़ टूटे।

पल्ला भारी होना—पक्ष सबल होना। कांग्रेसका समर्थन मिलनेके कारण उसका पल्ला भारी हो गया।

पल्ला छुड़ाना—पिण्ड छुड़ाना-बड़ी मुश्किलसे उससे पल्ला छुड़ाकर आ रहा हूं।

पर्वतसे राई कर देना—बड़ेको छोटा बनाना। ईश्वरकी लीला बड़ी विचित्र है; वह एक पलमें पर्वतसे राई कर देता है।

पांचों (अंगुलियां) घीमें—खूब लाभ होना। आजकल उसकी पांचों अंगुलियां घीमें हैं।

पाँव फैलाना—हठ करना। गाड़ी द्वारपर न लाओ, क्योंकि उसको देखकर साथ चलनेके लिए बच्चे पाँव फैलायेंगे।

पाँव उखड़ना—हार कर भागना। मित्र-मण्डलके सैनिकोंने आजकी लड़ाईमें वह वीरता दिखायी कि शत्रुओंके पांव उखड़ गये।

पाँव भारी होना—गर्भवती होना। आजकल उस स्त्रीका पांव भारी है, इस लिए उससे अधिक काम-काज नहीं होता।

पांव धरतीपर न टिकाना—गर्व करना। लाख पचास हजार कमाकर ही इतना घमण्ड हो गया कि अब उसके पैर धरतीपर नहीं टिकते।

पाँव तलेकी जमीन खिसक जाना—घबरा उठना, हक्काबक्का रह जाना। परीक्षा-भवन खाला जीका घर नहीं है; जब प्रश्न-पत्र हाथमें आता है, पांव तलेकी जमीन खसक जाती है।

पांवमें बेड़ी पड़ना—बंधनमें पड़ जाना। वह कहता है, व्याह करते ही पांवोंमें बेड़ी पड़ जायगी, अभी तो मौज है।

पासा पलटना—भाग्य बदलना। पुरुषार्थ न छोड़ो कभी न कभी तो तुम्हारा पासा पलटेगा।

पांचों अँगुलियाँ बराबर न होना—सब एक समान न होना।

यदि यादवने तुम्हें धोका दिया है, तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि मैं भी ऐसा ही करूंगा; पांचों अँगुलियां बराबर नहीं होतीं।

पानी-पानी होना—लज्जित होना। तुम इतने आग बबूला क्यों हुए जो बादमें पानी-पानी होना पड़ा?

पानी पी-पी कर कोसना—उठते-बैठते अनिष्ट चिन्तन करना। वह पापी हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ा हुआ है; इसीलिए मैं उसको पानी पी-पी कर कोसता हूं।

पानी फेरना—मिटा देना। जमना दास! कसम है गङ्गा माईकी, तुमने सब किये-करायेपर पानी फेर दिया।

पानी फिरना—नष्ट होना। आज आशारामकी समस्त आशा-ओंपर पानी फिर गया।

पानी लगना—पानी अनुकूल न होना। तुमको इस जगहका पानी लगता है; इसलिए तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

पानीमें आग लगाना—झगड़ा करा देना। तुम जहां कहीं रहते हो, पानीमें आग लगाते हो।

पानीका बुलबुला—शीघ्र नष्ट होनेवाला। जीवन पानीका बुल-बुला है, इसपर इतराना अच्छा नहीं।

पानीके मोल बिकना—बहुत सस्ता बिकना। दस-बीस दिनके उपरान्त आम पानीके मोल बिकेंगे।

पानी-पानी हो जाना—सुगम हो जाना। अनवरत अभ्यासके आगे कठिनसे कठिन कार्य भी पानी पानी हो जाता है।

पानी लगना—नयी जगहके जलके प्रभावसे स्वास्थ्य बिगड़ना। उसे बम्बईका पानी लग गया।

पानीकी भाँति बहाना—अपव्यय करना। सब धन पानीकी भांति बहा दिया; अब जूतियां चट खाते फिरो।

पाप करना—झगड़ा मिटाना। यदि स्वास्थ्य ठीक रहता, तोमैं कभीका इसका पाप काट देता।

पाप मोल लेना—जान बूझकर झंझटमें फंसना। पाप मोल लिया तो इसका फल भोगो।

पापड़ बेलना—कठिन आपत्ति सहना। विमलाका विवाह तुमने ऐसी जगह किया है कि बेचारीको यावज्जीवन पापड़ बेलने पड़ेंगे।

पार उतार देना—कार्य पूरा कर देना; उद्धार करना। ईश्वरकी गति विचित्र है; एकको पार उतार देता है, तो दूसरेको मझधारमें छोड़ देता है।

पार पाना—भेद जानना। ईश्वरकी लीला अपार है; फिर कोई उसका पार कैसे पाए।

पार पाना—जीतना; विजय पाना। तुम उस दुष्टसे पार नहीं पा सकते।

पार लगाना—पूरा करना भगवान तुम्हारा बेड़ा पार लगायगा।

पारा-पारा होना—व्यग्र होना। मियां आजाद उस परीके विरहमें पारा-पारा हो रहे हैं।

पाला पड़ना—वास्ता पड़ना; सम्पर्क होना। ऐसे पापीसे पाला पड़ा है कि मैं सब प्रकारसे तंग हो गया हूं।

पिण्ड छूटना—छुटकारा मिलना। एक रोगसे पिण्ड छूटा न था, दूसरा उपस्थित हो गया।

पिण्ड छूटना—पीछा छूटना। क्लर्क को दो रुपये दिये तब पिण्ड छूटा।

पीछा छुड़ाना—छुटकारा पाना। पिछला किराया देकर लालासे पीछा छुड़ाओ और आगेके लिए सावधान रहो।

पीछे पड़ना – तंग करना। तुम जिसके पीछे पड़ते हो, उसकी मिट्टी पलीद करके छोड़ते हो।

पीठपर हाथ होना– सहायक होना। मै जानता हूं उसकी पीठपर तुम्हारा हाथ था।

पीठ ठोकना— साहस बांधना। लोगोंने उसकी बहुत पीठ ठोकी, तथापि वह पीठ दिखाकर ही भागा।

पीठ दिखाना—कायर बनकर भागना। वीरसिंह ! तुम वीर हो, वीर पुरुष रण-भूमिमें कहीं पीठ दिखाते हैं ?

पीठपर— एक ही मा की एक बाद दूसरी सन्तान। ये बड़ी बहन हैं और ये पीठ परकी हैं।

पीठ-पीछे बुरा कहना—अनुपस्थितिमें बुराई करना। किसीको पीठ-पीछे बुरा क्यों कहते हो ? यह भले आदमियोंका काम नहीं है।

पीस डालना—नष्ट कर देना। कल्याणदत्तको काल-चक्रने इस बार बिल्कुल पीस डाला है।

पुराना खुर्रांट—अनुभवी, बूढ़ा। दलालोंमें वेणीबाबू पुराने खुर्रांट हैं।

पुल बांधना— किसी बातको खूब बढ़ाकर कहना। तुमने तो उसकी प्रशंसाका पुल बांध दिया।

पेचमें पड़ना — आपत्तिमें फंसना। तुम जान-बूझकर पेचमें पड़ते हो और हमको दोष देते हो।

पेटमें दाढ़ी होना– बहुत चालाक होना। बाबूजी मोहनको भोला-भाला न समझिये; उसके पेटमें दाढ़ी है।

पेटमें घुसना—भेद निकालना। मैं खूब जानता हूं तुम जिस प्रकार आदमीके पेटमें घुसते हो।

पेट काटना—भूखों मारना। उधर तुम्हारे घरवाले अपना पेट काटते हैं, और तुमको रुपया भेजते हैं, इधर तुम्हारा यह हाल कि पढ़ने-लिखनेका नाम नहीं लेते।

पेटमें बात न खपना या पचना—बातको गुप्त न रख सकना। तुमसे कोई अपना भेद क्या कहे? तुम्हारे पेटमें बात ही नहीं खपती, पचती।

पेटका पानी न पचना—न रह सकना। यादवके साथ भ्रमण किये बिना मोहनके पेटका पानी नहीं पचता।

पेटमें चूहे दौड़ना—भूख लगना। तुमने अभी चूल्हा भी नहीं जलाया, यहां पेटमें चूहे दौड़ रहे हैं।

पैंतरे बदलना—चाल चलना। कल तो तुमने ऐसे पैंतरे बदले कि तुम्हारे शत्रुओंके छक्के छूट गये।

पैरों तलेसे जमीन खिसकना—होशहवास गुम होना। भाईके मरनेका समाचार सुनकर उसके पैरों तलेसे जमीन खिसक गयी।

पैर उखड़ जाना—घबड़ा जाना। आरम्भमें ही तुम्हारे पैर उखड़ जाते हैं, तुम अन्ततक कैसे डट सकते हो?

पैर जमाना—अधिकार करना। मुसलमानोंके पांव उखड़नेपर अंगरेजोंने भारतमें पैर जमाया।

पैर उखड़ना—हारकर भाग जाना। हमारी सेनाने वह हाथ दिखाये कि शत्रुओंके पैर उखड़ गये।

पोल खोलना—छिपी बुराइयां प्रकट करना। जिस दिनसे तुमने उसकी पोल खोली है, कोई भी उसका आदर नहीं करता।

पौ फटना—प्रातःकालका प्रकाश होना। जिस समय पौ फटती है, वह भ्रमणके लिए निकल जाता है।

पौ बारह होना— खूब लाभ होना। आजकल तो तुम्हारे पौ बारह हैं।

पौने सोलह आना—पूर्णतामें कुछ कसर रहना - मेरी बात पौने सोलह आना ठीक समझिये।

प्याजके छिलके उतारना—रहस्य प्रकट करना। क्या तुम अपनी धूर्ततासे तब बाज आओगे, जब मैं प्याजके छिलके उतारूंगा।

प्राण खाना—तंग करना। चुप भी रहो, क्यों प्राण खाते हो?

प्राण निकलना—मरना। इतना तो करना स्वामी जब प्राण तनसे निकले।

प्राण हरना— मार डालना। उसने डाकूके प्राण हर लिये।

प्राण-दान देना—जान बचाना। वह यावज्जीवन आपकी प्राण-पनसे सेवा करेगा क्योंकि आपने उसको प्राण-दान दिया है।

प्राणोंसे हाथ धोना— मर जाना। शिकारमें बहुतसे अपने प्राणोंसे भी हाथ धो बैठते हैं।

प्राणोंको मुट्ठीमें लेना—जानको जोखिममें डालना। रात्रिके बारह बजे थे, साथ चलनेको कोई प्रस्तुत न था, इसलिए प्राणोंको मुट्ठीमें लेकर मैं अकेला ही चल पड़ा।

प्राणोंमें प्राण आना—चित्त ठिकाने आना। शामको लड़केका पता चला तब प्राणोंमें प्राण आये।

फट पड़ना—किसी वस्तुका अधिक परिमाणमें होना। इस वर्ष न जाने कहांसे इतने अमरूद फट पड़े हैं।

फड़क उठना— प्रसन्न हो जाना। परीक्षामें सफल होनेका समाचार सुनते ही प्रत्येक विद्यार्थी फड़क उठता है।

फन्देमें पड़ना—फरेबमें फंसना। वह बड़ा बदमाश है उसके फन्देमें मत पड़ना।

फफोले फोड़ना (दिलके)—दिलका गुबार निकालना। आज तो खूब दिल खोलकर तुमने दिलके फफोले फोड़े हैं।

फल-पाना—बदला मिलना। अब वह अपने बुरे कर्मोंका फल पा रहा है।

फलना फूलना—मनोरथ पूर्ण होना। भगवानकी दयासे वह खूब फल फूल रहा है।

फबतियां उड़ाना—हंसी करना। तुम लोग सदा महाशय फतेह-चन्दकी फबतियां क्यों उड़ाया करते हो।

फाग खेलना—प्रसन्नता मनाना; आनन्द मनाना। तुमको किसी-के मरने-जीनेसे प्रयोजन; तुम होली मनाओ, फाग खेलो।

फूँक-फूँककर पांव (कदम) रखना—बहुत बिचार पूर्वक रहना। वह बहुत फूंक-फूंककर, पांव रखता है फिर भी कोई न कोई आपत्ति आ ही पड़ती है।

फांड़ बांधना—मुस्तैद होना। मुझसे कुश्ती लड़ना हो तो पहले फाड़बांध लो।

फाके पड़ना—भूखों मरना। यहाँ तो कई दिनोंसे फाकें पड़ रहे हैं।

फूँक डालना—नष्ट कर देना। तुमने उसके पीछे अपना सब धन फूंक डाला, तिसपर भी वह तुम्हारा न हुआ।

फूटी आंखों न भाना—बिल्कुल अच्छा न लगना। उसका यहां रहना तुमको फूटी आंखों न भाया।

फूटी आंखों न देख सकना—बहुत बुरा लगना। मैं उसे फूटी आंखोंसे भी नहीं देखना चाहती।

फूलसा कोमल—सुकुमार। देखो, वह डायन फूलसे लड़केको कैसे मार रही है।

फूला न समाना—अत्यन्त प्रसन्न होना। ईनाम पानेकी खबर सुनकर वह फूला न समाया।

फूल जाना—प्रसन्न होना। वह तीस रुपयेकी जगहपर नियुक्तिका समाचार सुनते ही फूल गया।

फेरमें आना—धोखेमें पड़ना। मैंने तुमसे कह दिया था कि वह बड़ा चालाक है फिर भी तुम उसके फेरमें आ गये।

फेरे पड़ना—विवाह होना। जिस स्त्रीके साथ जगदीशके फेरे पड़े थे, उसको उसने छोड़ दिया।

बगलें बजाना—हर्ष प्रकट करना। बड़ी लज्जाकी बात है कि वाम-देवका हाथ टूटनेपर तुम बगलें बजाते हो।

बगलें झाँकना—निरुत्तर होना। जब मैंने उसका कच्चा चिट्ठा खोला, तो वह बगलें झांकने लगा।

बगुला भगत होना कपट-वेश धारण करना। आजकल पण्डित बकेश्वर भी बगुला भगत हो रहे हैं।

बछियाका ताऊ—मूर्ख। तुम तो निरे बछियाके ताऊ हो।

बट्टे खातेमें—प्राप्त न हो सकनेकी हालतमें। इस रकमको बट्टे खातेमें डाल दो।

बट्टा लगना—कलङ्कित होना। तुम्हारे दुष्कृत्योंसे केवल तुमको ही नहीं वरन् तुम्हारे पूर्वजोंके नामको बट्टा लगेगा।

बड़ी बड़ी बातें करना—डींग मारना। मैं सब जानता हूं; बड़ी बड़ी बातें करनेमें क्या रखा है।

बच्चोंका खेल—सहज। महावीरसे कुश्ती लड़ना बच्चोंका खेल नहीं है।

बड़े घरकी हवा खाना—जेल जाना। यदि चोरी करना न छोड़ोगे, तो किसी-न-किसी दिन अवश्य बड़े घरकी हवा खाओगे।

बढ़-बढ़कर बातें करना—अभिमान दिखाना। बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न करो; मै तुम्हारे समस्त कुटम्बको जानता हूं।

बना-बनाया खेल बिगड़ना—पूरा हुआ काम बिगड़ना। अवसर पर असावधान होनेसे हमारा बनाबनाया खेल बिगड़ गया।

बन्दर घुड़की—बनावटी भय दिखाना। तुम उससे कदापि न घबराना; वह बहुधा बन्दर घुड़की देता है।

बरस पड़ना—क्रोधके आवेशमें बुरा-भला कहना। कल वह तुम्हारे आनेके पूर्व मुझपर गरज रहा था; जब तुमने आकर कुछ कहा तो तुमपर बरस पड़ा।

बराबर करना—समाप्त करना। मोहनने बापकी कमाई थोड़े दिनोंमें बराबर कर दी।

बलि चढ़ना—अपना बलिदान चढ़ाना। इस अन्दोलनमें अनेक आदमी बलि चढ़ गये।

बहती गङ्गामें हाथ धोना—अच्छी स्थितिमें शुभ कार्य करना। यमुनादास! अच्छा अवसर है, बहती गंगामें हाथ धोलो।

बहरा बनना—सुनना न चाहना। मैं कभी तुम्हारे विषयमें कुछ कहता भी हूं, तो वह बहरा बन जाता है।

बाँसपर चढ़ाना—बदनाम करना। ये लोग तुम्हें बाँसपर चढ़ायेंगे और संसारको तमाशा दिखायेंगे।

बाँसों उछलना—अति प्रसन्न होना। किसीको बांसपर चढ़ाकर वे लोग बांसों उछलते हैं।

बाँह पकड़ना—आश्रय देना। पण्डित बालकरामने उस अनाथ बालककी बांह पकड़ ली है।

बाँयें हाथका खेल—बहुत आसान। कहानी लिखना मेरे बांयें हाथका खेल है।

बाग-बाग होना—अधिक प्रसन्न होना। इस बागमें आते ही दिल बाग-बाग हो जाता है।

बाछें खिल जाना—प्रसन्न होना। बहुत दिनोंसे उसका काम बन्द पड़ा था आज सौ रुपयेकी जगह मिलनेसे उसकी बाछें खिल गयीं।

बजार गर्म होना—किसी वस्तुकी वृद्धि होना। आज-कल संसार-में असत्यका बाजार गर्म है।

बाजार ठण्डा होना—मांग न रहना। क्या बात है कि इस वर्ष तुम्हारा बाजार ठण्डा हो गया है।

बाजी मारना—सफल होना; कार्य सिद्ध होना। इस बार उसने डटकर ऐसा परिश्रम किया कि बाजी मार ली।

बातका बतंगड़ करना—जरासी बातको बढ़ाना। बातका बतंगड़ करनेमें सिवा नुकसानके फायदा नहीं है।

बात बातमें—थोड़ा सा भी कुछ होनेपर। वह बात बातमें झगड़ा करता है।

बात पी जाना—सुनकर चुप रहना। वह स्वभावका बड़ा क्रोधी है, पर न जाने आज कैसे बात पी गया।

बात की बातमें—शीघ्र। मोहनने सोहनको बातकी बातमें पछाड़ दिया।

बात न पूछना—कद्र न करना। वह तो तुम्हारी बात भी नहीं पूछता।

बातमें बात पैदा करना—अधिक छान-बीन करना। वह तुमसे बात करता हुआ इसलिए घबराता है कि तुम बातमें बात पैदा करते हो।

बातमें आना—कहनेमें आना। उसकी बातोंमें मत आना, वह अच्छा आदमी नहीं है।

बात पक्की होना—निश्चय होना। आप सोमवारको चले आइये; सब बात पक्की हो गयी है।

बात बढ़ना—तकरार होना। बात बढ़ गयी और मार पीटकी नौबत आ गयी।

बातोंपर न जाना—विश्वास न करना। यह बात और है कि वह प्रति दिन मेरे पास आता है, परन्तु मैं कभी उसकी बातोंपर नहीं जाता।

बानगी दिखाना—गुण प्रकट करना। बहुत दिनोंसे तुम्हारे गानेकी प्रशंसा सुनते हैं, आज तो अपनी बानगी दिखाओ।

बालकी खाल निकालना—गहरी विवेचना करना; बड़ी छान-बीन करना। मैं तो समझ गया, परन्तु उसको कैसे समझाऊँगा; वह बालकी खाल निकालता है।

बालकी खाल निकालना—व्यर्थ नुक्ताचीनी करना। क्यों बालकी खाल खींचते हो ?

बाल बाँका करना—हानि पहुंचाना। तुम बांकेलालका बाल बांका नहीं कर सकते हो।

बाल-बाल बचना—साफ बचना, हानि पहुंचनेमें थोड़ी ही कसर रहना। (अ) उसकी चिन्ता न करो, वह बाल-बाल बच गया है। मार्ग-में बड़ा भयंकर सांप पड़ा था; मैं बाल-बाल बच गया।

बालूकी भींत—अविश्वसनीय। परदेशीकी प्रीत बालुकी भींत।

बाल सफेद होना—वृद्ध होना। चेहरेपर झुरियां पड़ गयीं, बाल सफेद हो गये, अब उससे अधिक परिश्रम नहीं हो सकता।

बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल ठीक। मेरी बात बावन तोले पाव रत्ती है।

बिगड़ जाना—निधन हो जाना। जुवेके खेलमें बड़े-बड़े घर बिगड़ जाते है।

बीड़ा उठाना—दृढ़ संकल्प करना। सुनते हैं उसने हमारे विनाशका बीड़ा उठाया है।

बुखार निकालना—शत्रुतावश किसीको बुरा-भला कहना। सुनते हैं आज तुमने भी खूब बुखार निकाला है।

बुत बनके बैठना—कुछ न करना। तुम तो बुत बनके बैठ जाते हो, सब कुछ मुझे ही करना पड़ता है।

बेगार टालना—मन लगाकर कार्य न करना। अनेक साधारण अशुद्धियोंका होना बतलाता है कि तुम बेगार टाल रहे हो।

बेपेंदीका लोटा—अस्थिर। उसका विश्वास मत करना वह बेपेंदीका लोटा है, न जाने किधर लुढ़क जाय।

बे-परकी उड़ाना—निराधार बात कहना। उसका विश्वास न कीजिये; वह सदा बे-परको उड़ाता है।

बैठ बिठाये—बिना वजह। बैठे बिठाये झगड़ा मोल क्यों लेते हो ?

बोझ उठाना—सख्त कामकी जिम्मेवारी लेना। इस कामका बोझ तुम्ही उठा सकते हो !

बोल बाला होना—विजयी होना, मार्यादा बढ़ना। आजकल संसारमें नीचोंका बोलबाला हो रहा है।

बोली बोलना—व्यंग करना। क्यों बेचारी पर बोली बोलते हो?

भन्ना उठना—उत्तेजित हो जाना। उससे छेड़-छाड़ न किया करो, वह जरासी बातपर भन्ना उठता है।

भाड़ेका टट्टू—किरायेका। अजी तुमतो भाड़के टट्टू हो, तुम्हारा विश्वास हो क्या?

भाव गिरना—मूल्य घट जाना; सस्ता होना। लालाजी! गेहूंका भाव गिर गया है और आप अब भी करारे टके उठा रहे हैं।

भाव चढ़ना—मूल्य बढ़ जाना; महंगा होना। समयपर वृष्टि न होनेके कारण चनेका भाव चढ़ गया।

भीगी बिल्ली बन जाना—भयसे दब जाना। वह आपके सामने भीगी बिल्ली बन जाता है और बादमें गुर्राने लगता है।

भीतर ही भीतर—मन ही मन। कुछ कहिये! भीतर ही भीतर क्या सोच रहे हैं?

भीष्म प्रतिज्ञा करना—कठिन प्रतिज्ञा करना। चाणक्यने अपमानित होकर नन्द वंशका नाश करनेकी भीष्म-प्रतिज्ञा की थी।

भुरकुस निकालना—खूब मार मारना। मारते मारते चोरका भुरकुस निकाल दिया।

भेड़िया-धसान (मचना)—बिना विचारे अनुसरण करना। बुद्धि सागर! भारतमें आज भेड़िया-धसान मचा हुआ है।

मक्खी चूस—कंजूस। मेरे नानाजी मक्खी चूस हैं।

मंत्र-मुग्ध होना—चकित होना। शकुन्तलाको देखकर दुष्यन्त मन्त्र-मुग्ध हो गया।

मक्खी मारना—निठल्ला बैठना। मक्खनलाल आजकल घरपर मक्खी मारता और पिताकी गालियां खाता है।

मगज चाटना—बक बक करना। क्यों मगज चाट रहे हो?

मजा किरकिरा होना—आनन्दमें विघ्न पड़ना। पानी बरसनेसे जुलूसका मजा किर किरा हो गया।

मजा चखाना—दण्ड देना; बदला लेना। अवकाश मिलनेपर किसी दिन उसको शत्रुताका ऐसा मजा चखाऊँगा कि वह याद रखेगा।

मन रखना—सान्त्वना देना। कौन किसीके लिए कष्ट उठाता है? उसने केवल तुम्हारा मन रख दिया है।

मन-मारे बैठना—उदास होना। मोहन! क्या कारण है जो आज मन मारे बैठे हो?

मर मिटना—किसी कार्यमें अत्यधिक कष्ट उठाना, बरबाद होना। वह जिस काममें लग जाता है, मर मिटता है।

मरनेतकका अवकाश न मिलना—अत्यन्त संलग्न होना। जीवनरामका आजकल मरने तकका अवकाश नहीं मिलता।

मरम्मत करना—पीटना। भागते क्यों हो? ठहरो, मैं अभी तुम्हारी मरम्मत करता हूं।

मल्हार गाना—आनन्द करना। घबराओ नहीं; परमात्माकी दयासे वे दिन भी आयेंगे जब तुम भी मल्हार गाओगे।

माया जालमें फँसना—धोकेमें पड़ना। पंडित मायाराम तो माया जालमें फंस गये हैं।

माथा ठनकना—सन्देह होना; अनिष्टका भय प्रतीत होना। उसको देखते ही मेरा माथा ठनका था कि; आज कुछ गड़बड़ है और वैसा ही हुआ।

माथा रगड़ना—विनय करना। उसके सामने घण्टों माथा रगड़ा, परन्तु कुछ फल न निकला।

माथेपर बल डालना—खिन्न होना। साधारणसो बातके लिये आप माथेपर बल क्यों डालते हैं।

मारा मारा फिरना—बुरी दशामें फिरना। कुछ काम तो है नहीं, मारामारा फिरता है।

मार-मार कर वैद्य बनाना—जबरदस्ती योग्य बनाना। मैं कब कहता हूं कि मैं योग्य हूं? मुझे तो मार-मार कर वैद्य बनाया जा रहा है।

मारा जाना—अत्यधिक हानि पहुंचना। अन्नके व्यापारमें इस वर्ष कितने ही व्यापारी मारे गये।

माल उड़ाना—धन फूंकना। वह अपना माल उड़ाता है तुम्हारा क्या है?

मिजाज न मिलना—अधिक घमण्ड होना। प्रथम तो वह मिलता ही बहुत कम है; यदि कभी मिल भी जाता है, तो उसका मिजाज नहीं मिलता है।

मिट्टीमें मिल जाना-मिट्टी हो जाना—नष्ट हो जाना। जुएको बदौलत उसकी सम्पत्ति मिट्टीमें मिल गयी।

मिट्टी पलीद होना—दुर्दशा होना। भारतमें आजकल खोडरीकी मिट्टी पलीद हो रही है।

मिट्टी खराब होना—अपमानित होना। चले जाओ; मैं तुमको रोकना नहीं चाहता; परन्तु यह बतलाये देता हूं कि वहां तुम्हारी मिट्टी खराब होगी।

मुंह खराब करना—गाली बकना। क्यों अपना मुंह खराब करते हो?

मुंह मांगी मौत भी न मिलना—मनचाहा कुछ भी न होना। यदि देना चाहो तो ठीक दाम बोलो, मुंह मांगी तो मौत भी नहीं मिलती।

मुह मोड़ना—छोड़ देना। तुमसे कुछ आशा थी कि इस आड़े समयपर सहायता करोगे, तुमने भी हमसे मुह मोड़ लिया है।

मुह फूँक देना—कुछ दे देना। कुछ मिलने तो दो, उसका भी मुह फूंक देंगे।

मुह देखेकी मुहब्बत होना—झूठा प्रेम दिखाना। जिसका तुमको इतना अभिमान है, वह केवल मुह देखेकी मुहब्बत है।

यों तो मुह देखेकी होती है मुहब्बत सबको।
मैं तो जब जानूं मेरे बाद मेरा ध्यान रहे॥

मुह देखकर जीना—अत्यन्त प्रेम करना। वह तुम्हारा मुह देखकर जीता है, तुम कहते हो वह मुझपर मरता है, यह क्या बात है?

मुहपर बसन्त फूलना—प्रसन्न-वदन होना। उन्हें कुछ बसन्तकी खबर भी है? वह देखो, उसके मुहपर बसन्त फूल रहा है।

मुह लाल करना—बहुत पीटना। यदि आंखें नीली-पीली करोगे, तो तुम्हारा मुह लाल कर दूंगा।

मुह चाटना—खुशामद करना। मुह चाटनेसे नौकरी नहीं मिलती।

मुह फुलाना—असन्तुष्ट होना। यह चिड़चिड़े स्वभावका आदमी है; जरासी बातके लिये मुह फुला लेता है।

मुह चढ़ना—क्रोधित होना। मेरी और तुम्हारी कैसे निभ सकती है? जरा सी बातपर तुम्हारा मुह चढ़ जाता है।

मुह चढ़ना—अधिक परिचित होना। वह कोतवालके मुह चढ़ा हुआ है, इसीलिए किसीको कुछ नहीं समझता।

मुह चढ़ाना—किसीको प्रिय बनाना। जबसे तुमने उसको मुंह चढ़ाया है, वह किसीसे सीधे मुहसे बात नहीं करता।

मुह चढ़ाना—किसीको उदण्ड बनाना; ढीठ बनाना। तुमने नौकर को बहुत मुह चढ़ा रखा है, तभी तो बात-बातपर तुम्हारे सिर होता है।

मुह चढ़ाना—आकृतिसे असन्तोष वा अप्रसन्नता प्रकट करना। सरला! क्या तुम बता सकती हो कि, बड़ी बहूने आज क्यों मुह चढ़ा रखा है?

मुह चलाना—खाना। असभ्य लोग चलते-फिरते भी मुह चलाते हैं।

मुहतोड़ उत्तर देना—पूरा-पूरा जवाब देना। मुहतोड़ उत्तर सुनकर वह चुप हो गया।

मुह देखना-मुह ताकना—किसीसे कुछ पानेकी इच्छा करना। श्रीदत्तने अपना सर्वस्व व्यसनोंमें खो दिया; अब वह भोजनके लिये गङ्गा प्रसाद रतूड़ीका मुह देखता है।

मुहसे फूल झड़ना—प्रसन्न करनेवाली मधुर बातें करना। रूप कुमारके मुहसे फूल झड़ते हैं, इसीलिए लोग उसे प्यार करते हैं।

मुहपर—सामने। लोग पीठ पीछे निन्दा करते हैं, और मुहपर तारीफ।

मुह देखेका—मुलाहिजेका। तुम्हारा मुह देखेका प्रेम है।

मुह पकड़ना—बोलनेमें बाधा देना। साफ साफ कहो कोई मुह थोड़े ही पकड़ रहा है।

मुहकी खाना—कड़ा जवाब पाना। आज उसने ऐसी मुहकी खायी है कि यावज्जीवन न भूलेगा।

मुह काला होना—कलङ्क लगना। उसका दिल तो काला था ही, अब मुह भी काला हो गया है।

मुहमें पानी भर आना—खानेकी इच्छा हो जाना। हलुआ देख-कर मेरे मुहमें पानी भर आया।

मुह बनाना—असन्तोष प्रगट करना। आपने मुह क्यों बना रखा है?

मुहफट होना—बे लिहाज होना। तुम्हारा नौकर मुहफट है।

मुह ताकना—चकित होकर देखना। योगिराजने ऐसा चमत्कार दिखाया कि सब लोग मुह ताकने लगे।

मुह मीठा करना—मिठाई खिलाना। तुम्हारे लड़का हुआ है। मुह मीठा कराओ।

मुह सुजाना—मुखाकृतिसे असन्तोष वा अप्रसन्नता प्रकट करना। तुम उसको दो घण्टेसे तङ्ग कर रहे थे; यदि उसने कुछ कह दिया, तो तुम मुह सुजा बैठे।

मुह लगाना—ढीठ बनाना। बदमाशोंको मुह नहीं लगाना चाहिये।

मुहपर हवाई उड़ना—चेहरा सफेद पड़ जाना। देखो, इसके मुह-पर हवाई उड़ रही है।

मुह मोड़ना—विमुख होना। वादा करके भी उसने ऐनवक्त पर मुह मोड़ लिया।

मुह फूलना—ना खुश होना। जरासी बातपर मुहफूला कर बैठ गये।

मुह चाटना—लल्लो-पत्तो करना; खुशामद करना। तुम धनिकोंका मुह चाटते हो, इसलिए उनके प्रिय बने रहते हो

मुट्ठी गरम करना—कुछ धन दे देना; घूस देना। तुमने उसकी मुट्ठी गरम कर दी होगी; इसलिए वह ठण्डा पड़ गया है।

मुहर्रमी सूरत—रोनी सूरत। आज मुहर्रमी सूरत क्यों बना रखी है।

मुट्ठीमें आना—वशीभूत होना। वह तुम्हारी मुट्ठीमें आ जायगा, यह मुझे स्वप्नमें भी आशा न थी।

मूछोंपर ताव देना—अभिमान करना। आज तो वह मूछोंपर ताव दे रहा है।

मेरी-मेरी करना—अधिकारका घमण्ड होना। क्या मेरी-मेरी करते हो? सब यहीं रह जायगा।

'वसुधा काहुकी नाय भई, सब करि गये मेरी-मेरी

मैदान मारना—विजय प्राप्त करना। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम आज मैदान मारोगे।

मोम हो जाना—नरम हो जाना। उसका दुःख देखकर पत्थर भी मोम हो जाता है; परन्तु तुम्हें दया नहीं आती।

मोटा शिकार—धनी। कोई मोटा शिकार फंसे तक काम बने।

मौतका सरपर खेलना—मृत्यु करीब होना। तुम्हारे सरपर मौत खेल रही थी नहीं तो वहां जाते ही क्यों?

मौतके मुहसे बच जाना—मरते मरते बच जाना। मोटर घूम गयी और तुम मौतके मुहसे बच गये।

मौतके दिन पूरे करना—दुःखमय जीवन बिताना। जीवन तो तुम्हारा है वह गरीब तो मौतके दिन पूरे कर रहा है।

युग बीत जाना—बहुत समय चला जाना। महाभारतके युद्धको युग बीत गये हैं।

युग युग—अनन्त समय तक। भगवान तुम्हें युग युग जीवित रखें।

युगान्तर उपस्थित करना—समय बदल देना। गान्धीजीने भारतमें युगान्तर उपस्थित कर दिया।

रंग उड़ना—आभारहित होना। अनेक प्रयत्न करनेपर भी उस सुन्दरीका रंग शीघ्र उड़ गया।

रंग जमना—प्रभाव बढ़ना। वह ऐसी युक्ति युक्त बातें कहता है कि उसका रंग जम जाता है।

रंगमें भङ्ग होना—मजा बिगड़ना। लोग तो बहुत बड़ी संख्यामें उपस्थित हुए थे परन्तु वर्षाके आनेसे रंगमें भङ्ग हो गया।

रंग ढंग—चाल, व्यहार। इसके रंग ढंग अच्छे नजर नहीं आते। सावधान रहना!

रंग बदलना—नई बातें प्रकट करना। कोई चीज एक स्थितिमें नहीं रहती; जमाना रङ्ग बदलता रहता है।

रंगा सियार—कपटी। यह रंगा सियार है।

रंग बिगड़ना—दशा बिगड़ना। आपसके झगड़ेके कारण आजके समारोहका रङ्ग बिगड़ गया।

रंग देखना—परिणाम देखना। मामलेका रंग देखकर कुछ निश्चय किया जायगा।

रग-रग जानना—सब प्रकारसे परिचित होना। मुझे धोका देनेकी चेष्टा न करो; मैं तुम्हारी रग-रग जानता हूं।

रक्त खौलना—खून खौलना। उसको देखकर मेरा रक्त खौल उठता है।

रफू चक्कर होना—भाग जाना। उनके साथ न जाओ; कोई झगड़ा हो गया, तो तुमको छोड़कर वे सब रफू-चक्कर हो जायेंगे।

रह-रहकर याद आना—बार-बार याद आना। तुम मुझे भूल जाओगे, परन्तु मुझे तुम रह-रहकर याद आओगे।

रहा सहा—बचा हुआ। रहा सहा धन भी फाटकेमें चला गया।

रह रहके—थोड़ी थोड़ी देरमें। रह रहके कलेजेमें एक दर्द-सा उठता है।

रसातलको पहुंचा देना नाश कर देना। हमको पूरी आशा है कि तुम शीघ्र ही जातिको रसातल पहुंचा दोगे।

राईका पर्वत बनाना छोटी बातको अधिक बढ़ाकर कहना। जो व्यक्ति राईका पर्वत बनाता है, वह आज कल चतुर समझा जाता है।

रात-दिन- सदैव। हमेशा। मेरी औरत रात-दिन झगड़ा करती रहती है।

रात आँखोंमें काटना—नींद न आना। जबसे कहीं उसकी आंख लगी है, वह रात आंखोंमें काटता है।

राम-कहानी—दुखड़ा रोना। जिससे तुम अपनी राम-कहानी कह रहे हो, वह रावणका नाती है।

रास्ता देखना—प्रतीक्षा करना। मैं घण्टे भरसे तुम्हारा रास्ता देख रहा हूं।

रास्तेपर लाना—ठीक पथपर लाना। उसे रास्तेपर लाना बहुत मुश्कील है।

रुपया फूंकना—अव्यय। शादीमें हजारों रुपये फूंके जाते हैं।

रेल-पेल होना—भीड़ होना। आज पञ्जाब मेलमें यात्रियोंकी इतनी रेल-पेल है कि जगह मिलनी कठिन है।

रोंगटे खड़े होना—भयभीत होना। परीक्षा-भवनमें प्रवेश करते समय विद्यार्थियोंके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

रोकड़ मिलना—जमा खर्च की बाकी ठीक मिलना। मैं रोज रोकड़ मिलाता हूं।

रोम रोम—रोआं रोआं। उसे देखकर मेरा रोम रोम पुलकित हो उठा है।

रोटियाँ सीधी करना—आजीविकाका साधन मिलना। किसी-न किसी प्रकार तुम तो अपनी रोटियां सीधी कर ही लेते हो।

रोटी कमाना—आजीविका चलाना। मान लिया कि मोहन मन्द-बुद्धि है, परन्तु अपनी रोटी तो कमा लेता है।

रोजगार चमकना—व्यापारमें लाभ होना। आजकल तुम्हारा रोजगार खूब चमक रहा है।

लंगोटिया यार—बचपनका साथी। घनिष्ट मित्र राम और श्याम लंगोटियां यार हैं।

लंगर उठाना—जहाजका रवाना होना। जब मैं पहुंचा तब जहाज लंगर उठा चुका था।

लंगर डालना—हिम्मत हारना। तुमने तो मझधारमें ही लंगर डाल दिया; आगे कैसे काम चलेगा ?

लंगोटीपर फाग खेलना—कंगालीमें आनन्द करना। उनकी कुछ न पुछो, वे तो लंगोटीमें फाग खेलते हैं।

लम्बी चौड़ी हांकना—डींग मारना। कुछ त्याग करो, लम्बी चौड़ी हांकनेसे स्वतंत्रता नहीं मिलती।

लक्ष्मी प्रसन्न हो जाना—धन मिलना। सुनते हैं जो व्यक्ति विष्णु को पूजा करता है, उसपर लक्ष्मी प्रसन्न हो जाती है।

लकीरका फकीर—प्रचलित प्रणालीका अनुसार। दुनियाके ज्यादा आदमी लकीरके फकीर हैं।

लट्टू होना—मोहित होना। वह तुमपर ऐसा लट्टू हुआ कि दिन-भर तुम्हारी गलीमें घूमता रहता है।

लड़कोंका खेल समझना – सुगम समझना। यह लड़का भी तो दिल लगानेको लड़कोंका खेल समझता है।

लड़ाई मोल लेना – जान-बूझकर झगड़ा करना। जो व्यक्ति लड़ाई मोल लेता है, उसको ही मूल्य चुकाना पड़ता है।

लम्बी तानना—सो जाना। एक खा-पीकर लम्बा हुआ और दूसरे-ने लम्बी तानी।

लम्बी सांस लेना—शोकातुर होना। छोटेलालजी! छोटी-सी बातपर क्यों लम्बी सांस ले रहे हैं?

लहू-पसीना एक करना—जी-तोड़ परिश्रम करना। जो व्यक्ति लहू-पसीना एक कर देता है, वह अवश्य सफल होता है।

लहू सूख जाना—अत्यन्त भयभीत हो जाना। नकुलका मुंह लहूसे तर देखकर ब्राह्मणीका लहू सूख गया।

लहूके घूंट पीना—कड़ी चोट सहना। मुझसे पूछो वह किस प्रकार जीता है,—गम खाता और लहूके घूंट पीता है।

लहू लगाकर शहीदोंमें दाखिल होना—थोड़ा-सा काम कर नाम चाहना। और तो और, उमराव भी लहू लगाकर शहीदोंमें दाखिल हो रहा है।

लगाव रखना—सम्बन्ध रखना। उस बेईमान आदमीसे लगाव रखना ठीक नहीं।

लाल झंडी दिखाना– चलता हुआ कार्य बन्द करना। लाल इमली मिलके मजदूरोंने मिलमें लाल झण्डी दिखा दी।

लुटिया डुबोना—काम बिगाड़ना। वह प्रति दिन एक मटका पानी भरनेको प्रस्तुत हो गया था, परन्तु तुमने लुटिया डुबो दी।

लुटिया डुबोना—साहस छोड़ देना। अभी तो गंगा एक मीलकी दूरीपर है, तुम यहीं लुटिया डुबोये देते हो।

लेनेके देने पड़ जाना—लाभकी जगह हानि होना। मैंने कह दिया है कि यदि तुम वहां जाओगे, तो लेनेके देने पड़ जायंगे।

लोहा लेना—सामना करना। वीर पुरुष वीरतापूर्वक लोहा लेते हैं और गालियां नहीं देते।

लोहा मानना—किसीकी योग्यता अथवा वीरताको स्वीकार करना। सारा संसार महाराणा प्रतापका लोहा मानता है।

लोहेके चने चबाना—कठिन कार्य करना। हम लोग दिन-रात लोहेके चने चबाते हैं, फिर भी पेट नहीं भरता।

लौ लगना—ध्यान लगाना। परमात्मासे लौ लगाओ, वही बेड़ा पार लगायगा।

वक्त आना—अन्त समय आना। उसका आखिरी वक्त आगया।

वक्तपर काम आना—समयपर मदद देना। सच्चा मित्र वही है जो वक्तपर काम आता है।

वचन देना- वादा करना। जब वचन दे दिया तो तन-मन-धनसे तैयार हूं।

वचन तोड़ना—बात पूर्ण न करना। जो व्यक्ति अपना वचन तोड़ता है, मैं उससे मित्रता जोड़ना नहीं चाहता।

विषकी बेल बोना—हानिकारक कार्य करना। बार-बार समझानेपर भी तुम विषकी बेल ही बो रहे हो।

विष उगलना—किसीके विरुद्ध बोलना। सुना है उस काले सांपने आज सभामें हमारे विरुद्ध बहुत विष उगला है।

विषके घूंट पाना—कटुवचन सहना। जो कोई तुम्हारे घर खाना खाता है, वह विषके घूंट भी पीता है।

वीरगति पाना—वीरतापूर्वक लड़कर मरना। युरोपीय महासमरमें अनेक भारतीय वीरोंने वीर-गति पायी।

शस्त्र रखवा लेना—पराजित करना। तुम किसी गिनतीमें ही नहीं हो; वह तो अच्छे-अच्छोंके शस्त्र रखवा लेता है।

शस्त्र ढीले होना—साहस टूटना। तुम ही तो एक आदमी थे, तुम्हारे ही शस्त्र ढीले हो गये; अब हम कमर बांधकर क्या करेंगे?

शहद लगाकर चाटना—निरर्थक लिये फिरना। मुझे इस पुस्तक-की आवश्यकता नहीं, तुम इसको शहद लगाकर चाटो।

शह देना—भड़काना। हमने तुम्हारा क्या ले लिया था जो तुम कल उसको हमारे विरुद्ध शह दे गये।

शिकार हाथ लगना—आसामी मिलना। क्यों, किशोरीलाल! दिनोंके बाद शिकार हाथ लगा है।

शिकार होना—मारा जाना। फन्देमें फंसना। जाड़ेके दिनोंमें कितने ही गरीब लोग शीतके शिकार हो जाते हैं। आये दिन कोई न कोई उस दुष्टका शिकार हो जाता है।

शैतानके कान काटना—दुष्टताकी हद करना। तुमतो शैतानके काटने लगे।

श्री गणेश करना—आरंभ करना। आज मैं इस पुस्तकका श्रीगणेश करता हूं।

षड्यन्त्र रचना—छिपकर किसीके विरुद्ध कार्य करना। सुना है वे हमारे विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रच रहे हैं।

षोडश श्रृङ्गार करना—खूब बनना-संवरना। आज कहांकी तयारी है जो षोडश श्रृङ्गार कर रहे हो ?

सठिया जाना—बुद्धि भ्रष्ट होना। पच्चीस सालकी लड़कीका विवाह सोलह सालके लड़केके साथ कर दिया; क्या वह सठिया गया है ?

सत्तू बाँधके पीछे फिरना—बुरी तरह तङ्ग करना। उसको चैनसे दो रोटी खाने दो; तुम सत्तू बांधके उसके पीछे क्यों फिर रहे हो।

सन्नाटा छा जाना—नीरवता होना। रात्रिका समय था, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, ऐसे समय वह घरसे निकला।

सन्नाटेमें आना—भयभीत हो जाना। सशस्त्र डाकुओंको देखकर गांव वाले सन्नाटेमें आ गये।

सब गुड़ गोबर हो जाना—किया-कराया सब नष्ट हो जाना। मैफिलमें रोशनी गुल हो जानेसे सब गुड़ गोबर हो गया।

सब्ज बाग दिखाना—झूठी सहानुभूति प्रकट करना। यह बात उचित नहीं है कि तुम बहार लूटो और हमको सब्ज बाग दिखाओ।

सफेद झूठ—बिलकुल झूठ। यह बात सफेद झूठ है।

सफाई देना—निर्दोष होनेका सबूत देना। अपने बचावके लिये तुम क्या सफाई दे सकते हो ?

सर करना—विजय प्राप्त करना। शिवाजीने सिंहगढ़ सर करके अपनी माताको प्रसन्न किया।

साँप-छछुन्दरकी गति होना—असमञ्जसमें पड़ना। तुम मुरलीधरको अपने पास भी रखना नहीं चाहते, और उससे सम्बन्ध भी तोड़ना नहीं चाहते; तुम्हारी सांप-छछूंदरकी गति हो रही है।

साँपको दूध पिलाना—दुष्टके साथ भलाई करना। सांपको दूध

तो पिलाते हो, परन्तु स्मरण रखो कि किसी दिन वह ऐसा डङ्क मारेगा कि पानी न मांगोगे।

साँस पूरे होना—जीवन समाप्त होना ; मरना।

साँस तक न लेना—चुप्प रहना। आपके सामने वह सांस तक नहीं लेता।

साई देना—पेशगी देना। बाजे वालोंको साईके रुपये दे आओ।

साँस लेना—कुछ विश्राम करना। वह प्रातःकालसे एक टांगसे फिर रहा है, उसको सांस तो लेने दो।

सात घाटका पानी पीना—अनेक प्रकारका अनुभव प्राप्त करना। उसके साथ साथ सात-पांच न करो ; उसने सात घाटका पानी पीया है।

सात-पाँच करना—चालाकी करना। रामनाथको सीधा समझकर तुम लोग उसके साथ सात-पांच करते हो।

सायेसे भागना—घृणा होना। जो तुम्हारे सायेसे भगाता है, तुम उसके पीछे अपना शरीर खपाते हो।

सारे जमानेकी बातें सुनना—संसार भरमें बुरा बनना। जब तुम मेरी एक भी नहीं सुनते; तो मैं तुम्हारे लिए सारे जमानेकी बात क्यों सुनूं ?

सिंहासन हिलना—भयभीत होना। प्रजा विद्रोही होनेसे राजाका सिंहासन हिल जाता है।

सिक्का बैठना—प्रभुत्व जमाना। जिस समय मेरा सिक्का बैठ जायगा, मैं यहां किसी दुष्टको खड़ा न होने दूंगा। सोहनने सहारनपुरमें ऐसा सिक्का बैठाया कि वहां उसके विरुद्ध कोई खड़ा नहीं होता।

सिट-पिटा जाना—घबरा उठना। गत रात्रि जब किसीने सीटी बजाई, सो तुम सिट-पिटा गये।

सितम ढाना—कठिन दुःख देना। वह तुमपर इसलिए सितम ढाता है कि तुम सितम उठाते हो।

सितारा चमकना—भाग्यशाली होना। सूर्य प्रसाद तुम को पुरुषार्थमें लगा रहना चाहिये; किसी दिन तुम्हारा सितारा भी चमकेगा।

सिर-आंखोंपर बैठाना—बहुत सम्मान करना। वह हमारे अध्यापक हैं; हम उनको सिर-आंखोंपर बैठाते हैं।

सिर उठाना—उपद्रव खड़ा करना। यदि कभी तुमने मेरे सामने फिर सिर उठाया तो इसका परिणाम अच्छा न होगा।

सिर ऊंचा होना—प्रतिष्ठित होना। उस नीचको बकने दो; तुम अपने परिश्रममें लगे रहो, एक दिन तुम्हारा सिर ऊंचा होगा।

सिर कटाना—बहुत कष्ट होना। काम करते तुम्हारा सिर कटता है।

सिर चढ़ाना—धृष्ट बनाना। तुमने ही उसका सिर चढ़ाया था; यदि उसने तुम्हारी पगड़ी उतार ली, तो आश्चर्य क्या है।

सिर चढ़ना—ढीठ बनना। यह इतना सिर चढ़ गया है कि किसी बड़े आदमीको देखकर भी खाटसे नीचे नहीं उतरता।

सिर झुकाना—सम्मान करना। विद्वान्के आगे छोटे-बड़े सभी सिर झुकाते हैं।

सिर झुकाना—प्रणाम करना। सीताराम प्रातःकाल उठकर गुरुके चरणोंमें सिर झुकाता है।

सिर झुकाना—बड़प्पन स्वीकार करना। दिखला दूंगा एक दिन तुम भी उसके आगे सिर झुकाओगे।

सिर पकड़कर रोना—बहुत पछताना। परीक्षाके केवल दो मास और हैं; यदि तुमने इस समय भी कुछ हाथ-पांव न हिलाये, तो सिर पकड़कर रोओगे।

सिर पटकना—जी तोड़ प्रयत्न करना ; कठिन उद्योग करना। चाहे तुम कितना ही सिर पटको, वह कदापि सन्मार्गपर नहीं आयेगा।

सिर पटकना—ऊपर डालना। यह काम मोहनके करनेका था ; परन्तु उसने मेरे सिर पटक दिया।

सिरपर आना—समीप आना। परीक्षा सिरपर आ गयी है; आप अभी तक हाथपर हाथ धरे बैठे हैं।

सिरपर मौत नाचना—मृत्युका समीप आ जाना। तुम्हारी उछल-कूदसे विदित होता है कि तुम्हारे सिरपर मौत नाच रही है।

सिरपर चढ़ाना—आदत बिगाड़ना। जिसने तुम्हें सिरपर चढ़ाया है, उसीका सिर खाओ; मुझे तङ्ग न करो।

सिरपर हाथ रखना—सहायक होना। मैं क्या जानता था कि वह ऐसा दुष्ट निकलेगा; मैंने तो दीन समझकर ही उसके सिरपर हाथ रखा था।

सिरपर खड़ा होना—बहुत समीप आना। परीक्षा सिरपर खड़ी है और वह अभी तक चुपचाप बैठा हुआ है।

सिरपर कोई न होना—अनाथ होना। जिसके सिरपर कोई नहीं होता, उसकी रक्षा ईश्वर करता है।

सिर फिर जाना—पागल हो जाना। क्या मेरा सिर फिर गया है जो निष्प्रयोजन किसीके लिये पांव तोड़ता फिरूँ ?

सिर मारना—बहुत प्रयत्न करना। मैं आज प्रातःकाल सात बजेसे सिर मार रहा हूं परन्तु कुछ समझमें नहीं आता।

सिर मुंड़ाते ही ओले पड़ना—कार्य आरम्भ करते ही हानि उठाना। धानके व्यापारमें तुमको कुछ-न-कुछ लाभ तो हुआ, यहां तो सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े।

सिरसे कफन बांधना—मरनेको प्रस्तुत हो जाना। जो तुम हमारे वधपर कमर कसते हो, तो हम भी सिरसे कफन बांधते हैं।

सिरसे उतारकर धर देना—निर्लज्ज हो जाना। जो व्यक्ति सिरसे उतारकर धर देता है, उसपर किसीके कहने-सुननेका प्रभाव नहीं पड़ता।

सिरसे बोझ उतरना—कार्य समाप्त होना। मुझे यही चिन्ता बनी रहती है कि कब सिरसे बोझ उतरेगा।

सिर होना—तंग करना। जिसने पुस्तक उठायी, उसको तो कुछ कहते नहीं, और मेरे सिर होते हो।

सीधा बनाना—घमण्ड दूर करना। किसी दिन उसको ऐसा सीधा बनाऊंगा कि सब टेढ़ी चाल चलना भूल जायगा।

सीधे मुह बात न करना—अभिमान होना। उसको मुह लगानेका फल यह हुआ कि अब वह सीधे मुह बात नहीं करता।

सुखकी नींद सोना—निश्चिन्त रहना। तुम्हें दुःख किस बातका है? आनन्दसे खाते और सुखकी नींद सोते हो।

सुरखावका पर लगना—विशेषता होना। सुरेन्द्रके कौनसा सुरखावका पर लगा हुआ है जो उसे मन्त्री बनाया गया है।

सुहाग लुट जाना—विधवा हो जाना। युरोपीय महासमरमें अनेक स्त्रियोंका सुहाग लुट गया।

सूखकर कांटा हो जाना—अत्यन्त दुबल हो जाना। सुक्खनलाल देशके गममें सूख कर कांटा हो गया है।

सूखा जवाब देना—टाल देना। सोहन उसके पास सहायताके लिए गया था परन्तु उसने सूखा जवाब दे दिया।

सूर्यको दीपक दिखाना—विश्वविख्यात व्यक्तिका परिचय देना

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरको संसार जानता है; तुम सूर्यको दीपक क्यों दिखाते हो ?

सैकड़ों घड़े पानी पड़ जाना—अत्यन्त लज्जित होना। जब मैंने यमुना-पुलिनकी घटनाकी पोल खोली, उसपर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया।

सोकर खोना—असावधान होकर कार्य बिगाड़ना। यह स्वर्ण-अवसर तुमने सोकर खो दिया; अब जागनेसे क्या होता है ?

सोता सिंह जगाना—बलवान्‌से छेड़छाड़ करना। जो व्यक्ति सोता सिंह जगाता है, वह अवश्य हानि उठाता है।

सोनेकी चिड़िया हाथसे निकलना—प्राप्तिका मार्ग बन्द होना, किसी मालदार आसामीका काबूसे निकलना। अब फड़फड़ानेसे कुछ नहीं होता; सोनेकी चिड़िया हाथसे निकल गयी।

सोनेमें सुगन्ध हो जाना—गुणाधिक्य होना। पं० रामानन्द द्विवेदीकी सरलता सोनेमें सुगन्ध हो गयी।

सौ जानसे मरना—अत्यधिक प्रेम करना। वह तुमपर सौ जानसे मरता है और मैं तुम्हें देख कर जीता हूं।

स्वप्नमें भी ध्यान न आना—सर्वथा भूल जाना। जिस पर तुम सौ जानसे मरते थे, उसका तुमको स्वप्नमें भी ध्यान नहीं आता।

हक्का-बक्का-रह जाना—विस्मित हो जाना। जब कसबी बनजारेने सोरठको अपने टांडेमें न पाया, तो वह हक्का-बक्का रह गया।

हजामत बना देना—ठग लेना। सुनते हैं कल उस धूर्त्तराजने तुम्हारी हजामत बना दी।

हजम करना—न देना। वह सोनेका हार हजम कर गया।

हथियार रख देना—साहस छोड़ देना। आगे चलकर तुमसे क्या आशा की जा सकती है जब तुमने अभीसे हथियार रख दिये।

हरा होना—प्रसन्न होना। अपने परम मित्र हरधनको देखकर हर प्रसाद हरा हो जाता है।

हराम होना—निषिद्ध होना, बन्द होना। जबसे वह यहां आया है, उसका खाना-पीना हराम हो रहा है।

हरी-हरी सूझना—सबको एक समान जानना। विश्वामित्रने कहा—"मुनिको हरी-हरी सूझती है; जिसने महादेवके धनुषको गन्नेके समान तोड़ डाला, उसको अब भी नहीं समझे।"

हवाके घोड़ेपर सवार होना—बहुत जल्दीमें होना। तुम तो इस समय हवाके घोड़ेपर सवार हो; तुमको अपनी कथा क्या सुनाऊं?

हवासे बातें करना—बहुत तेज दौड़ना। रणवीरका घोड़ा हवासे बातें करने लगा।

हवा बाँधना—प्रभाव जमाना। हरिदत्त अपनी हवा बांधता है और मोहन उसका भेद खोलता है।

हवा बदलना—परिवर्त्तन होना। पण्डितजी हवा बदल गयी है; आजकल कुलीनताको कोई नहीं पूछता।

हवासे लड़ना—चिड़चिड़ा स्वभाव होना। तुम तो हवासे लड़ते हो; उसके गानेपर ही बिगड़ गये।

आह करने पै क्यों बिगड़ते हो।
तुम तो साहब हवासे लड़ते हो॥

हवा हो जाना—छिप जाना, दूर हो जाना। नरेन्द्र आजकल तुम कहीं दिखलाई नहीं पड़ते, हवा हो रहे हो?

हवा खाना—वञ्चित रह जाना। जितना खाना बना था सब खाया गया; अब तुम हवा खाओ, क्योंकि तुम हवा खाने चल गये थे।

हस्तगत करना—अधिकारमें लेना। हिम्मत सिंह और उसके साथियोंने सहजमें ही दुर्गको हस्तगत कर लिया।

हाँ-नाका जवाब देना—स्वीकार तथा अस्वीकार करना। उसके पास जाओ और कहो कि हमको हां-ना का जवाब दो।

हाँ-हूं करना—बच्चोंका बोलना आरम्भ होना। सरला—बहिन! तुम्हारा बच्चा बोलने लगा है या नहीं? विमला—हां; कुछ हां-हूं करने लगा है।

हाथ उठाना—मारना। वह चुपचाप बैठा हुआ था; तुमने उसपर हाथ क्यों उठाया?

हाथ फैलाना—याचना करना। मन्नूलाल भूखा मर जायगा परन्तु किसीके आगे हाथ न फैलायगा।

हाथकी कठ-पुतली बनना—सर्वथा दूसरेके संकेत पर चलना। कृष्णकुमार आजकल कालूरामके हाथकी कठ-पुतली बना हुआ है।

हाथ-पांव फूलना—भयभीत हो जाना, घबराना। पुलिस-दारोगा-को देखकर लाला फूलचन्दके हाथ पांव फूल जाते हैं।

हाथ धोना—खो देना। आज नलमें पानी बहुत थोड़ा है; यदि देर करोगे तो पानीसे हाथ धोओगे।

हाथ बाँधे खड़े रहना—सेवामें हर घड़ी प्रस्तुत रहना—रामू बड़ा फरमाबरदार है, हर घड़ी हाथ बांधे खड़ा रहता है।

हाथ डालना—आरम्भ करना। यदि तुम मेरा साथ देनेका वचन दो, तो मैं इस कार्यमें हाथ डालता हूं।

हाथ खींच लेना—सम्बन्ध न रखना, सहायता बन्द कर देना। यदि तुम अपना हाथ खींच लोगे, तो वह अपने पांवों पर खड़ा होना सीख जायगा।

हाथ-पैर जोड़ना—अनुनय-विनय करना। यदि मोहन तुमसे सम्बन्ध तोड़ता है, तोड़ने दो, तुम हाथ-पैर क्यों जोड़ते हो?

हाथकी पूंजी गवांना—मूलधन खो देना। तुमने तो व्यापारमें अच्छा लाभ उठाया जो हाथकी पूंजी थी वह गंवा ब ।

हाथ-पल्ले पड़ना—प्राप्ति होना। मैंने तो बहुत पांव तोड़े परन्तु कुछ भी हाथ-पल्ले न पड़ा।

हाथ-पांव बचाना—सावधान होकर काम करना। मैं बहुत ही हाथ पांव बचाता हूं परन्तु कुछ न कुछ हानि हो ही जाती है।

हाथ लगाना—सहायता देना। अनाथालयके लिये चन्दा किया जा रहा है; आप भी इस शुभ कार्यमें हाथ लगाइये।

हाथ मारना—शर्त लगाना। मैं हाथ मारता हूं कि सुरेन्द्र इस वर्ष परीक्षामें अवश्य सफल होगा।

हाथ दिखाना—वीरता दिखाना। रणवीरने रण-भूमिमें वह हाथ दिखाये कि शत्रुके पांव उखड़ गये।

हाथ धोकर पीछे पड़ना—बहुत तङ्ग करना। मुझको पद-दलित करनेके लिये वह हाथ धोकर पीछे पड़ा हुआ है।

हाथ मलना—पछताना। यदि भट्टीकी ओर पांव बढ़ाओगे, तो यावज्जीवन हाथ मलते रहोगे।

'मल मलके हाथ रोये ढाकेके थान वाले।'

हाथपर हाथ मारा न दिखायी देना—अत्यन्त अन्धकार होना। वर्षा हो रही है, हाथपर हाथ मारा दिखायी नहीं देता; भला इस समय आप कहां जा रहे हैं?

हाथ बंटाना—सहायता देना। हिन्दू स्कूलके लिये चन्दा किया जा रहा है, इस कार्यमें आप भी हाथ बंटायें।

हाथ चूमना—प्यार करना। कीर्तिदेव श्यामछन्दरकी लेखनीको देख कर मुग्ध हो गये और उन्होंने उसके हाथ चूम लिये।

हाथ भरका कलेजा होना—बड़ा साहसी होना। वह तुमसे कदापि डरनेवाला नहीं; यदि तुम तीसमार खां हो तो उसका भी हाथ भरका कलेजा है।

हाथ पकड़ाना—सौंपना। मरते समय वह अपने लड़केका हाथ मुझको पकड़ा गया था।

हाथसे खोना—अधिकार खोना। ले देकर एक मकान था; उसने उसे भी हाथसे खो दिया।

हाथ तँग होना—धनकी कमी होना। उस गरीबका हाथ तङ्ग है; तुम कहते हो दिल खोल कर खर्च करो।

हाथ साफ करना—प्राप्ति करना। आसामी मालदार है, पुलिस भी खूब हाथ साफ करेगी।

हाय-तोबा मचाना—व्यग्र होना। साहससे काम लो; जरा-से दुःखमें हाय-तोबा मचाने लगे।

हिरन हो जाना—भाग जाना। तुम्हारी वीरतासे मैं खूब परिचित हूं; उस नरसिंहकी गरज सुनते ही तुम हिरन हो जाओगे।

हिल जाना—परिचित हो जाना। मुन्नी मुझसे ऐसी हिल गयी है कि दिन भर मेरे पाससे घड़ी भर भी नहीं हिलती।

हुक्का-पानी बन्द करना—जाति-च्युत करना। उसने बिरादरीकी आज्ञाके बिना विधवा-विवाह कर लिया था, इसलिये उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया गया।

हुन बरसना—अधिक धन होना। ठीक है; मेरे घर हुन बरसती है और तुम भूखे बङ्गाली हो।

हेठी होना—अप्रतिष्ठा होना। मैं तुमसे सच करता हूं कि मेरा कुछ न बिगड़ेगा ; केवल तुम्हारी ही हेठी होगी।

होठ चबाना—क्रोध करना। तुम्हारे हिस्सेके चने रखे हैं, होठ क्यों चबाते हो ?

होठोंपर जान आना—मरणासन्न होना। उसकी होठोंपर जान आ रही है, परन्तु धनका मोह नहीं जाता।

होश हिरन हो जाना—घबरा जाना। रात्रिके समय जङ्गलमें सिंहकी गरज सुनकर अच्छे-अच्छोंके होश हिरन हो जाते हैं।

होश उड़ जाना—घबरा जाना। वह बड़ा वीर है; जिस समन उसने जङ्गलमें एक गीदड़को देखा, उसके होश उड़ गये।

हृदय विदीर्ण हो जाना—अत्यन्त दुःख होना। उस विधवाका करुणा-क्रन्दन सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण हो गया।

हृदय खोलना—भेद कहना। मुझे पता नहीं था कि वह विश्वास-घात करेगा; मैंने तो सुहृद् समझकर उससे हृदय खोला था।

हृदय उछलना—प्रसन्न होना। बेटेको देखती ही मा का हृदय उछल पड़ा।

हृदयके कपाट खुलना—ज्ञान उत्पन्न होना। जब ईश्वरकी कृपा होती है, तब मनुष्यके हृदयके कपाट खुलते हैं।

हृदयङ्गम होना—समझमें आना। शुद्ध विचार होने पर कठिनसे कठिन विषय भी हृदयङ्गम हो जाता।

हृदयमें गुदगुदी उठना—प्रसन्न होता। मोहनके आनेका समाचार सुनते ही तुम्हारे हृदयमें गुदगुदी उठने लगती है।

लोकोक्तियां

अण्डा सिखावे बच्चेको चीं चीं मत कर—छोटेका बड़े को उपदेश देना। वह कलका लड़का; मुझे दुनियाके व्यवहार सिखाने लगा, मैंने उसी समय कह दिया अंडा सिखावे......।

अण्डे सेवे कोई और बच्चे लेवे कोई—परिश्रम कोई करे और लाभ कोई उठावे। जब घाटा होता था तब एक दिन आकर मुह भी नहीं दिखाया और अब दो पैसे बचने लगे तो कहते हो; मैं भाई हूं मुझे हिस्सा मिलना चाहिये। वही बात हुई अण्डे सेवे .....।

अण्डे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे—पूंजी बनी रही तो ब्याज बहुत आ जायगा। अरे सूदकी दर ज्यादा न देख, पर रुपया जमा करनेसे पहले यह देख कि बंक कैसा है; ध्यान रख अंडे होंगे......।

अन्त बुरेका बुरा—बुरे का अन्त बुरा है। उसने अपनी विधवा चाचीका सब माल हड़प कर उसे घरसे निकाल दिया था। आज वही मारा मारा फिरता है; सच है अंत बुरे......। इसी प्रकार अंत भलेका भला भी कहा जाता है।

अन्त मता सो गता—मरते समय जैसी मति होती है वैसी ही गति होती है।

अंधा क्या चाहे, दो आंखें—आवश्यक वस्तु अनायास मिल जाय तब। यदि आपको वह नौकरी मिल जाय तो? बस, अंधा......।

अंधी पीसे कुत्ता खाय—जब किसीके कमाये हुए धनका दूसरे ही उपयोग करें। जीजा रात-दिन काममें जुटे रहते हैं और उनके निठल्ले साले धन उड़ाते हैं. कहा है अंधी पीसे ......।

अँधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपनेको दे—अधिकार और सामर्थ्य मिलने पर स्वार्थवश अपने इष्ट-मित्रों और संबन्धियोंका ही उपकार करे तब। मिनिस्टर बन गये तबसे सब जगह नाती पोते भर रखे हैं, इन्हींके लिये किसीने कहा है अंधा……।

अन्धरी गैया धर्म रखवाली—निर्धनके धन राम।

अन्दर छूत नहीं बाहर दुर दुर—भीतर पवित्रता न हो, बाहर पवित्रताका दिखाव हो।

अन्धेके हाथ बटेर लगी—यदि किसीको कोई चीज अनायास मिल जाय।

अंधेको अंधा कहनेसे बुरा मानता है कटु वचन सत्य होने पर भी बुरा लगता है। तुम्हें इतना तो ध्यान रखना चाहिए कि अंधेको अंधा कहनेसे वह बुरा मानता है।

अन्धेको अन्धेरेमें बहुत दूरकी सूझी- जब कोई मूर्ख दूरदेशी की बात कहे।

अकेला पूत कमाई करे घरका करे या कचहरी करे- एक आदमी क्या-क्या काम करे!

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—बड़ा काम एक आदमी से नहीं हो सकता। सब लोग साथ दें तभी आन्दोलनमें सफलता हो सकती है, अकेला……।

अक्ल बड़ी कि भैंस—शरीरसे बलवान होनेसे बुद्धिका ज्यादा होना अच्छा है।

अन्धा क्या जाने बसन्त की बहार—जिसने जो चीज नहीं देखी वह उसका महत्व क्या जाने।

अन्धा बगला कीचड़ खाय—अनाड़ीको बेकामकी चीज ही मिलती है।

अक्ल पर परदा पड़ना—बुद्धि मारी जाना।

अक्लमन्दको इशारा काफी है — अर्थ स्पष्ट है।

अच्छा किया खुदाने बुरा किया बन्देने— परमात्मा जो करता है अच्छा करता है, बुराई आदमीसे ही होती है

अक्ल मंदको इशारा मूर्खको तमाचा— बुद्धिमान जरा-से समझाने पर समझ जाता है, मूर्ख बिना मारे नहीं समझता।

अच्छे घर बाना दिया— अपनेसे बलवानसे दुश्मनी मोल लेना।

अजगर करे न चाकरी पक्षी करे न काम। दास मलूका यों कहे सबका दाता राम॥ अर्थ स्पष्ट है।

अटका बनिया देय उधार—दबा हुआ आदमी सब कुछ करता है।

अति भक्ति चोर का लक्षण—ढोंगी मनुष्य सदा छली होता है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्—सीमासे बाहर कोई काम नहीं करना चाहिये।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछे आदमी दिखावा बहुत करते हैं। पांच बार विशारदमें फेल हुए हैं और दिखाते हैं यों जैसे बड़े धुरंधर पंडित हैं, सच है अधजल......।

अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष— अपने ही लोग बुरे हो तो दूसरेका क्या कसूर ?

अपना वही जो आवे काम— मित्र वही जो समय पर काम आवे।

अतिका भला न बरसना, अतिकी भली न धूप, अतिका भला न बोलना, अतिकी भली न चुप्प—ये तीनों बातें आवश्यकता से अधिक होनेसे नुकसान करती हैं।

अति दर्पण हता लङ्का—अधिक अभिमानसे लङ्काका नाश हुआ।

आनके धन पर चोर राजा—जब किसीकी कमाई दौलतका कोई दूसरा मालिक बन बैठता है।

अनुज वधू भगिनी सुत नारी सुन, ये सठ कन्या सम चारी—छोटे भाईकी स्त्री, भगिनी, पुत्रवधु, कन्या ये चारों बराबर हैं।

अपना २ खाना अपना कमाना—जब एक परिवारके लोग अलग रहें।

अपना घर दूरसे सूझता है—अपने लाभ पर सबकी नजर रहती है।

अपना हाथ जगन्नाथ—बड़ी स्वच्छन्दतासे किसी वस्तुको लेने पर। चलो भाई, उठो लालाजीने मिठाईवाले कमरेकी चाबी दे दी है, अब तो बस अपना......।

अपनी करनी पार उतरनी—जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग—सब मिलकर काम न करें तब। इस संस्थाका शीघ्र ही नाश होगा; कोई नियम नहीं, कोई अध्यक्ष नहीं, सब मुखिया बनते हैं। यहां तो बस अपनी......।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी इज्जत अपने हाथ होती है।

अपनी गलीमें कुत्ता भी शेर होता है—अपने घर पर निर्बल भी बलवान होता है।

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरेका सगुन तो बिगड़े—दुष्ट लोग दूसरेका नुकसान करनेके लिये अपना भी नुकसान कर लेते हैं।

अपने दहीको खट्टा कौन कहता है—अपनी चीजको कोई खराब नहीं कहता

अपने पूतको कोई काना नहीं कहता—अपनी चीजको कोई खराब नहीं कहता। भाई तुम्हारी चीज ही सबसे अच्छी है और ये सब खराब हैं, सच है अपने पूत को......।

अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत—पश्चाताप करना व्यर्थ है। फेल होकर रोता है, जब पढ़नेके दिन थे तब तो मौजें उड़ाता रहा अब......।

अभी तो तुम्हारे दूधके दांत भी नहीं टूटे—अभी तुम बच्चे हो, अभी तुमने दुनिया नहीं देखी।

अमीरको जान प्यारी गरीबको दम भारी—अमीरको जान प्यारी होती है और गरीबको जान भारी होती है।

अल खामोशी नीम रजा (मौनं सम्मति लक्षणम्)—चुप रहना स्वीकृत-तुल्य है।

अल्पाहारी सदा सुखी—थोड़ा खानेवाला कभी बीमार नहीं होता।

अशर्फियां लुटें और कोयलों पर मोहर—बड़ी रकम खरचते समय तो आगा-पीछा न देखना किन्तु छोटी-छोटी रकमोंका पूरा-पूरा हिसाब रखना।

अस्सीकी आमद चौरासीका खर्च—आमदनीसे ज्यादा खर्च होना।

आंख और कानमें चार अंगुलका फर्क है—देखने और सुननेमें बड़ा अन्तर है।

आँख न दीदा काढ़े कसीदा—यदि कोई ऐसा काम करे जिसके लिये उसमें योग्यता न हो तब। इस लड़केसे चित्र बनवाओगे! आंख न दीदा……।

आंख चूकी माल दोस्तोंका—अपनी वस्तु की सावधानी स्वयं करनी चाहिये।

आँख से दूर दिल से दूर—दूर रहने से मुहब्बत नहीं रहती।

आँख के अँधे नाम नयनसुख—गुणके विरुद्ध नाम होने पर। लेखक बनते हैं कलम पकड़नेकी तमीज नहीं! सच है आंख के……।

आँधीके आम—सस्ती चीज।

आँसू एक नहीं कलेजा टूक-टूक—दिखावटी रोना।

आई तो रोजी नहीं तो रोजा—रोजगार मिल गया तो दिन सुखसे बीतना नहीं तो भूखों मरना। आप ठहरे बड़े लोग, न चिन्ता न फिकर, हम मजदूरोंका क्या है, आई तो……।

आंत भारी तो माथ भारी—आंतमें गड़बड़ी होनेसे सरमें दर्द होता है।

आग लगन्ते झोपड़ा जो निकले सो सार—जब सब जलता हो तो जो मिले वही लाभ।

आग लगने पर कुआँ खोदना—विपत्ति उपस्थित होने पर उपाय सोचना।

आगे नाथ न पाछे पगहा—कोई नाते रिश्तेदार न होना। स्वामी जीका कौन खानेवाला बैठा है? उनके तो आगे नाथ……।

आज किधरका चाँद निकला है—जब कोई बहुत दिनों बाद मिलता है तब ऐसा कहते हैं।

आजादी खुदाकी नियामत है—स्वतन्त्रता ईश्वरीय देन है।

आटेका चिराग, घर रक्खूँ तो चूहा खाय, बाहर रक्खूँ तो कौवा ले जाय—जब बचाव की कोई सूरत न हो तब। करूं तो क्या करूं, काम पर न जाऊं तो नौकरी छूटती है और बाजारमें निकलता हूं तो कर्ज़दार पल्ला खींचते हैं, हमारी तो वही दुर्दशा हुई, आटे……।

आदमीकी पेशानी दिलका आयना है—मनुष्यके लिये दिलके भावोंकी झलक चेहरेपर रहती हैं इसीलिये कहा जाता है, आदमीकी……।

आदमी जाने बसे सोना जाने कसे—सोना कसौटी पर कसे जानेसे तथा आदमी पास रहनेसे पहचाना जाता है।

आदमी मुश्किलसे मिलता है—सच्चा और ईमानदारी आदमी मिलना कठिन है।

आधा तीतर आधा बटेर—अधूरा रहना। हंटिंग कोट बनाया था तो ऊपर यह जेब क्यों लगा दी? वाह, आधा……।

आधी छोड़ सारी को धावे, आधा रहे न सारा पावे—ज्यादा लालच करनेसे हानि होती है।

आप काज महाकाज—खुद करनेसे ही काम ठीक होता है।

आपे भला तो जग भला—भलेको सब भले ही दीखते हैं।

आप ही मियाँ मँगते द्वार खड़े दरवेश—स्वयं सहायता चाहने वाला आदमी दूसरोंको क्या सहायता देगा?

आब आब कर मर गये सिरहाने रक्खा पानी—किसीके सम्मुख ऐसी भाषा बोलना जिसे वह न समझता हो।

आ बला गले लग—जान बूझ कर विपत्तिमें पड़ना। इन गर्मियों में कहीं काश्मीरकी सैर करते, व्यर्थमें यह परीक्षाका भार सिर पर ले बैठे हो। तुमने तो वही किया कि आ बला……।

आमके आम गुठलियोंके दाम—किसी काममें दुगुना लाभ होना।

आम खाने से काम पेड़ गिननेसे क्या काम—मतलबकी बात ही करनी चाहिये बिना मतलब की नहीं।

आम, ईख, नीबू, वणिक, गारे ही रस देत—आम, गन्ना, नीबू, बनिया, इनके दबानेसे ही रस मिलता है।

आया कुत्ता खागया तू बैठा ढोल बजा—आंखों के सामनेसे सब कुछ लुट गया और तुम देखते ही रहे।

आये थे हरि भजनको ओटन लगे कपास—आये थे किसी और महत्वपूर्ण कामके लिये और लगे कुछ और ही तुच्छ-सा काम करने।

आया है सो जायगा राजा रंक फकीर—अमीर-गरीब सब एक-न-एक दिन मर जायंगे।

आयेकी खुशी न गयेका गम— संतोषी मनुष्य।

आसपास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे—जो चाहता है उसे तो मिले न, दूसरों को मिले।

आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे—भोजन और लेनदेनमें लज्जा न करनी चाहिये।

इकसे इक माईके लाल पड़े हैं—ईश्वरकी सृष्टिमें एक-से-एक मनुष्य पड़े हुए हैं।

इतना नफा खाओ जितना आटे में नोन—थोड़ा नफा ही खाना चाहिये।

इतनी-सी जान और गज भरकी जबान—छोटे मुह बड़ी बात।

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया—भाग्यकी विचित्रता पर। कई झोपड़ियोंमें पड़े सड़ते हैं, कई महलोंमें पड़े गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, ईश्वर की……।

ईंटकी लेनी पत्थरकी देनी—ईंटका जवाब पत्थरसे देना।

उखलीमें सिर दिया तो मूसलोंका क्या डर—जब किसी कठिन काम करनेका व्रत ले लिया तो फिर उसमें आने वाली विपत्तियोंसे क्या डरना।

उदरनिमित्तं बहुकृतवेषा—पेटके लिये बहुतसे रूप धरने पड़ते हैं।

उत्तम खेती, मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान—अर्थ साफ है।

उधार का खाना फूस का तापना बराबर है—जैसे फूस की आग अधिक देर तक नहीं टिकती वैसे ही उधार लेकर खाना भी अधिक दिन तक नहीं चलता।

उधार दिया गाहक खोया—जब उधार दी हुई वस्तुके पैसे मांगोगे तब ग्राहक पास नहीं आवेगा।

उन्नीस-बीस का तो फर्क होता ही है—संसारमें दो चीजें बिलकुल एक-सी नहीं होतीं, थोड़ा-बहुत फर्क होता ही है।

उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—एक मनुष्यकी सब संतानें एक-से स्वभावकी नहीं होतीं।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे—अपना अपराध स्वीकार तो न करना, उल्टा पूछनेवाले पर दोष लगाना।

उल्टा बांस बरेली को—उल्टा काम करना।

ऊँची दुकान फीका पकवान—तत्व कुछ न हो आडम्बर बहुत।

ऊँट किस करवट बैठता है—देखें क्या होता है। २० को मामलेकी तारीख है देखें ऊंट किस करवट बैठता है।

ऊँटकी चोरी और झुके-झुके—बड़े काम छिपकर नहीं किये जा सकते हैं।

ऊँटके मुहमें जीरा—बहुत खानेवालेको थोड़ीसी चीज मिले तब।

ऊधो का लेना न माधो का देना—निश्चिन्त होना। हमसे तो ये फकीर अच्छे, टांग पसारकर सोते हैं, ऊधो ……।

एक अंडा वह भी गंदा—किसी वस्तुका न होने के बराबर होना……।

एक अनार सौ बीमार—आवेदन-पत्र सौ आये हैं और सभीके साथ सिफारिशें हैं। मैं हैरान हूं कि किसे रखूं—यहां तो, एक अनार……।

एक और एक ग्यारह होते हैं—एकतामें बड़ा बल है। दो आदमी मिलकर ग्यारह आदमीका काम कर सकते हैं।

एक चुप हजारको हरावे—खामोश रहनेसे बकवादी हारकर चुप हो जाता है।

एक के दूने से सौके सवाये भले—मालकी बिक्री अधिक होनेमें ही अधिक लाभ होता है।

एक तंदुरुस्ती हजार नियामत—धनसे आरोग्यता कई गुणी अच्छी है।

एक तो चोरी दूसरी सीनाजोरी—एक तो काम बिगड़ना फिर आंख दिखाना।

एक तो करैला कड़वा दूसरा नीम चढ़ा—स्वाभाविक दोषमें किसी कारणवश एक और दोप लगने पर।

एक थैलीके चट्टे-बट्टे—सब एक बराबर। क्या चर्चिल और क्या चेम्बरलेन भारतवासियोंके लिये ये सब एक थैलीके चट्टे-बट्टे हैं।

एक दममें हजार दम—एक आदमीसे हजारोंका जीवन-निर्वाह होता है।

एक न शुद दो शुद—एक वपत्ति पर दूसरी विपत्ति आनेपर कहा जाता है।

एक पंथ दो काज—एक उद्योग से दो काम सफल होने पर या एक काम करनेसे दो मतलब निकलें तब कहा जाता है।

एक मछली सारे जल का गंदा करती है—एक की बुराईसे सारा समाज बदनाम हो जाता है। रामनाथने बुढ़ापेमें विवाह क्या किया सारे समाजको बदनाम कर दिया इसीको कहते हैं एक मछली......।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं—दो शक्तियान एक स्थान पर नहीं रह सकते।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—एक के किये कुछ नहीं होता।

ऐब करने को भी हुनर चाहिये—बुराई करनेको कौशल भी चाहिये।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—जब आदमी दुखी हो जाता है, तब कहा जाता है।

ओछे की प्रीत बालू की भीत—अर्थ स्पष्ट है।

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती—जब किसी को इतनी थोड़ी वस्तु मिले जिससे उसकी कुछ भी तृप्ति न हो तब कहा जाता है।

और बात खोटी सही दाल-रोटी—दाल रोटी का ही यह सब धँधा है।

ककड़ीके चोरको फांसी नहीं दी जाती—साधारण अपराध पर मौतकी सजा नहीं दी जाती।

कंगाली में आटा गीला—विपत्ति पर विपत्ति पड़ने पर।

कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक विपत्ति से छूटकर दूसरी विपत्ति में पड़ना।

कण्टकेनैव कण्टकम्—कांटे से ही कांटा निकाला जाता है।

कद्र खो देता है हर बारका आना जाना - किसी स्थान पर बार-बार जाने से आतिथ्य भाव नहीं रहता।

कभी नाव गाड़ीपर, कभी गाड़ी नावपर—समय एकसा नहीं रहता है। सच है, कभी......।

कमान का निकला तीर और मुहसे निकली बात वापिस नहीं आती—जब बात मुहसे निकल जाती है तब फिर पीछे नहीं आती।

करम हीन खेती करे, मरे बैल या सूखा पड़े—भाग्यहीन का कोई भी काय सिद्ध नहीं होता।

कर सेवा पा मेवा—बड़ोंकी आज्ञा पालन करनेसे लाभ होता है।

करम प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा या जैसी करनी वैसी भरनी—जो जैसा करेगा, वैसा ही फल पायेगा।

कहने से करना भला—काम करना अच्छा होता है, बातें बनानेसे क्या ?

काटो तो खून नहीं--भयके कारण सन्न हो जानेपर।

काजलकी कोठरीमें कैसोहू सयानो जाय एक लीक काजलकी लागिहै पै लागिहै—बदमाशोंके साथ बैठनेसे कुछ न कुछ बदमाशी अवश्य आयगी।

काजी जी दूबले क्यों शहरके अंदेशेसे जो अपना सोच न करके शहर-भरका सोच करता है उसे कहा जाता है।

काठकी हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती—ठगबाजी एक ही बार चलती है।

कान छिदायसो गुड़ खाय—जो कष्ट उठाता है सुख भी वही पाता है। मिनीस्टर बन गया है तो क्या, उसने त्याग किये हैं तुम भी करो तुम भी मिनीस्टर बन जाओगे, कान……।

काबुलमें क्या गधे नहीं होते—बुराई सब जगह होती है।

कामका न काजका दुश्मन अनाजका—निठल्ला मनुष्य।

कब्रका मुह झांक कर आये हैं—कालके मुहसे बचकर आये हैं।

कम खर्च बालानशीन—कम दाममें बढ़िया चीज। उसने केवल तीस रुपयेमें कितनी अच्छी अलमारी बनवा ली, इसीको कहते हैं कम…… बालानशीन।

करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बिचारा खाय—जब मनुष्य अपना काम छोड़कर व्यर्थके झगड़ेमें पड़ता है और उससे नुकसान उठाता है, तब कहते हैं।

करनी खाककी बात लाखकी—जो करे कुछ नहीं बातें बहुत बनावे।

कड़ुएसे मिलिये मीठेसे डरिये—कटुवचन कहनेवाला सच्चा। मीठी बातें करनेवाला खुशामदी होता है।

कर्जदार छाती पर सवार—जिसका पावना होता है वह हर वक्त देनदारकी छाती पर सवार रहता है।

कलालकी दूकानपर पानी भी पीओ तो शराबका गुमान होता है—बुरी जगह बैठनेहीसे कलंक लगता है।

कहां राजा भोज कहाँ गंगा तेली—यह व्यंगात्मक कहावत है। जब दो असमानताएं होती हैं तब कहा जाता है।

कहेसे धोबी गधेपर नहीं चढ़ता—जब कोई कहनेसे नहीं, अपनी इच्छासे काम करता हो।

कहींका ईंट कहींका रोड़ा, भानमतीका कुनबा जोड़ा—जब कोई अनावश्यक वस्तुओंको एकत्र करके एक व्यर्थकी चीज तैयार कर लेता है।

कागजकी नाव नहीं चलती—अधिक दिन तक न ठहरनेवाली वस्तु। बेईमानीका काम अधिक दिन नहीं ठहरता।

काटा और उलट गया—कहा और पलट गया अर्थात् बुराई बढ़ा दी है।

कामको काम सिखाता है—काम करने ही से काम आता है।

काम न धंधा तीन रोटी बंधा—काम धाम न करना अपना पेट भरना।

काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं—काम प्यारा है रूप नहीं। जब कोई मनके अनुसार काम नहीं करता तब कहते हैं। जब आप साठ रुपये महीने में पाते हैं तब आपको पूरी जिम्मेदारीसे काम करना चाहिये। जानते हैं, काम......नही।

काम जो आवे कामरी का ले करै कुमांच—जब कम्बलसे ही काम चल जाय तो रेशमी कपड़े की कौन आवश्यकता है।

का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनिका पछिताने—अर्थ स्पष्ट है।

कासा दीजै, बासा न दीजै—अपरिचित को भोजन दे लेकिन घरमें स्थान न दे।

काला अक्षर भैंस बराबर—बे पढ़े लिखे आदमी को कहते हैं। पढ़ाई लिखाईमें तो काला अक्षर भैंस बराबर पर आदमी अनुभवी है।

किस खेत की मूली—नगण्य। मैंने बड़े-बड़े के छके छुड़ा दिये तुम किस खेतकी मूली हो।

किसी की कुछ नहीं चलती कि जब तकदीर फिरती है—भाग्यके आगे किसी का वश नहीं चलता।

किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान—नौकरीमें मान नहीं रहता क्यों कि ज्यादातर मालिक नौकर को कुछ नहीं समझते।

कुछ कमान झुके कुछ गोसा—झगड़ में दोनों दल थोड़ी-थोड़ी हानि सहे तो निपटारा हो जाता है।

कुछ खोकर ही अक्ल आती है—बिना ठोकर खाये मनुष्य की बुद्धि नहीं बढ़ती।

कुत्ता भी दुम हिला कर बैठता है—सफाई सब को प्रिय है, गन्दे मनुष्य से कहा जाता है।

कुतिया चोरों मिल गई पहरा किसका दे—जब रक्षक ही चोरों से मिल जाय तो रखवाली क्या हो?

कुत्तेकी दुम बारह वर्ष नलमें रक्खी तो भी रही टेढ़ी की टेढ़ी—कुटिल पुरुष कभी सीधा नहीं हो सकता।

कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते—महापुरुष क्षुद्रों के बुरा भला कहने से क्षुब्ध नहीं होते।

कुत्ते को घी हजम नहीं होता—ओछा आदमी सम्पत्ति या पद पा कर छिपा नहीं सकता।

कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है—सब अपनी वस्तु को अच्छी बताते हैं।

कै हंसा मोती चुगे कै भूखों मर जाहिं—प्रतिष्ठित मनुष्य प्रतिष्ठा के साथ ही समय व्यतीत करते हैं; उन्हें जानसे आन प्यारी होती है।

कोयला होय न ऊजला सौ मन साबुन धोय— हजार उपाय करने पर भी नीच पुरुष अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

कोउ नृप होय हमैं का हानी, चेरी छोड़ नहि होयब रानी—किसी को भी लाभ हो, हमें तो कुछ मिलना ही नहीं।

कोठी वाला रोवे छप्पर वाला सोवे— धनी बेचैन और गरीब निश्चिन्त रहता है।

क्या पिद्‌दी क्या पिद्‌दी का शोरबा— तुच्छ वस्तु से बड़ा कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

कोयलेकी दलालीमें हाथ काले— संगतका प्रभाव अवश्य पड़ता है।

कौआ चला हंस की चाल—साधारण आदमी बड़ोंकी नकल करता है तब कहा जाता है।

कौड़ीके तीन—सस्ता, निकम्मा।

कौनसी चक्कीका पीसा खाया है—बहुत मोटे आदमीको कहते हैं।

क्या पानी मथनेसे घी निकलता है— कंजूस व्यक्तिको कहते हैं।

क्या मुँहसे फूल झड़ते हैं—जब कोई मुखसे कटुवचन निकालता हो तब उसे व्यंगसे कहा जाता है।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है— जब कोई देखा-देखी शौक करे तब।

खरी मजूरी चोखा काम—पूरी मजूरी देने से काम अच्छा होता है।

खाओ वहां तो पानी पियो यहां— जल्दी काम करके आओ !

खाक डाले चांद नहीं छिपता—कीतिमान मनुष्य की निन्दा करने से उसकी कीति में बट्टा नहीं लगता।

खाय सो पछताय न खाय सो पछताय जो चीज ऊपर से रमणीय तथा भीतरसे खराब हो उसके ग्रहण करनेमें पश्चात्ताप होता है।

खग जाने खग ही की भाषा—जो जिसकी संगतमें रहता है, वह उसीका हाल जानता है।

खर गुड़ एक ही भाव—जहां भले बुरेका विचार न हो वहां कहा जाता है।

खलककी जबान खुदाका नक्कारा—जनताकी रायको ईश्वरका हुक्म समझना चाहिये।

खाल ओढ़ाये सिंहकी स्यार सिंह नहिं होय—केवल रूप बदल देनेसे गुण नहीं बदलता।

खानेके दांत और दिखानेके और—ऊपरसे शिष्टाचार और भीतरमें कपट। जब कोई कहे कुछ और करे कुछ तब कहा जाता है।

खानेको पीछे नहानेको पहिले—भोजन करनेके पहिले नहाना आवश्यक है।

खाइये मन भाता, पहनिये जग भाता—अपनी तबीअतका खाना और दूसरोंकी पसंद का पहनना चाहिये।

खिचड़ी माँगे चार यार, दही पापड़ घी अचार—ये चार चीजें खिचड़ीके साथ खानेमें अच्छी लगती हैं।

खिलायेका नाम नहीं, रुलायेका नाम—पराये लड़केको खिलानेमें कोई नेकनामी नहीं, रुलानेमें बदनामी होती है।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—शर्मिंदा होकर क्रोध करने पर।

खुदा गंजेको नाखून न दे—अनधिकारीको कोई अधिकार न मिलना चाहिये।

खुशामदसे ही आमद है—खुशामदसे ही काम बनता है।

खूंटेके बल बछड़ा कूदे—दूसरेकी शह पर अकड़ना।

खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो—जब दो व्यक्ति एक स्वभावके मिल जांय तो बड़े आरामसे गुजरती है।

खेती खसम सेती—खेती या रोजगार मालिककी निगरानीसे ही ठीक रहता है।

खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आता है—निकम्मोसे निकम्मी चीज भी किसी न किसी समय बड़े काम आती है।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया—बहुत परिश्रम करने पर थोड़ासा लाभ हो तब।

गंगा गये गंगाराम जमुना गये जमुनादास—जिस पुरुषका अपना कोई सिद्धान्त न हो।

गंजेड़ी यार किसके, दम लगाया खिसके—स्वार्थी मनुष्य किसीके साथी नहीं होते।

गधा खेत खाय और जुलाहा मारा जाय—अपराध एक करे और दंड कोई दूसरा भुगते।

गधा धोनेसे बछड़ा नहीं होता—कितना भी यत्न करो मनुष्यको भगवानने जैसा बनाया है वह वैसा ही रहता है।

गये थे रोजा छुड़ाने नमाज गले पड़ी—जब कोई व्यक्ति सुखके लिये कोई काम करे और उलटे दुःख झेले तब कहा जाता है।

गरीबको सब कोई कहते हैं, बड़े आदमीको कोई नहीं

कहता—जब गरीब मनुष्यकी साधारणसी गलती पर उसकी निन्दाकी जाय और बड़े आदमीकी भयङ्कर भूल भी पर कोई चूं तक न करे।

गरीबकी हाय बुरी है— गरीबको दुःख नहीं पहुंचाना चाहिये।

गरीबने रोजे रोजे रखे तो दिन भी बड़े हो गये— गरीबको सभी दुःखदायी होते हैं।

गरीब तेरे तीन नाम झूठा, पाजी, बेईमान— गरीब आदमी को सब तरह के दोष लगाये जा सकते हैं।

गरीबों ने रोजे रखे तो दिन ही बड़े हो गये—गरीब को सदा दुःख ही दुःख है।

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त— इन गवाहों पर कही जाती है जो रुपये लेकर झूठी गवाही देनेके लिये अदालतमें हाजिर रहते हैं।

गांठमें जमा रहे तो खातिर जमा रहे— धन पासमें रहनेसे किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं रहती।

गीदड़की शामत आये तो गांवकी ओर भागे— जब होनहार अच्छा नहीं होता तब बुद्धि भी उल्टी हो जाती है।

गुनाह बे लज्जत— बुरा काम करके भी कुछ सुख न मिले तब कहा जाता है।

गुड़ खाय गुलगुलोंसे परहेज—बनावटी परहेज करने पर कहा जाता है।

गुरू गुर ही रहे चेला चीनी हो गये— जब चेला गुरूसे भी बढ़ जाय तब कहते हैं।

गोदमें बैठकर आँखमें उंगली—कृतघ्न मनुष्यको कहते हैं।

गोदमें लड़का शहर भर ढिंढोरा— निकट रक्खी हुई वस्तुको खोया हुआ समझकर इधर-उधर ढूंढ़ना।

गोउर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—जब कोई देनदार रुपये देनेके समय किसी तरहकी अड़चन डाल दे तब कहा जाता है।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—भूली हुई बात याद दिलाना, जब कोई गुजरी हुई बात याद दिला कर झगड़ा करना चाहे तब कहते हैं।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं—समय पर न चूकना चाहिये।

गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दे—समझानेसे मान जाय तो दंड क्यों दें?

गुड़ न दें तो गुड़की सी बात तो करे—चाहे कुछ न दे पर जबानसे तो मीठा बोले।

गोकुलसे मथुरा न्यारा—परस्पर सम्बन्ध न होना।

घरकी मुर्गी दाल बराबर—घरकी चीजकी कदर नहीं होती।

घरके पीरोंको तेलका मलीदा—जब बाहरके आदमीसे अच्छा बर्ताव किया जाय और घरवालोंसे बुरा, तब कहा जाता है।

घर घर यही लेखा—सब घरों में एक ही हाल है।

घरका भेदी लङ्का ढावे—आपस में फूट होने से सब तरह का नुकसान होता है।

घर में चिराग नहीं बाहर में मसाल—झूठी भड़क दिखानेवाले को कहते हैं।

घरमें दीया तो मस्जिद में दीया—पहिले अपना घर संभालना चाहिये फिर बाहर की फिक्र करनी चाहिये।

घरमें नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने—झूठे दिखावे पर कहते हैं।

घी कहां गया खिचड़ी में—अपनी वस्तु जब अपने ही काम आवे तब कहा जाता है।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो—इज्जत संभाल कर खर्च करो।

घोड़ा घुड़साल ही में बिकता है—जहांकी चीज वहीं बिकती है।

घरकी आधी भली बाहरकी सारी कुछ नहीं—सुस्त आदमीको कहते हैं; जिनसे विदेश जाकर कुछ रोजगार नहीं होता।

घरका जोगी जोगड़ा आन गाँवका सिद्ध—चाहे कितना भी विद्वान क्यों न हो पर आदमीकी अपने देशमें उतनी कदर नहीं होती जितनी परदेशमें।

घर आये कुत्तेको भी नहीं निकालते—घर आने पर किसीका अपमान नहीं किया जाता।

घरकी खेती—आसानीसे मिलनेवाला पदार्थ।

घरकी खाँड़ किरकिरी लागे चोरीका गुड़ मीठा—घरकी वस्तुसे अरुचि हो और बुरे ढंगसे प्राप्त वस्तु अच्छी लगे।

घर खीर तो बाहर खीर—घरमें माल है तो बाहर भी आदर होगा।

घोड़ा घाससे यारी करे तो खाय क्या—व्यापारमें नफा न लेनेसे काम नहीं चलता।

चंदनकी चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—अच्छी वस्तु थोड़ी ही अच्छी बेकाम बहुत नहीं।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—कंजूसके लिये कहा जाता है।

चाँद को भी ग्रहण लगता है—बड़ों बड़ोंको लांछन लगता है।

चाकरी में नाकरी क्या—नौकरीमें इन्कार नहीं हो सकता।

चार दिन की चाँदनी फिर अन्धेरी रात—सुखके दिन ज्यादा नहीं ठहरते।

चिकने घड़ेपर पानी नहीं ठहरता—निर्लज्ज पर बातका असर नहीं पड़ता।

चिराग तले अंधेरा—ऐसे स्थानमें अंधेर हो जहां उसकी संभावना न हो।

चींटी चाहे सागर थाह—मामूली व्यक्तिका भारी काम करना। वह कम्पोजीटरी करते २ रिसर्च स्कालर बनने जा रहा है, इसीको कहते हैं, चींटी चाहे ......।

चुल्लूमें उल्लू, लोटेमें गड़गप—नशेबाजोंके लिये कहा जाता है।

चूल्हेका फूंकना और दाढ़ी रखना—दोनों काम असंभव है।

चूल्हेकी है न चक्कीकी—जो स्त्री न खाना बना सके न घरका कोई काम कर सके। आजकलकी शिक्षिता महिलाएं न चूल्हेकी हैं......।

चूहेका बच्चा बिल ही खोदता है—जाति स्वभाव बना रहता है।

चूहेके चामसे कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं ?—छोटेसे कहीं बड़ा काम होता है ?

चोट्टी कुतिया जलेबियोंकी रखवाली—चोर रक्षकसे रखवाली नहीं होती।

चोरकी दाढ़ीमें तिनका—चोर संशयी होता है।

चोर चोर मौसेरे भाई—एक पेशे और स्वभाववाले आपसमें जल्दी मिल जाते हैं।

चोरके पैर नहीं होते—चोरका मन दुर्बल होता है।

चोरीका माल मोरीमें—अनाचारसे प्राप्त धन बुरे कामोंमें खर्च होता है।

छछूँदरके सिरमें चमेलीका तेल—किसी अयोग्य पुरुषको बहुत अच्छी चीज मिल जाय तब कहा जाता है।

छटाँक चून चौबारे रसोई—झूठी शान बघारनेवालेको कहा जाता है।

छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजा कटा, खरबूजा छुरी पर गिरे तो खरबूजा कटा—जब दोनों ही तरहसे नुकसान हो तब कहा जाता है।

छोटे मुह बड़ी बात—जब कोई व्यक्ति योग्यतासे बढ़ चढ़कर बातें बनाता है।

छोटे मियाँ सो छोटे मियाँ बढ़े मियाँ सुभान अल्लाह—जब बड़ेमें छोटेसे ज्यादा ऐब हों।

जगमें देखन का ही नाता—प्राण रहने तक ही संसारमें नाता रहता है।

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी—माता और मातृ भूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर है।

जलमें रहकर मगर से बैर—जिसके शासनमें रहे उसीसे दुश्मनी करे।

जने जनेकी लकड़ी एक जनेका बोझ—थोड़ा-थोड़ा देनेसे ही गरीबको सहायता हो जाती है।

जहां की मिट्टी वहीं ले जाती है—जहां मौत होती है आदमी वहीं चला जाता है।

जहां गुड़ होगा वहीं चींटियां होंगी—जहां कुछ मिलनेकी आशा होगी लोग वहीं जमा होंगे।

जहां जांय बाले मियां तहां जाय पूँछ—बड़े आदमी के साथ कोई न कोई पुछल्ला अवश्य रहता है।

जहां चार बासन होंगे वहीं खड़कंगे—जहां दो चार आदमी रहते हैं, झगड़ा हो ही जाता है।

जहां मुर्गा नहीं होता वहां क्या सवेरा नहीं होता—किसी खास व्यक्तिके बिना किसीका काम थोड़े ही अटक सकता है।

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी—मनुष्य अपनी प्रकृतिके अनुसार ईश्वर-रूपकी झांकी देखते हैं।

जाके पांव न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई—जिसने कष्ट न उठाया हो दूसरेका कष्ट क्या समझेगा?

जाको राखे साइयां मार न सकि हैं कोय, बाल न बांका कर सके जो जग वैरी होय—भगवान जिसको बचाना चाहे संसार उसका कुछ नहीं कर सकता।

जानवरोंमें कौआ और मनुष्यों में नौआ—पक्षियोंमें कौआ, मनुष्योंमें नाई धूर्त समझे जाते हैं।

जाय लाख रहे साख—चाहे लाखों रुपये चले जांय पर साख बनी रहे।

जबाँ शीरी मुल्क गीरी—मीठी जबानसे जहानको वशमें किया जा सकता है।

जबान ही हाथी चढ़ावे जबान ही सिर कटावे—बातचीतसे ही उन्नति और अवनति होती है।

जमात करामात—संगठनमें अपूर्व चमत्कार है।

जब दाँत न थे तब दूध दियो जब दाँत दिये तब अन्न न देहैं—गरीबको भगवान् पर भरोसा रखनेके लिये कहा जाता है।

जलकी मछली जलमें ही भली—जो वस्तु जहांकी हो वहीं अच्छी लगती है।

जस दूल्हा तस बनी बराता—जैसेको तैसा साथी।

जहँ जहँ चरण पड़े सन्तनके तहँ तहँ बंटाधार करँ—मनहूस जहां जाता है, काम चौपट करता है।

जहाँ गुल है वहाँ काटा भी है—गुणके साथ कभी-कभी अवगुण भी रहता है।

जहाँ न पहुंचे रवि तहाँ पहुंचे कवि—जहां सूरजकी पहुंच नहीं है, कवि उस कल्पना लोक तक पहुंच जाते हैं।

जब अपनी उतार ली तो दूसरेकी उतारनेमें क्या लगता है—जो अपनी इज्जत खो चुका वह दूसरेकी इज्जत भी बरबाद कर सकता है।

जब तक जीना तब तक सीना—जब तक जीवन है तब तक सांसारिक झंझट लगे ही रहते हैं।

जब तक साँसा तब तक आशा—मरने तक आशासे पिण्ड नहीं छूटता।

जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है—भगवान देना चाहता है तो दे ही देता है।

जबरदस्त मारे और रोने न दे—निर्बलको शक्तिमान सताता है पर रोने नहीं देता।

जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो—जितनी समाई हो उतना ही खर्च करना चाहिये।

जिसकी बँदरी वही नचावे—जिसका काम है वही कर सकता है।

जितने मुह उतनी बात—जब हर एकका कथन भिन्न २ हो।

जिसके हाथ लोई उसका सब कोई—जिसके पास धन होता है सब उसीको खुशामद करते हैं।

जिस डालपर बैठे उसी को काटे—जिससे उपकार हो, उसका अपकार करने पर कहा जाता है।

जीभ जली पर स्वाद न आया—जब किसी को स्वाद न मिले और जबान जल जाय।

जूँ के डरसे गुदड़ी नहीं फेंकी जाती—जरा-सी तकलीफ के लिये काम नहीं छोड़ा जाता।

जे न मित्र दुःख हो हिं दुखारी, तिनहिं विलोकत पातक भारी—जो बन्धुके दुःखमें साथ नहीं देता उसका मुह देखना पाप है।

जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ—जब दो आदमी एकसे हों तब कहा जाता है।

जैसा देश वैसा भेष—जैसा देश हो वैसा ही भेष होना चाहिये।

जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी दीजे—देश-कालके अनुसार चलना चाहिये।

जैसा काम वैसा दाम—जैसी मजदूरी होगी वैसा काम भी होगा।

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं—डींग मारने वाले काम नहीं करते।

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोई तू फूल, तोहि फूल के फूल हैं वाको है तिरसूल—बुराई करने वालेके साथ भी भलाई करनी चाहिये।

ज्यों केरा के पात में पात पात में पात, त्यों ज्ञानीकी बात में बात बात में बात—ज्ञानीकी बातमें करामात होती है।

ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय—जब कर्जका सूद भी अदा न किया जाय तब कहा जाता है।

झूठे का मुह काला सच्चेका बोल बाला—झूठा हारता है और सच्चा जीतता है।

झूठेके पांव नहीं होते—झूठेके हृदयमें साहस नहीं होता।

झोंपड़ीमें रहे महलोंका ख्वाब देखे—बहुत ऊंची आकांक्षा होना।

टकेका सब खेल है—रुपये हीसे सारा काम बनता है।

टका हो जिसके हाथमें वह बड़ा हो जातमें—धनीका आदर सब जगह होता है।

टेढ़ी अंगुलीसे ही घी निकलता है—सीधेपनसे कुछ नहीं होता जाता।

टेढ़ी खीर—मुश्किल काम। महाभारत कण्ठस्थ करना टेढ़ी खीर है।

ठंढा लोहा गरम लोहेको काट देता है—शान्त प्रकृतिवाला गम मिजाज वालेपर शासन कर सकता है।

ठाला बनिया क्या करे इस कोठीका धान उस कोठीमें धरे—जब कोई फालतू काम करता है, तब कहा जाता है।

ठोकर लगी पहाड़की, तोड़े घरकी सिल—जब कोई किसी बलवान द्वारा अपमानित होनेपर उसका बदला घरवालोंसे लेता है।

डायन भी अपने बच्चेको नहीं खाती—अपने बच्चेको बुरीसे बुरी औरत भी प्यार करती है।

ढाकके वही तीन पात—जो व्यक्ति हमेशा मामूली हालतमें रहे।

ढपोर संख—जवानी जमा खच करनेवाला।

तकल्लुफमें हैं तकलीफ सरासर—अधिक शिष्टाचार करनेसे हानि होती है।

तकाजेका हुक्का भी नहीं पिया जाता—उधारकी वस्तु दुःखदायक होती है।

तड़केका भूला सांझको घर आजाय तो वह भूला नहीं कहाता—जब कोई भूलसे गलती कर बैठे और फिर उसे सुधार ले तब कहा जाता है।

तनको कपड़ा न पेटको रोटी—जिसके पास न कपड़ा हो न रोटी।

तलवारका घाव भरता है बातका घाव नहीं भरता—अर्थ स्पष्ट।

तबेलेकी बला बन्दरके सिर—किसीका दोष दूसरेके मत्थे मढ़ा जाय तब कहते हैं।

ताक पर बैठा उल्लू मांगे भर भर चुल्लू—जब कोई अयोग्य मनुष्य ऊँचे स्थानपर बैठकर हुक्म चलावे।

तिनके की ओट पहाड़—मनुष्य दुनियाकी सब बातें देखकर भी नहीं जान सकता।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजो बार—स्त्रीका विवाह और दृढ़ पुरुषकी प्रतिज्ञा एक ही बार होती है।

तीन कनौजिये तेरह चूल्हे—कान्यकुब्ज ब्राह्मणोंमें खान-पानका बहुत विचार रहता है उन्हीं पर व्यङ्ग है।

तीन गुनाह खुदा भी बख्सता है—जब कोई गलती करे और माफी मांगे तब कहा जाता है।

तीनमें न तेरहमें मृदंग बजाने डेरेमें जो व्यक्ति किसी झंझट में न रहे और अकेला आनन्द करे।

तीन बुलाये तेरह आये दे दालमें पानी—अधिक आदमियोंके आ जानेपर कहा जाता है।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही—जब किसी कार्यके सफल होनेकी संभावना कम हो तो कार्य करते समय कहा जाता है।

तुझे पराई क्या पड़ी अपनी आप निबेड़—जब कोई दूसरेके काममें हस्तक्षेप करता है तब कहा जाता है।

तुरत दान महा कल्यान—जो काम करना हो तुरत कर डालना चाहिये।

तुम्हारे मुहमें घी शक्कर—आनन्द समाचार सुनने पर कहा जाता है।

तू डाल डाल मैं पात पात—चालाकसे चालाककी मुठभेड़ होने पर कहा जाता है, हमसे बात क्या छिपाते हो तुम......

तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरे कुएका पानी—आराम तलब औरतों के निकम्मे पनको लखकर कहा जाता है।

तेल तिलोंसे ही निकलता है—जो दे सकता है, वही देता है।

तेलीका तेल जले मसालचीका दिल जले—जब किसीका खर्च हो और किसी अन्यको दुख हो।

तेलीके बैलको घरही कोस पचास—जो घरमें ही दिन रात काममें जुटा रहता हो उसे कहा जाता है।

तेज घोड़ेको एड़ कैसी?—जो खुद काम करता हो उसको कहनेकी जरूरत नहीं है।

तेते पाँव पसारिए जेतो लाँबी सौर—जितनी समाई हो उतना पैर पसारना चाहिये।

तेली खसम किया और फिर भी रूखा खाया—धनीका आश्रय लेकर भी कष्टसे छुटकारा न होने पर।

थका ऊंट सराय ताकता है—परिश्रम करनेके बाद आराम करने की इच्छा होती है।

थूकसे सत्तू नहीं सनता—जरासे सामानसे बड़ा काम नहीं होता।

थोथे फटके उड़ उड़ जाय—छोटे-ओछे आदमी परीक्षामें नहीं ठहरते।

दबेपर चींटी भी चोट करती है—सतानेसे कमजोर भी आक्रमण करता है।

दमड़ीकी घोड़ी छः पसेरी दाना—जितनेकी चीज न हो उससे अधिक खर्च हो तब कहा जाता है।

दर्जीकी सूई कभी ताशमें कभी टाटमें—काम करनेवाला कभी बेकार नहीं रहता।

दलालका दिवाला क्या, मस्जिदमें ताला क्या—दलाल बिना पूंजी काम करता है इसलिये उसका क्या दिवाला निकलेगा।

दादा कहनेसे बनिया गुड़ देता है—खुशामदसे खुदा राजी है।

दादा ले और पोता बरते—बहुत मजबूत वस्तु है।

दानकी बछियाके दाँत नहीं देखे जाते—मुफ्त मिली हुई चीजमें गुण नहीं खोजे जाते।

दाना दुश्मन नादान दोस्तसे बेहतर—बेवकूफ दोस्तसे अक्ल-मन्द दुश्मन अच्छा।

दाने-पानीका अख्तियार है—सब अन्नजलके अधीन है।

दाम सँवारे काम—धनसे सब काम हो जाते हैं।

दाल-भातमें मूसलचन्द—दो मनुष्योंकी बातचीतमें अवांछित मनुष्य आ जाय तब कहा जाता है।

दिन जाते देर नहीं लगती—वक्त बहुत जल्दी बीतता है।

दिनन के फेर से सुमेरु भी होत माटी को—बुरे दिनोंमें सोना भी मिट्टी हो जाता है।

दिन ईद और रात शबरात—रात दिन प्रसन्न रहने वालेके लिये कहा जाता है।

दिनको सोवे रोजी खोवे—दिनमें सोनेसे रोजी जाती है।

दिया दान मांगे मुसलमान—दान देकर मांगने वालेपर यह व्यङ्ग किया जाता है।

दिलके फफोले फोड़ना—गुबार निकलने पर कहा जाता है।

दीवाल रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ेंगे—आधार रहेगा तो आधेय बहुत होंगे।

दुधार गऊ की लात भी भली—जिससे लाभ होता है उसकी दो चार खरी खोटी बातें भी सुन ली जाती हैं।

दुनियांका मुह किसने बन्द किया है—दुनियाका मुह कोई बन्द नहीं कर सकता।

दूधका जला छाछ फूक कर पीता है—एक बार नुकसान होने पर मनुष्य डर-डर काम कर सकता है।

दूरके ढोल सुहावने—दूरकी चीजें सुभावनी मालूम पड़ती है।

दूधका दूध पानीका पानी—इंसाफ करने पर कहा जाता है।

दूरके ढोल सुहावने—जब तक किसी व्यक्ति या वस्तुका वास्तविक अनुभव न हो तब तक वह दूर भली लगती है।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी खास घटनाका फल क्या होता है?

देरायद दुरुस्तायद—देरसे समझ बूझकर जो काम किया जाता है ठीक होता है।

देखनेमें ना सो चखनेमें क्या—जो चीज देखने लायक नहीं वह खाने लायक कैसे होगी ?

देना थोड़ा दिलासा बहुत—आशा बहुत, देना जरा-सा।

देशी कुतिया विलायती बोली—विदेशी भाषा बोलने वालेसे कहा जाता है।

दैवोपि दुर्बल-घातकः—दैव भी दुबलको ही कष्ट देता है।

दो घरका पाहुना भूखा ही रहता है—एक पर ही आश्रित रहना चाहिये।

दोनों तरहसे मौत है—हर तरहसे मुश्किल है।

दोनों हाथोंमें लड्डू है—दोनों तरह फायदा है।

दो मुल्लोंमें मुर्गी हलाल—दो के झगड़ेमें तीसरेका नुकसान।

दोस्तीमें लेन देन बैरका मूल—दोस्तोंमें लेन-देन अच्छा नहीं।

दौलतमंदकी पीढ़ी पर सब सिजदा करते हैं—धनीकी तारीफ सब करते हैं।

धनवंतीके काँटा लगा, दौड़े लोग हजार, निर्धन गिरा पहाड़से कोई न आया कार--धनवानोंको सब पूछते हैं गरीबको कोई नहीं।

धानका गांव पुआलसे जाना जाता है—बाहिरी दिखावासे भी भीतरी गुरुताका पता लगता है।

धी पराई आँख लजाई—कन्याका विवाह कर देने पर समधीसे दबना पड़ता है।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी आपत काल परखिये चारी—इनकी परीक्षा विपत्तिमें होती है।

धूपमें बाल सफेद नहीं किये हैं—उम्र योंही नहीं गंवाई, अनुभव प्राप्त किया है।

धोबिन पर बस न चले गधैयाके कान उमेठे—जब बलवान पर बस न चले और निर्बल पर जोर दिखावे तब कहा जाता है।

धोबीका कुत्ता घरका न घाटका—जो कहींका न हो।

धोबी रोये धुलाईको मियां रोये कपड़ेको—जहां दोनां पक्ष अपना दुःखड़ा रोयें।

धोये ही सौ बारके काजर होय न सेत—सौ बार धोनेपर भी काजल सफेद नहीं होता।

नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज कौन सुनता है—बड़े आदमीके आगे गरीब की कोई नहीं सुनता।

नया मुसल्ला अल्लाह अल्लाह पुकारे—नये मत में जोश अधिक होता है।

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी—झमेले के मूल का कारण को नष्ट कर देना।

नंगे बड़े परमेश्वरसे—नंगे से सब डरते हैं इसलिये उसे परमेश्वरसे बड़ा कहा जाता है।

नंगी क्या नहाएगी और क्या निचोड़ेगी—गरीब किसी को क्या देगा?

न इधर के रहे न उधर के रहे—जब किसी ओर कोई सहारा न रहे तब कहा जाता है।

नटनी जब बाँस पर चढ़ी तो घूँघट क्या—जब बेशर्मी का काम शुरू कर दिया तो शर्म क्या?

नदीमें रहना मगरसे बैर—'जलमें रह कर मगरसे बैर।'

नदी नाव संयोग—संयोग से भेट होने पर।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—ऐसी सत पर काम करने की हामी भरना जिसका पूरा होना मुश्किल हो।

नया नौ दिन पुराना सौ दिन—नयी चीज कुछ दिन, पुरानी चीज ज्यादा दिन ठहरती है।

नाई-नाई! वाल कितने? जजमान! अभी सामने आ जायगे—ऐसी बात जिसका फल तुरत सामने आने वाला हो।

नाई की बारात में जने जने ठाकुर—नाई को ठाकुर भी कहते हैं, और नाई की बारात में नाई ही रहते हैं तो सेवा टहल कौन करे?

नाक कटी पर हठ न हटी—जिद्दी नुकसान उठाकर भी जिद नहीं छोड़ता।

नाक दवानेसे मुँह खुलता है—बिना दवावके काम नहीं बनता।

नाक कटी पर घी तो चाटा—बेशर्म मनुष्यसे कहते हैं।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा—काम करना न आवे और झूठे वहाने बतावे तब कहा जाता है।

नीम हकीम खतरा-ए-जान—अधूरा ज्ञान बहुत हानिकर होता है।

नेकी और पूछ पूछ—भलाई करते समय पूछना क्या?

नौ दिन चले अढ़ाई कोस—सुस्त आदमी को लक्ष कर कहा जाता है।

नौ नगद न तेरह उधार—नौ नगद अच्छा तेरह उधार नहीं।

नौकी लकड़ी नव्बेको धुलाई—जरा से काम में ज्यादा खर्च हानेपर।

पंच जहाँ परमेश्वर – जहां पंचोंका न्याय है वही भगवान हैं।

पंचोंका कहना सिर माथे पर परनाला वहीं का वहीं रहेगा—जिद्दी आदमी के लिये कहा जाता है।

पञ्च कहे बिल्ली तो बिल्ली ही सही—जो सबकी राय हो वही ठीक मानी जाय तब कहा जाता है।

पञ्चों और मसालची दोनोंकी उल्टी रीति, औरको दिखावें चांदनी आप अंधेरी बीच—पंच और मसालची खुद अंधेरे में रहते हैं पर दूसरे को राह दिखाते हैं।

पढ़े फारसी बेचे आटा, यह देखो किस्मत का घाटा—यदि पढ़ा-लिखा व्यक्ति कोई छोटा काम करे, तब कहा जाता है।

पढ़े तो हैं पर गुणे नहीं—व्यावहारिक ज्ञानहीन पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिये।

पत्थर को जोंक नहीं लगती—निठुर के हृदय में दया नहीं होती।

परोपकाराय सतां विभूतय—सज्जन साधु पुरुषों की सम्पत्ति दूसरोंके उपकार के लिये होती है

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे—उपदेश देने वाले बहुत हैं पर उपदेश के अनुसार आचरण करने वाले विरले हैं।

पराधीन सपनेहु सुख नाहीं—पराधीनता में सपने में भी सुख नहीं है।

पहले आत्मा पीछे परमात्मा—पहले आत्मीय देखो फिर परको।

पांच पञ्च मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज—अर्थ स्पष्ट है।

पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं—सब आदमी एक से नहीं होते।

पाँच सवारोंमें भर्ती होना—साधारण मनुष्य का ऊंचे दर्जे के मनुष्यों में मिलने की कोशिश करना।

पागलों के सिर सींग नहीं होते—पागल के शरीर पर पागलपन का कोई विशेष चिह्न नहीं होता।

पास का कुत्ता दूर का भाई—दूर के भाई से पास का कुत्ता अच्छा।

पानी पीकर जात पूछना—काम करने पर शंका करना।

पानी मथनेसे घी नहीं मिलता—मूर्ख को उपदेश देने से लाभ नहीं।

पिये रुधिर पय ना पिये लगी पयोधर जोंक—दुष्ट स्वभाव नष्ट नहीं होता।

पीर बबर्ची भिश्ती खर—ब्राह्मणों के लिये यह कहावत प्रसिद्ध है।

पूत के पांव पालने में पहिचाने जाते हैं—बचपन में ही लड़के का भविष्य झलकने लगता है।

पूछते-पूछते दिल्ली चले जाते हैं—जिसे चाह है उसके लिये राह है।

पूत आपनो सबको प्यारो—अपनी सन्तान सबको प्यारी है।

प्यासा कुएँ के पास जाता है कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता—जिसे गरज़ होती है वही आता है।

पेट जो चाहे सो करावे—पेट के पालने के लिये सब तरह के अच्छे बुरे काम करने पड़ते हैं।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है— मतलबी मनुष्यसे कहते हैं।

प्रभुता पाई काहि मद नाहीं—अधिकार पाकर किसको गर्व नहीं होता।

प्रेममें नेम कहाँ—प्रेममें नियम नहीं चलता।

फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता—अर्थ साफ है।

फतह और शिकस्त खुदाके हाथ है—हार जीत भगवानके हाथ है।

फटक चन्द गिरधारी, जिनके पास न लोटा थारी—अकेला फलिस मुआदमी।

फिसल पड़े तो हरगंगा—असावधानीके कारण फिसल पड़े तो कहा जान कर गिरे हैं।

फूल टहनी ही में अच्छा लगता है—अपने स्थान पर ही वस्तु शोभा पाती है।

बड़ोंके कान होते हैं आँख नहीं—बड़े आदमी लोगोंकी बातें सुनकर ही चलते हैं उन्हें आंखोंसे देखनेका अवकाश कहां?

बकरी जानसे गई खानेवालेको मजा न आया—किसीके लिये अपने प्राण दे और वह उसका एहसान तक न माने।

बकरेकी मा कबतक खैर मनावेगी—जिसका विनाश अटल हो।

बड़े आदमीने दाल खाई तो कहा सादा मिजाज है, गरीब ने दाल खाई तो कहा, बड़ा कंगाल है—अर्थ स्पष्ट है।

बड़े चोरका हिस्सा नहीं—क्योंकि वह जितना चाहता है झपट लेता है।

बड़े बरतनकी खुर्चन भी बहुत है—बड़े आदमी चाहे कितने गरीब हो जायं पर उनके यहां कुछ न कुछ रहता ही है।

बद अच्छा बदनाम बुरा—बुरा बन जाना उतना नहीं अखरता जितना बदनामीका कलंक लगना।

बनिया भी अपना गुण छिपा कर रखता है जब कोई खुले आम काम करे तब कहते हैं।

बकरीने दूध दिया पर मेंगनी डालकर—उपकार करना पर मन दुखा देना।

बगलमें छुरी मुहमें राम—ऊपर मीठी बातें करे, मनमें दुश्मनी रखे।

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो—संसार जिसे ठीक कहे उसे ठीक समझो।

बड़ी फजर चूल्हे पर नजर—तड़का हुआ और खानेकी फिक्र हुई।

बड़ी मछली छोटी मछलीको खाती है—बलवान निर्बलको सताता है।

बड़े (ऊँचे) बोलका सिर नीचा—घमण्डीका पतन होता है।

बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ सुभान अल्लाह—जब छोटा बड़ेसे बढ़कर निकल जाय।

बड़ों के कहे का और आँवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है—इनका गुण कुछ समय बाद मालूम पड़ता है।

बन्दरके हाथ आइना—जो जिस चीजको कद्र न जानता हो वह चीज उसे मिल जाय तब कहते हैं।

बन्दर क्या जाने अदरकका स्वाद—जो किसी विशेष वस्तुकी कद्र न जानता हो।

बन गये के लाला जी और बिगड़ गये तो चूतिया—काम बन गया तो वाह वाह ! नहीं तो बुद्धू।

बनिक-पुत्र जाने कहां गढ़ लेवे की बात—बनियेका लड़का गढ़ विजय नहीं करता।

बनिये को सलाम बेगरज नहीं होती—बिना मतलबके बनिया आदर नहीं करता।

बहुत जोगिन मठ उजाड़—किसी एक काममें बहुत आदमी दस्तन्दाजी करते हैं तो वह बिगड़ जाता है।

बाँबीमें हाथ तू डाल मन्त्र मैं पढ़ूं—तुम जोखिम उठाओ, बिना खटकेका काम मैं करूंगा।

बाँह गहे की लाज—जिसका हाथ पकड़ लिया उसे निभाना चाहिये।

बाप न मारी गीदड़ी बेटा तीरंदाज—जो झूठो शेखी बघारता हो उसे चिढ़ानेके लिये कहते हैं।

बाप भला न भैया सबसे भला रुपैया—रुपया सबसे बढ़कर है।

बामन कुत्ता बानिया जब देखे गुर्राय—ब्राह्मण, कुत्ता और बनिया अपनी जातिवालोंसे डाह करते हैं।

भोर का मुर्गा बोला पंछीने मुह खोला—सबेरा हुआ और सबको पेट भरने की फिक्र लगी।

भौंर न छांड़े केतकी तीखे कंटक जान—जिसका जिससे प्रेम होता है, हजारों बाधाएं होने पर भी नहीं छोड़ता।

मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखते—उधार मिली हुई वस्तु के गुण नहीं देखे जाते।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखावे—जातिगत गुण स्वभावसे ही आ जाते हैं।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती- विचार-मात्र करने से ही काय सिद्ध नहीं हो जाता।

मन चंगा तो कठौती में गंगा—जिनका मन शुद्ध है, उसके लिये घरमें ही गंगा है।

मन भावे मूँड़ हिलावे—इच्छा होने पर भी इन्कार करने पर कहा जाता है।

मरज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की—किसी काय को सुधारने की जितनी ही चेष्टा की जाय वह उतना ही बिगड़ता जाय तब कहते हैं।

मरता क्या न करता—मौत सम्मुख देख सब कुछ बुरा भला करना पड़ता है।

मरे को मारे शाह मदार—देखो 'दैवोपि दुर्बल-घातकः'।

मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय—जहां जो चीज़ बहुत अधिक होती है, वहां उसका आदर नहीं होता।

महाजनो येन गतः स पंथा—महा पुरुष जिस पथ से गये हैं वही सच्चा रास्ता है।

माँगे हरड़ दे बहेड़ा उलटी अक्ल कहा जाता है।

मान न मान मैं तेरा मेहमान—कोई जबरदस्ती गले पड़े तब कहा जाता है।

मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं।

मारनेवाले से जिलानेवाला बड़ा है—अर्थ स्पष्ट है।

मानो तो देव नहीं तो पत्थर—विश्वासो फल दायकः।

मारते के अगाड़ी और भागतों के पिछाड़ी—डरपोक आदमी के लिये कहते हैं।

मियाँ की जूती मियाँ के सिर—किसी को चीज़ से उसी को हानि की जाय, तब कहते हैं।

माल मुफ्त दिल बेरहम—दूसरे मालका बेरहमीसे खर्च करना।

मियाँ बीबी राजी तो क्या करे काज़ी—जब दोनों व्यक्ति रजामन्द हों तो तीसरा क्या करेगा?

मिस्सों से पेट भरता है किस्सों से नहीं—रोटियों से पेट भरता है, कोरी बातों से पेट नहीं भरता।

मीठा मीठा गप्प कड़ुआ-कड़ुआ थू—जो अच्छी अच्छी वस्तु तो रख ले और खराब को फेंक दे।

मौत और ग्राहक का क्या पता किस वक्त आ जाय—मौत और ग्राहक का कोई समय निश्चित नहीं है।

मौतकी दवा नहीं—मृत्यु का इलाज नहीं।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े—भयके असली स्थान पर कौन जाय?

यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः—कोशिश करने पर सफलता न मिले तो दोष नहीं दिया जाता।

यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम वैसा ही गुण।

यथा राजा तथा प्रजा—जैसा राजा वैसी प्रजा।

यह मुह और मसूर की दाल—अपनी औकातसे बढ़ कर चीज चाहनेवाले को कहते हैं।

यादृशो भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी—जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि मिलती है।

यहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं, जो तर्जनी देखत डर जाहीं—लक्ष्मण जी का कथन परशुराम के प्रति।

या बेईमानी तेरा ही आसरा है—बेइमानको लक्षकर कहा जाता है।

रघुकुल रीति यही चलि आई, प्राण जायँ पर वचन न जाई—रामचन्द्र का कथन—रघुकुल में यही रीति रही है कि प्राण चाहे चले जांय पर वचन (प्रतिज्ञा) रहे।

रविहू की इक दिवस में तीन अवस्था होय—रवि की भी दिन भरमें तीन अवस्था होती है।

रस्सी जल गई पर बल न गया—बरबाद हो जानेपर भी अपनी अकड़ न छोड़ने पर कहा जाता है।

राईको पर्वत करे पर्वत को करै राई—भगवानकी लीला अपार है।

राजहंस बिन को करे छीर नीर को भेद—पारखी ही अच्छे बुरे की परख कर सकते हैं।

राम राम जपना पराया माल अपना—मक्कारोंको कहा जाता है।

रुपया परखै बारंबार आदमी परखै एक बार—आदमी की परीक्षा एक बार और रुपये की बार बार होती है।

रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना—रोज़ मेहनत करना रोज कमाना।

लकड़ी के बल बंदरी नाचे—मूर्ख डर दिखानेसे काम करते हैं।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते—बिना मार खाये नीचके होश ठिकाने नहीं आते।

वकीलोंके हाथ पराई जेब में—दूसरों के धन पर वकील जीवन बिताते हैं।

वहमकी दवा लुकमान के पास भी नहीं है—शक्की आदमी की कोई दवा नहीं होती।

वह गुड़ नहीं जो चींटें खायं—यानी हम ऐसे सीधे नहीं कि गड़गप्प कर जाओ।

शत्रोरपि गुणा वाच्याः दोषा वाच्या गुरोरपि—गुण दुश्मन के भी तथा अवगुण बड़ों के भी कह देना चाहिये।

शतरंज नहीं शद्‌रंज—शतरंज सौ दुखों की खान है।

शुभस्य शीघ्रम्—शुभ कार्य में शीघ्रता होनी चाहिए।

शैतान के कान काटना—रहस्यमय कार्य करना।

सइयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का—किसी आदमी को ऊंचा ओहदा मिल जाय तब उसके आश्रित कहते हैं।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—देनेवाले से वह न देनेवाला अच्छा जो फौरन जवाब दे देता है।

सच्चे का बोल बाला झूठे का मुह काला—सच्चे को विजय और झूठेकी जग हंसाई होती है।

सदा नाव कागजकी वहती नहीं—कपटका काम ज्यादा दिन नहीं चलता।

सब धान बाइस पसेरी—जहां अच्छे बुरेका खयाल न हो।

संतोषं परमं सुखम्—सन्तोष ही परम सुख है।

सब रामायण पढ़ गये सीता केकी जोरू—सब बात सुन कर भी जो कुछ न समझ कर प्रश्न करे तब कहते हैं।

सब शकल लंगूर की बस दुमकी कसर है—बदशक्ल को कहते हैं।

साँप भी मरजाय और लाठी भी न टूटे—काम भी सध जाय नुकसान भी न हो।

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े—प्रारम्भ में ही विघ्न पड़ा।

सिर सलामत है तो पगड़ी पचास—सिर रहेगा तो पगड़ी पचासों आयंगी।

सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद—जिसमें सैकड़ों दोष हैं वह क्या बोलेगा?

सूखी चिनाई करते हैं—बिना जल भोजन करते हैं।

सूरज धूल डालनेसे नहीं छिपता—नीचोंकी बदमाशीसे बड़ोंके गुण नहीं छिपते।

सूली पर भी नींद आती है—ज्यादा सोनेवालेको कहते हैं।

सोया सो चूका—जो सोवत है सो खोवत है जो जागत है, सो पावत है।

सौदा अच्छा लाभका राजा अच्छा दाब—सौदा वही अच्छा जिसमें नफा हो, राजा वही जिसका दबदबा हो।

हजारों टाँकी सहकर महादेव होते हैं—बिना कष्ट उठाये मनुष्य महान नहीं होता।

हज्जामके आगे सबका सिर झुकता है—गरज पड़ने पर सब सिर झुकाते हैं।

हथेली पर सरसों नहीं जमती—बात कहते ही काम नहीं हो जाता।

हरफन मौला—सब काममें होशियार।

हाथ कंगनको आरसी क्या—प्रत्यक्ष वस्तुमें अन्य प्रमाण की जरूरत नहीं।

हिम्मते मरदा मददे खुदा—हिम्मती पुरुषकी ईश्वर भी मदद करता है।

हिसाब जौ जौ बखशीश सौ सौ—हिसाब कौड़ी कौड़ीका हो, ईनामकी बात और है।

होड़ लीजे गोड़ उछार दीजे छोड़—उधर दिया भले ही छोड़ दो, मगर जीता हुआ न छोड़ो।

होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से बीस—भावी होकर ही रहती है।

होनहार बिरवानके होत चिकने पात—जिस व्यक्तिको भविष्यमें महत्वशाली बनना होता है उसको वैसे होनेके लक्षण बचपनसे ही दिखाई देने लग पड़ते हैं।

हौज भरे तो फव्वारे छूटें—आमदनी हो तो खर्च किया जाय।

कृषि-सम्बन्धी लोकोक्तियां

चढ़ते बरसै आर्द्रा उतरत बरसे हस्त, कितनौं राजा डाड़ले आनन्द रहे गृहस्थ—अर्थ स्पष्ट है।

बड़सिगा जनि लीजै मोल, कुएँ में डालो रुपया खोल—बड़े सींग का बैल मत लो चाहे कुए में रुपया डाल दो।

छोट सींग ओ छोटो पूछ ऐसे को लेलो बेपूछ—छोटे सींग और छोटी पूंछवाला बैल खरीदो।

बूढ़ा बैल बिसाहे भिन्ना कपड़ा लेय, आपुन करे विचार नहिं दैवहि दूषण देय—अर्थ स्पष्ट है।

जो हल जोते खेती वाकी, और नहीं तो जाकी ताकी—जो अपने हाथ से हल जोतता है उसी को खेती सबसे अच्छी होती है नहीं तो जिस तिसकी।

सींग गिरैला बैलका औ मनई का कोढ़, यह नीको ना होयँगे, चाहे बदलो होड़—अर्थ स्पष्ट है।

जो कहुं मघा में बरसे जल, सब नाजों में होगा फल—मघा नक्षत्रमें पानी बरसना सर्वोत्तम है।

दो पत्ता क्यों न निरावे अब बीतत क्यों पछतावे—स्पष्ट है।

ऊख करे सब कोई जो बीच में जेठ न होई—स्पष्ट है।

ईख तक खेती हाथी तक बनिज—स्पष्ट है।

चैत में हुई फसल तैयार, काट दांय कर लाओ पास—स्पष्ट है।

छाड़े खाद जोत गहराई, तब खेती का मजा उठाई—खाद डालने और गहरे जोतने से खेती उत्तम होती है।

बांध कुदारी खुरपी हाथ हँसुआ लाठी राखे, साथ काटे घास-निरावे खेत वही किसान करे निज हेत—ये काम करनेवाला ही सच्चा किसान है।

टिड्डीका आना अकालकी निशानी—जहां टिड्डियां उड़ती हैं, वहां अकाल पड़नेकी सम्भावना होती है।

ताल उझलकर उझले बयार, जब वर्षा हो पुरम्पार—तालाब और क्यारियां भर जायं तब समझना कि बरसात पूरी हुई।

तीज पड़े खेतमें बीज—सावनकी तीजको खेतमें बीज बोया जाता है।

पांच आम, पचीसे महुआ, तीस बरसमें इमली और कहुआ—आम पांच वर्षमें, महुआ पचीस वर्षमें और इमली और कहुआ तीस वर्षमें फल देता है।

पछवां चले खेती फले—पश्चिमी हवा चलनेसे फसल अच्छी होती है।

बरसे सावन, तो हो पांचके बावन—श्रावणमें वर्षा हो तो अन्न अधिक होता है।

भादोंके मेहसे दोनों साखकी जड़ बंधती है—भादोंमें पानी बरसना दोनों फसलके लिये उत्तम है।

भादोंमें जो बरसा होय, काल पीछकर जाकर रोय—भादोंमें वर्षा होनेसे अकाल रोता है।

मूस बांदरा तीतर मोर, ये चारों खेतीके चोर— अर्थ स्पष्ट है।

साढ़ीकी साख और पीपलकी लाख—वसन्त ऋतुकी फसल और पीपलकी लाह अच्छी होती है।

बाली मोटी भई काहे, आषाढ़के दो बाहे—आषाढ़में दुबारा जोतनेसे बाल मोटी होती है।

नौ नसी एक कसा—एक बार फावड़ेकी खुदाई नौ बार हलकी जोताईके बराबर है।

बाहे क्यों न आषाढ़ एक बार, अब क्यों बाहे बार बार— आषाढ़में एक बार भी जोते तो बार बार जोतने कष्ट नहीं उठना पड़ता।

दस बाहोंका मांड़ा और बीस बाहोंका गांड़ा गेहूंके खेतको दसबार और ईखके खेतको बीस बार जोतते हैं।

आषाढ़में खाद खेतमें जावे तब भर मुट्ठी दाना पावे— खाद आषाढ़ मासमें डालनेसे खेती दूनी होती है।

पछुआ हवा ओसावे जोई, घाघ कहे घुन कबहूं न होई— पच्छिमकी हवामें नाजको ओसानेसे घुन नहीं लगता।

फागुन माह बहे पुरवाई तब गेहूंको गेरुई खाई—फागुनमें पूरवा चलनेसे गेहूंमें एक तरहका कीड़ा लग जाता है।

पुख्ख पुनर्वस बोवे धान, असरेखा जोंड़री परमान, मघा महीनों बरसे झार हल दीजे कोठरमें डार—इन नक्षत्रोंमें पानी बरसनेसे फसल अच्छी नहीं होती।

गेहूं भवा काहे, सोलह दाय बाहें—गेहूं क्यां हुआ सोलह बार जोता था।

❀ समाप्त ❀